सफलताके शिखरकी सीढ़ियाँ

(कल्याण-कुञ्ज भाग 6)

भोगसुखकी असत्ता

याद रखो— भोगों में सुख वैसे ही नहीं है जैसे पानीमें घी नहीं है, बालूमें तेल नहीं है, मृगतृष्णाके मैदानमें जल नहीं है और अग्निमें शीतलता नहीं है। अत: जो कोई भी भोगोंसे सुखकी आशा रखता है, उसे सदा निराश ही रहना पड़ता है। तथापित मनुष्य मोहमें पड़कर भोगोंमें सुखकी सम्भावना मानकर उनके अर्जन तथा सेवनमें लगा रहता है और फलस्वरूप नित्य नये-नये रूपोंमें दु:खोंसे-तापोंसे जलता रहता है।

याद रखो— भोगकी वासना मनुष्यके विवेकका हरण कर लेती है, इसलिये वह अपने भले-बुरे भविष्यको भूलकर किसी भी साधनसे-चाहे वह सर्वथा निषिद्ध तथा समस्त मङ्गलोंका नाश करनेवाला ही क्यों न हो- इच्छित भोग प्राप्त करनेकी चेष्टा करता है और इसके परिणामस्वरूप बीचमें ही नयी विपत्तियोंसे घिर जाता है तथा उनमें बचनेके लिये फिर-फिर नये-नये कष्टसाध्य कुकृत्य करने लगता है। इससे विपत्तियोंका, पापोंका और तापोंका ताँता कभी टूटता ही नहीं।

याद रखो— भोगवासनावाले मनुष्यको कभी कुछ इच्छित भोग मिल जाता है तो उसका लोभ और भी बढ़ जाता है, साथ ही वह सफलताके गर्वमें फूलकर सबका तिरस्कार करने लगता है। लोभ और गर्व-दोनों ही उसको पुन: बुरे-बुरे कर्मोंमें लगाकर पतनकी ओर ले जाते हैं।

याद रखो— भोगवासनावाला मनुष्य सदा चिन्ताग्रस्त रहता है। इच्छित भोग प्राप्त न होनेपर तो चिनता उसे रहती ही है। प्राप्त होनेपर उसकी चिन्ता और भी बढ़ जाती है; क्योंकि ज्यों-ज्यों उसकी भोगकामना पूरी होती है, त्यों-ही-त्यों वह कामनाकी आग-अग्निमें घीकी आहुति पड़नेपर अग्निके अधिक भड़क उठनेकी तरह-और भी भड़क उठती है, इसीके साथ उसकी चिन्ताकी आग भी बढ़ती है, जिससे उसकी भीतरी जलन और भी बढ़ जाती है। वह खुद उससे सदा जला करता है और अपने समीप रहनेवालोंको भी द्वेष, द्रोह, क्रोध, वैर, हिंसा-जो कामनाके साथ-साथ पनपते और बढ़ते रहते हैं-के द्वारा जलाया करता है।

याद रखो— अग्नि जितनी बड़ी होती है, उतनी ही उसकी गरमी दूर-दूरतक जाती है। इसी प्रकार कामनाकी अग्नि जितनी बढ़ी हुई होती है, उतनी ही अधिक वह अपनेको तथा अपने सम्पर्कमें आनेवाले पार्श्ववर्तियोंको जलाती है। इतना ही नहीं, कुछ भी सम्बन्ध न रखनेवालोंको भी कभी-कभी उससे बड़ा संताप मिलता है।

याद रखो— यह कामनाकी अग्नि विषयोंकी प्राप्तिसे नहीं बुझती, इसे बुझानेके लिये तो वैराग्यरूपी धूल और ीगवत्प्रेमरूपी अजस्त्र अमृत-जलधारा चाहिये। वह वैराग्य तभी प्राप्त होगा, जब भोगोंमें दु:खोंके दर्शन मोहवश उनमें सुखकी मान्यता हो रही है और जैसे शराबके नशेमें चूर मनुष्य गंदे नालेमें पड़ा हुआ भी अपनेको सुखी बतलाता है, वैसे ही उसे भोगोंमें सुखोंकी मिथ्या अनुभूति होती है। शराबीका जैसे वह प्रलाप होता है, वैसे ही उसका भी प्रलाप होता है। इस मोह-मदके नाशके लिये आवश्यक है-भोगोंके नग्नस्वरूपके दर्शन, जो भगवत्कृपासे संतोंकी वाणीद्वारा कराये जाते हैं। भोगोंका यथार्थ स्वरूप दीखनेपर तो उनसे वैराग्य हुए बिना रहेगा ही नहीं। तभी असली सुख-स्वरूप भगवान्‌की ओर चित्तकी गति होगी। अतएव संतोंका सङ्ग प्राप्त करनेकी चेष्टा करो।

याद रखो—सत्सङ्ग न मिलनेपर दूसरा साधन है मोहभंगका–जो सहज ही देर-सबेर प्राप्त होता ही है–वह है भयानक दु:खोंका आक्रमण। भगवान्के मङ्गलविधानसे प्रकृति स्वयं यह कार्य करती है। यह होनेपर चेत हो जाता है, आँखे खुल जाती हैं और मनुष्य भगवान्की ओर लगनेका प्रयास करता है।

सब कुछ भगवत्सेवाके लिये

याद रखो—तुम्हें जो तन-मन-धन, शक्ति-बल, बुद्धि-विवेक, पद-अधिकार मिला है, सब भगवत्सेवाके लिये मिला है। यही उनका सदुपयोग है। बड़ी सावधानीके साथ प्रत्येक वस्तुका सदुपयोग करो। इसीमें तुम्हारा कल्याण है और उस वस्तुकी सार्थकता है। यदि तुम सावधानी नहीं रखोगे तो उनका दुरुपयोग होगा; शरीरको सत्कार्योंमें नहीं लगाओगे, वह दुष्कार्योंमें लगेगा; मनसे सच्चिन्तन नहीं करोगे, वह बुरा चिन्तन करेगा; धनको गरीबोंकी सेवामें नहीं लगाओगे, वह विलासमें लगेगा या नष्ट हो जायगा!

याद रखो—किसी भी वस्तुका सदुपयोग न करनेपर या तो उसका दुरुपयोग होता है, जो नयी-नयी बुराइयाँ पैदा करता है, जिनसे दु:खोंकी नयी-नयी भूमिकाएँ बनती हैं अथवा वह वस्तु नष्ट हो जाती है।

याद रखो—सबसे मूल्यवान् वस्तु है–समय और मन। इन दोनोंको सावधानीके साथ निरन्तर भगवत्सेवा, परमार्थसाधान, ऊँचे उठानेवाले कार्योंमें लगाये रखो। न व्यर्थ खोओ, न प्रमाद करो। आलस्य और दीर्घसूत्रतासे समय व्यर्थ जाताहे और न करनेयोग्य कामोंमें लगाने और करनेयोग्य कामोंमें न लगानेसे प्रमाद होता है। इसी प्रकार मनसे भगवत्चिन्तन या शुभचिनतन न करके जगत्चिन्तन करनेसे उसका व्यर्थ उपयोग होता है और पाप या अशुभचिन्तनसे प्रमाद होता है। समयके एक-एक क्षणको भगवान्की सेवाके हेतु सत्कार्यमें नियुक्त रखो और मनको व्यर्थ चिन्तन और असत्चिन्तनसे बचाकर नित्य-निरन्तर शुभचिन्तन या भगवत्चिन्तनमें लगाये रखो–यही समय और मनका सदुपयोग है।

याद रखो—जो वस्तु भगवान्की सेवाके निमित्त लगकर सदुपयोगमें आयी गयी, वह तुम्हारी हो गयी। जो धन सेवामें लग गया, वह तुम्हारा हो गया; जीवनको जो समय भगवत्चिन्तनमें लग गया है, वह तुम्हारा हो गया; तनके द्वारा जितना सत्कार्य बन गया, वह तुम्हारा हो गया। नहीं तो, ये सब चीजें नष्ट होनेवाली है। इन्हें बटोरकर और साज-सँवारकर रखनेसे ये नहीं रहतीं, प्रतिपल इनका नाश हो रहा है और अन्तमें ये सर्वथा नष्ट हो जायँगी। जितना इनको तुमने सत्कार्यमें लगा दिया, उतनी इनकी सार्थकता हो गयी।

याद रखो—मानव-जीवनका एक-एक क्षण अमूल्य है, क्योंकि भगवान्की स्मृति-सेवामें लगनेपर वह परम दुर्लभ भगवत्प्राप्तिमें हेतु बनता है। गया क्षण फिर लौटकर आता नहीं, अतएव प्रत्येक क्षणको भगवान्की सेवामें ही नियुक्त रखो। जरा-सा भी भगवान्की स्मृति-सेवामें अन्तर न पड़े। श्वास-प्रश्वासकी भाँति लगातार भगवान्की स्मृति-सेवा बनती ही रहे। तुम कहीं भी जाओ, तुम्हारे कार्यका बाहरी निर्दोश रूप कुछ भी हो, भगवान्का मधुर स्मरण कभी न भूले और प्रत्येक कार्यके द्वारा तुम सर्वत्र स्थित भगवान्की सेवा ही कर रहे हो–यह निश्चय बना रहे। ऐसा कर पाये तो तुम सदा सर्वत्र भगवान्का साक्षात्कार और दिनभर उनकी पूजाका ही पवित्रतम कार्य करते रहोगे। यही तुम्हारे जीवनका सुदपयोग है।

भोगोंमें सुखकी भ्रान्ति

याद रखो—जबतक तुम्हारा मुख भोगोंकी ओर है, तबतक तुम्हारा एक पग भी आगे चलना भोगोंकी ओर ही होताहे, भगवान्की ओर नहीं। किसीको उत्तराखण्डमें बद्रनाथको जाना है, पर उसका मुख है दक्षिणके मद्रासकी ओर,

तो वह जबतक अपना मुख मोड़कर उत्तरकी ओर नहीं कर लेगा, तबतक वह बद्रीनाथजीसे विपरीत दिशामें ही चलेगा और अधिक-से-अधिक दूर होता चला जायगा। इसी प्रकार भोगोंकी ओर मुख किये चलनेवाले मनुष्यका जीवन भगवान्‌से दूर-दूर हटता चला जाता हैं

याद रखो—भोगोंमें सुख है, ऐसी भ्रान्ति धारणा और इसके कारण उदय हुई भोगोंमें आसक्ति भगवान्‌की ओर तुमको नहीं मुड़ने देती। तुम मुड़ना चाहते हो, जरा-सा मुँह फिरानेकी चेष्टा करते हो, पर वह भोगसक्ति तुम्हारे फिरते मुखको पकड़कर तुरंत भोगोंकी ओर कर देती है, तुम्हारा मुख भगवान्‌की ओर नहीं मुड़ पाता।

याद रखो—एकान्तवास, तीर्थनिवास आदि तुम्हारे सहायक अवश्य हैं, परंतु असली चीज तो है-भोगोंमें आत्यन्तिक अनासक्ति, जो भगवान्‌की ओर मुड़नेकी प्रधान साधना है। जब तुम्हारा मुख भगवान्‌की ओर होगा और ज्यों-ज्यों तुम भगवान्‌की ओर बढ़ोगे त्यों-ही-त्यों तुम्हारा उत्साह, तुम्हारी उत्कण्ठा, तुम्हारी आगे बढ़नेकी शक्ति बढ़ती जायगी। भगवान्‌के पथमें सहज ही रहनेवाली दैवी सम्पत्ति, शान्ति, समता, वैराग्य, प्रेम तथा संतजनोंकी सत्संगी तुम्हें मिलती रहेगी। तुम्हारी विलक्षण प्रगति होगी भगवान्‌की ओर। तुम द्वन्द्व-दुःखोंसे छूटकर निराशा, चिन्ता, भय, विषाद, कामना, वासना आदिसे मुक्त होकर परम सुखी हो जाओगे।

याद रखो—जबतक तुम भगवान्‌को पीठ दिये भोगोंकी ओर मुख किये चलते रहोगे; तबतक तुम्हें सुख-शान्ति कभी नहीं मिलेगी। जितना-जितना अधिक तुम भोगोंकी ओर अग्रसर होओगे स्वाभाविक निराशा, भय, विषाद, चिन्ता, राग, द्वेष, वैर, अशान्ति, द्रोह, दम्भ, परिग्रह, हिंसा, कामना, वासना, ममता आदि दुर्गुण-दुर्विचारोंसे घिरे रहकर सदा-सर्वदा दुःख सागरमें डूबे रहोगे। जहाँ-जहाँ तुम सुखकी आशासे जाओगे, वहीं तुम्हें भयानक दुःखीराशिके दर्शन होंगे; क्योंकि वहाँ भोग-राज्यमें यही वस्तुएँ हें। भोग-राज्यमें फँसा मनुष्य कितनी ही शान्ति, सुखकी, वैराग्यकी, निष्कामभाव की चर्चा करे, वह कभी भी शान्ति-सुखको प्राप्त नहीं हो सकता। अशान्ति-दुःख उसके नित्य संगी बने रहेंगे। अतएव जैसे भी हो, भगवान्‌की ओर मुड़ जाओ। जबरदस्ती ही मुड़ जाओ।

याद रखो—मन-बुद्धि भगवान्‌के समर्पित हो जायँ और वे सदा केवल भगवान्‌में ही लगे रहें-तभी पूर्णतः सुदृढ़रूपसे भगवान्‌की ओर मुख हो जाना समझा जाता है। पर ऐसा न हो, तबतक बार-बार मन-बुद्धिको भगवान्‌के साथ जोड़ते रहो। भगवान्‌के नाम, गुण, रूप, तत्त्वका चिन्तन-मनन-विचार करते रहो। भोगोंसे आत्यन्तिक और आन्तरिक अनासक्ति और भगवान्‌में पूर्ण तथा दृढ़ आत्यन्तिक आन्तरिक आसक्ति ही प्रधान साधन है।

आत्मविस्मृति

याद रखो—तुम्हारी वही दशा है जो हरी-हरी घास खानेमें और बकरीके साथ सहवास करनेमें लगे हुए कुछ ही समय बाद कसाईके छूरेके नीचे आनेवाले बकरेकी होती है। तुम इस समय अपनी रुचिके अनुसार खान-पान, मौज-शौक, बाल-बच्चे, कुटुम्ब-परिवार, धन-ऐश्वर्य, पद-अधिकार, उन्नति-उत्थन और विकास-प्रकाश आदि अनेकों प्रवृत्तियोंमें लगे हुए एक क्षणके लिये भी आत्मविचारके लिये समय नहीं पा रहे हो; पर यह निश्चय समझो-तुमको बिना ही जताये, तुम्हारी आवश्यक-से-आवश्यक महत्वपूर्ण प्रवृत्तिका कुछ भी ख्याल न करते हुए मृत्युदेवता सहवा आ जायँगे और तुम्हारी सारी प्रवृत्तियोंका समूलोन्मूलन कर डालेंगे।

याद रखो—कसाईका बकरा पशु है, वह यह नहीं समझता कि कुछ ही क्षणें पूर्व उसके सामने ही उसकीके सदृश मोटा-ताजा एक बकरा तेज छूरीके घाट उतारा गया है, वही दशा तुम्हारी भी होनेवाली है। वह अज्ञानी है, पशु है, पर

तुम तो मनुष्य हो। तुम्हें तो यह ज्ञान होना चाहिये कि जैसे मेरा एक सम्बन्धी बन्ध अभी मौतके विकराल गालमें चल गया है, वैसे ही मुझको भी जाना पड़ेगा और उस समय यहाँके 'मैं' तथा 'मेरे' कहलाने या मानेजानेवाले तमाम पदार्थोंसे सारा सम्बन्ध टूट जायगा।

याद रखो—बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो यह जानता है कि जन्मके साथ ही मेरी मृत्युका भी जन्म हो चुका है और वह प्रतिक्षण मरा जा रहा है। मृत्युका अन्तिम स्पर्श उसे निश्चय ही समाप्त कर देगा। अत: उसे अगले जन्मके लिये या जन्म-मृत्युके चक्रसे सदाको छूट जानेके लिये तैयार रहना और सुफल उपाय करना है।

याद रखो—तुम्हारा यह जन्म तुम्हारे अनादि विशाल जन्म-ग्रन्थका अध्यायमात्र है। तुम्हारा मृत्यु-मालाका ही एक मनका है। यह तुम्हारा स्वरूप नहीं है। तुम्हारा असली स्वरूप इससे नित्य विलक्षण है। जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधिका शिकार तो यह प्राकृतिक शरीर ही होता है, नित्य चेतन आत्मा नहीं। तुम नश्वर शरीर नहीं, नित्य चेतन आत्मा हो। सच्चिदानन्दघन परमात्माके सनातन अंश हो। अपने इस भगवदंश-स्वरूप या आत्म-स्वरूपकी विस्मृतिके कारण ही अपनेको जन्म-मरणशील शरीर मानकर जन्म-मरणके अनिवार्य; पर मिथ्या चक्रमें फँस रहे हो।

याद रखो—तुम्हें मानव-शरीर इसीलिये मिला है कि तुम अपने उस असली परमार्थस्वरूपको पहचान-अपने सनातन सत्य जीवनको उपलब्ध करो। जो तुम्हारा स्वरूप है, पर तुम तो इतने आत्मविस्मृत हो रहे हो-इतने बाह्य प्रकृतिगत होकर-प्रकृतिको ही अपना स्वरूप मानकर उसीमें स्थित हो रहे हो कि जिसके कारण तुम्हारे अंदर अपने यथार्थ स्वरूपको जानने-समझनेका कभी प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। 'तुम कौन हो, कहाँसे आये हो, शरीर तथा नामके साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है; यहाँके ममता-आसक्तिके प्राणी-पदार्थोंसे तुम्हारा क्या सम्पर्क है और वह क्यों है? शरीर छूटनेके बाद तुम्हें कहाँ जाना है'-इत्यादि जिज्ञासा तुम्हारे हृदयमें कभी उत्पन्न ही नहीं होती। यह कितना बड़ा महोपोह है। इसी मोहके वश हुए तुम अपने सारे बुद्धि-विवेकको जो मनुष्यको पशुसे पृथक् करता है- पशुत्वकी प्राप्तिमें ही नहीं-पिशाच और राक्षस बननेकी प्रवृत्तिमें लगाये हुए हो और इसीमें जीवनकी सार्थकता मान रहे हो।

याद रखो—तुम्हारी यह स्थिति तुम्हारे लिये ऐसे भविष्यका निर्माण कर रही है, जो घोर अन्धकारमय, अनन्त नरकमय, दु:खमय, मृतयुमय और अशान्तिमय है। अतएव जल्दी चेत करो। विवेकको अपने विनाशमें न लगाकर सच्चे विकासमें लगाओ। अपने परमात्मांश-स्वरूपको-आत्मस्वरूपको समझो और मानव-जीवनको सफल करो।

परमात्मसुखकी विलक्षणता

याद रखो—संसारके बड़े-से-बड़े भोग-सुखोंकी अपेक्षा परमात्मसुख अत्यन्त विलक्षण और अनुपम है। संसारके किसी भी सुखके लिये परमात्मसुखकी साधनामें जरा भी बाधा कभी मत आने दो। किसी भी हालतमें परमात्मसाधनामें शिथिलता मत आने दो। यह भी मत देखो कि लोग क्या कह रहे हैं और क्या कर रहे हैं। तुम्हारी अपनी साधनाका कार्य सच्चा निर्दोश होना चाहिये।

याद रखो—अपने निर्दोष साधनको या सत्कार्यको भय, संकोच, लोकविरोध आदि कारणोंसे जो छोड़ देता है, वह पतित हो जाता है। भगवान्के सामने-अपने आत्माके सामने तुम्हारा कार्य निर्दोष और सत् होना चाहिये, फिर चाहे कोई कुछ भी कहे उसकी परवा नहीं करनी चाहिये और अटल-अचल भावसे श्रद्धा-विश्वासके साथ उस सत्कार्यमें लगे रहना चाहिये।

याद रखो—तुम्हारे साधनमें विघ्न आ सकते हैं, प्रबल प्रतिकूलता आ सकती है, विकट विपत्ति आ सकती है; पर

उससे घबराओ मत। शुद्ध मनसे भगवान्पर विश्वास करके अपनी साधनामें जुटे रहो और भगवान्से प्रार्थना करो कि वे अपनी कृपासे सब विघ्नोंको दूर कर दें। भगवान् जरूर दूर कर देंगे। उनकी घोषणा है, मुझमें चित्त लगानेवाले पुरुषको मेरी कृपा सारे विघ्न-बाधाओंसे पार लँघाकर आगे ले जाती है।

याद रखो—कभी-कभी जगत्की अनुकूलता, लोगोंके द्वारा मिलनेवाला मान, प्रतिष्ठा-प्रशंसा आदि भी साधनामें बहुत बड़े विघ्नका काम करती हैं। वे वास्तविक परमार्थसाधना से हटाकर अपने नामरूपकी पूजा-प्रतिष्ठाकी साध नामें लगा देती हैं। वह फिर, भगवान्की प्रसन्नताकी जगह लोकरञ्जनमें लगाकर अपनेको लोकानुकूल निषिद्ध आचरणोंमें लगा देता है और पतित हो जाता है। इसी प्रकार श्रद्धालु लोगोंके द्वारा शरीर-सुख-इन्द्रिय-भोगोंकी प्राप्ति भी साधनाका बड़ा विघ्न है। इन्द्रिय-सुखकी प्रवृत्ति बहुत ही शीघ्र परमार्थ-साधनाका विनाश करती है। इसलिये न तो दुःख, विपत्ति, प्रतिकूलता, निन्दासे डरो और न मान-प्रतिष्ठा, पूजा, भोग-सुख आदिमें फँसो। इन दोनों प्रकारके विघ्नोंसे दूर रहकर नित्य-निरन्तर परम निष्ठाके साथ निर्दोष परमार्थ-साधनमें लगे रहो।

याद रखो—साधनामें कहीं बाहरका दिखावा न आ जाय। साधनाका बाहरी दिखावा सर्वथा नकली चीज है। अंदरसे साधनामें लगे रहो। हृदयको सदा काम, क्रोध, लोभ, हिंसा, वैर, दम्भ, दर्प आदि सारे दोषोंसे शून्य करके परम उज्जवल और पवित्र बनो। बाहरसे लोग तुम्हें साधक न बतावें तो उसमें तुम्हारा परम लाभ है, तुम्हारा साधन-धन उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा और बाहरसे यदि लोग तुम्हारी निन्दा करें तब तो तुम अपनेको विशेष भाग्यवान् और भगवान्का कृपामात्र समझो; क्योंकि ऐसा होनेपर तुम्हारी निर्दोषता बढ़ेगी, उज्जवलता बढ़ेगी और संसारमेंसे आसक्ति दूर होगी। मन कहीं फँसेगा नहीं।

याद रखो—साधनामें सदा श्रद्धा-विश्वास, सावधानी, संलग्नता तथा क्रियाशीलता बनी रहनी चाहिये। अश्रद्धा, प्रमाद, आलस्य और अकर्मण्यता कर्तव्यविमुख बना देती है। निरन्तर, उत्साह, उल्लास, विश्वासके साथ साधनामें लगे रहो।

याद रखो—साधनामें कभी उकताओ मत, ऊबो मत, धैर्यके साथ लगे रहो। बस, लगे रहो। विश्वास करो, तुम अवश्य-अवश्य सफल होओगे। यदि कुछ देर हो रही है तो वह इसलिये हो रही है कि तुम अपने प्रियतम प्रभुसे अबाध ा मिलनेके लिये समस्त दोषोंसे रहित होकर उनके योग्य बनाये जा रहे हो, सजाये जा रहे हो परम प्रियतमसे मिलनेके लिये।

शरीरकी क्षणभङ्गुरता

याद रखो—शरीर क्षणभंगुर है; विनाशी है। जो जन्मा है, वह मरेगा ही; जो बना है वह नष्ट होगा ही। पर वही यदि भगवान्की सेवामें लगकर मरता है तो उसकी मृत्यु सफल होती है, पर वही केवल भोगोंका भोग होकर मरता है तो उसका जीवन असफल है। जो मनुष्य अपने जीवनको भगवत्सेवामें लगाता है, उसीका जीवन सार्थक होता है।

याद रखो—जिसका शरीर परोपकारमें, गरीबोंके दुःख दूर करनेमें, आर्तोंकी आर्ति हरण करनेमें, परसेवामें, त्यागपूर्ण कर्तव्यपालनमें, माता-पिता आदि गुरुजनोंकी सेवामें, धर्मरक्षामें, साधु-सरंक्षणमें, देशकी सुरक्षा तथा पालनमें, विश्वमानव एवं प्राणिमात्रकी सेवामें, धर्मयुद्धमें, त्याग, क्षमा, दया, विनय, अहिंसा, प्रेम आदि सद्भावोंके सेवनमें, देवाध नामें, भगवान्के भजन-ध्यामें और भगवान्की मंगलमयी भक्तिमें लगकर चरम गतिको प्राप्त होता है, उसको शुभ गतिकी और निष्कामभावसे करनेपर भगवत्प्राप्तिरूप परमगतिकी प्राप्ति होती है। जिन मनुष्योंका जीवन इस प्रकार

भगवत्सेवामें उत्सर्ग है, वे ही मनुष्य वास्तवमें सच्चे अर्थमें मनुष्य हैं। वे ही दैवमानव हैं और वे ही अपने आदर्श जीवनसे जगत्का वास्तविक उपकार करते हैं।

याद रखो—जिसका शरीर दूसरोंके अहितमें, गरीबोंको सतानमें, लोगोंके दु:ख बढानेमें, स्वार्थवश परस्वापहरणमें, भोगपूर्ण इन्द्रियसेवनमें, गुरुजनोंके अपमानमें, धर्मके नाशमें, साधु-पीड़ामें, देशकी बुराई तथा अरक्षामें, विश्वमानव एवं जीवोंके अपकारमें, अधर्मपूर्ण स्वार्थभरे युद्धमें, काम-क्रोध-लोभ, मद, क्रूरता, हिंसा, द्रोह, वैर आदि असद्भावोंके वश होकर असदाचरणमें, असुर-असुरभावापन्न मानव और आसुरी भोगोंकी आराधनामें, विषय-चिन्तन-विषय-सेवनमें और विषय-भोगोंकी अमंगलमयी-परिणाम-दु:ख-निराश, पाप और तन-मनकी यन्त्रणा भोगता है एवं मरनेके बाद अशुभ गति, आसुरी योनि और भीषण नरकादिको प्राप्त होता है। जिन मनुष्योंका जीवन इस प्रकार असत्कार्योंमें व्यतीत होता है, वे मनुष्यके रूपमें पशु, पिशाच या राक्षस हैं। वे ही असुर-मानव हैं और उनके जन्म-जीवनसे जगत्की बहुत बड़ी हानि होती है। वे केवल कुत्ते, सूअर, गदहेकी मौत ही नहीं मरते, वरं महान् दु:खोंका भोग करनेकी भूमिका बनाकर साथ ले जाते हैं। मानव-जीवनकी यह सबसे बड़ी असफलता है।

याद रखो—मनुष्यके असली मनुष्यत्वका प्रारम्भ होता है-जीवनकी गति भगवान्की ओर हो जानेपर और भगवत्सेवाके लिये त्याग तप-पूर्ण धर्मका आचरण करनेपर। धर्म वही है जिससे अपना तथा दूसरोंका परिणाममें परम कल्याण हो। इस प्रकारके धर्मका आचरण करनेके लिये ही मनुष्य-शरीर प्राप्त हुआ है।

याद रखो—मनुष्यको कर्म करनेका अधिकार प्राप्त है। मनुष्य केवल भोगयोनि नहीं है, कर्मयोनि है। वह अपने कर्मोंके द्वारा अपना भविष्य अत्यन्त दु:खमय बना सकता है, सुखमय बना सकता है और सत्साधनमें प्रवृत्त हो तो भगवान्को-आत्माको भी प्राप्त कर सकता है जो जीवनका परम लक्ष्य है।

याद रखो—इस सिद्धान्तको समझकर जो मनुष्य कर्माधिकारका सदुपयोग करता है, वही बुद्धिमान् है। अतएव तुम पापोंका-दुष्कर्मोंका सर्वथा त्याग करो, पुण्योंका-सत्सकर्मोंका सेवन करो और वह सत्कर्मोंका आचरण भी करो, भगवत्पूजा-भगवत्सेवा-भगवत्प्रीतिके पवित्र भावसे। ऐसा करनेपर तुम्हारा जीवन सर्वथा सफल हो जायगा।

निरभिमान त्यागमयी सेवा

याद रखो—तुम्हारे पास तन-धन, विद्या-बुद्धि, शक्ति-बल, पद-ऐश्वर्य आदि जो कुछ है, सब भगवान्का है, सब उन्हींसे मिला है और सब उन्हींकी सेवा के लिये है। उनकी सेवामें लगनेपर ही सबकी सार्थकता है एवं तुम्हारे जीवनकी भी इसीमें सफलता है।

याद रखो—जहाँपर जिसको ऐसी किसी वस्तुकी आवश्यकता हो जो तुम्हारे पास है, तो यह समझो यहाँ उस वस्तुके यथार्थ स्वामी भगवान् ही तुमसे अपनी वह वस्तु चाह रहे हैं। अतएव विनम्रताके साथ आदरपूर्वक उनकी वस्तु उन्हें अर्पण कर दो और इसमें अपना सौभाग्य समझो।

याद रखो—किसी भी वस्तुके लिये तुम कभी यह न समझो कि यह तुम्हारी है और न उसके लिये अभिमान करो। अपने लिये जितनी कम-से-कम आवश्यकता हो उतनी भगवान्का कृपाप्रसाद समझकर ग्रहण करो और शेष सब उन्हींकी सेवामें लगाते रहो।

याद रखो—सभमें सदा-सर्वदा भगवान् बस रहे हैं, वरं भगवान् ही समस्त अनन्त विविध रूपोंमें अभिव्यक्त है। यह

समझकर सभीका मान करो, सभीसे प्रेम करो, सभीका आदरयुक्त हित करो। दीनोंमें दयालु बनकर मत जाओ, दीन होकर ही जाओ और उनके दु:खको अपना दु:ख अनुभव करके उनका दु:ख दूर करनेका प्रयत्न करो।

याद रखो—दूसरेके दु:खसे सहज दु:खी होकर हृदयमें जो एक द्रवता होती है और उसे दूर करनेके लिये जो त्यागमयी वृत्ति उत्पन्न होती है, उसका नाम 'दया' है। दया अपना-पराया नहीं देखती, दया अभिमान नहीं आने देती, दया सेवा तथा त्यागमें सुखका अनुभव करती है, नम्रता लाती है और जिसकी सेवा तुमने की, उसके हृदयमें अपनी न्यूनताका उदय नहीं होने देती, बल्कि उसे भगवान्‌की कृपाका अनुभव कराती है। ऐसी दया-पर-दु:खको निज-दु:खके रूपमें परिणत कर उसे तन-मन-धनसे दूर करनेकी स्वाभाविक प्रवृत्ति करानेवाली हृदयकी कोमलतम वृत्ति-बहुत ही अच्छी चीज है। इसे अवश्य धारण करो, पर दयालुताका अभिमान न करो, अपनेको कभी बड़ा मत मानो।

याद रखो—दीनोंके सामने धनीपनकी शान दिखाना एक अपराध है। दीनोंमें दीनोंकी भाँति ही रहो। उन्हें जितना ऊँचा कर लो। पर अपने वैभवका विज्ञापन मत करो, अपनेको प्राप्त वस्तुओंका अभिमान करके किसीका अपमान कभी न करो, ऊँचे बनो नीचे बनकर-विनम्र होकर-सबकी यथासाध्य सेवा करके।

याद रखो—किसी गरीबके सामने गर्वभरी वाणी बोलना, उसके साथ रूखा और कठोर व्यवहार करना भगवान्‌का अपराध है; क्योंकि उस गरीबके रूपमें भगवान् ही तुम्हारे सामने प्रकट हैं। अतएव सभीके साथ नम्र होकर मधुर वाणी बोलो; अपनी विनय-विनम्र पीयूषवर्षी वाणी तथा व्यवहारके द्वारा सर्वत्र शीतल मधुर-सुधाकी धारा बहा दो; दु:खकी विष-ज्वालासे जलते हुए हृदयोंमें सुधा ढालकर उन्हें विषशून्य शीतल, शान्त और मधुर बना दो और यह सब करो केवल भगवान्‌की सेवा के लिये और करो सब कुछ उन्हींकी शक्ति, प्रेरणा और वस्तु मानकर। तुम्हारी निरभिमान त्यागमयी सेवासे भगवान् बड़े प्रसन्न होंगे और उनकी प्रसन्नता तुम्हारे जीवनको परम सफल बना देगी।

आत्माका नित्य स्वरूप

याद रखो—जैसे शरीर कुमार, तरुण और वृद्धावस्थाको प्राप्त होता है, वैसे ही मृत्यु भी वास्तवमें शरीरकी ही एक अवस्थामात्र है। इस शरीर-आत्मवियोगको ही मृत्यु कहा जाता है, वास्तवमें मृत्यु कोई भयंकर वस्तु नहीं है। देहान्तरमात्र है। जैसे एक आदमी पुराने कपड़े त्यागकर नये कपड़े पहन लेता है, वैसे ही जीवात्मा (प्रकृतिस्थ पुरुष; एक देहको छोड़कर दूसरे देहमें जाता है। वस्तुत: आत्मा स्वरूपत: ज्यों-का-त्यों रहता है।

याद रखो—मृत्युसे तुम इसीलिये डरते हो कि तुमने पाञ्चभौतिक शरीरको ही अपना रूप मान रखा है। शरीर जड़ है, वह माताके उदरमें बनता है और जो कभी बनता है, वह नष्ट होगा ही। उसका विनाश उसकी उत्पत्तिकी भाँति ही सहज स्वाभाविक है। तुम्हारा जो असली आत्मस्वरूप है वह तो नित्य है; कौमार, यौवन, जरा, व्याधि, मरण आदिसे सदा ही मुक्त है। इसलिये मृत्युसे डरनेका कोई कारण ही नहीं। यह केवल अज्ञानमात्र है।

याद रखो—यह शरीरकी मृत्यु भी तभीतक होती है, जबतक जीव परिवर्तनशील और अनित्य प्रकृतिके परिणामोंमें स्थित होकर, उनमें मिथ्या तादात्म्य मानकर उन्हींको अपना स्वरूप मान रहा है। जिस क्षण तुम्हें यह भान हो जायगा-तुम यह जान लोगे कि ये सारे परिवर्तन प्रकृतिके परिणाममात्र हैं, मैं तो सदा निर्लिप्त इन सबका द्रष्टामात्र हूँ—उसी क्षण तुम जन्म-मृत्युके बन्धनसे मुक्त हो जाओगे। जो बन्धन वास्तवमें है नहीं, माना हुआ ही है।

याद रखो—यह प्रकृति औरइसके परिणाम भी जिस स्वरूपमें तुम उन्हें देख रहे हो, उस स्वरूपमें यथार्थत: नहीं है।

यह सब माया है या ये लीलामय प्रभुके खेलमात्र हैं। वे ही स्वयं खेल, खिलौना और खेलनेवाले बने यह सब लीला कर रहे हैं। जन्म भी उन्हींका एक लीलास्वरूप है और इसी प्रकार मृत्यु भी। मृत्यु के रूपमें वही प्रकट होते हैं। तुम यदि इस बातको जानकर, मृत्युके स्वाँगमें आये हुए प्रियतम भगवान्को पहचानकर उनका आलिंगन करोगे तो मृत्युकी सारी भीषणता परम सुखरूपतामें परिणत हो जायगी। तुम भगवान्के साथ मिलकर परम धन्य और नित्य सुखी हो जाओगे। इसलिये मृत्युसे डरो मत, उसमें छिपे हुए भगवान्को देखो। देखते ही उन्हें पा जाओगे। जबतक तुम उन्हें न देखकर बाहरी सज्जाको देखते हो, तभीतक वे प्रत्यक्ष होनेपर भी तुमसे छिपे हैं, ज्यों ही तुमने उनको देखा-पहचाना कि फिर तो वे नित्य प्रत्यक्ष ही हैं। वे-ही-वे हैं-सर्वत्र, सर्वदा, सभी रूपोंमें, सभी अवस्थाओंमें और सभी नामों-रूपोंमें।

याद रखो—मानव-जीवनकी सफलता भी इसीमें है। मानव-जीवन मिलता ही इसलिये है कि इसमें आकर जीव प्रकृतिके मिथ्या बन्धनसे मुक्त हो जाय, वह अपने स्वरूपको प्राप्त करके 'जीवन'से नित्य आत्मा बन जाय। नित्य आत्मा तो सदा है ही, 'जीव' की मान्यता ही उसे अपने स्वरूपसे वंचित रख रही है। इसीसे वह नित्य स्वरूपमें स्थित होनेपर भी-स्वस्थ होनेपर भी अस्वस्थ ही है।

याद रखो—जो '*प्रकृतिस्थ*' है-प्रकृतिमें स्थित है, वही अस्वस्थ है और जो आत्मस्वरूपमें स्थित है-आत्मस्थ है, वही स्वस्थ है। स्वस्थताकी पहचान है जगत्के समस्त प्राणी-पदार्थ, परिस्थितियोंमें समभावसे सदा एकमात्र परमात्माको देखना, परमात्माको उपलब्ध करना। विविध व्यवहार-स्थलोंमें व्यवहारभेद होते हुए भी एकमात्र नित्य अभिन्न परमात्माका अभिन्न स्पर्श प्राप्त करना। यह स्वस्थता ही मानव-जीवनका लक्ष्य है और इसीको प्राप्त करानेवाले विचार तथा क्रियाओंका नाम ही सच्ची साधना है।

भगवान्की कृपासे मनुष्य-शरीरकी प्राप्ति

याद रखो—मनुष्य-शरीर भगवान्की अहैतुकी कृपासे ही मिला है। बड़े-से-बड़े ऐश्वर्य-वैभव तथा शक्ति-सामर्थ्यवाले देवता और असुर भी मनुष्य-देहकी आकांक्षा करते हैं; क्योंकि परमात्माकी प्राप्तिका-जो जीव-जीवनका एकमात्र लक्ष्य है-मनुष्य-देह ही परम साधन है। भगवत्प्राप्ति ही परम पुरुषार्थ है और इस परम पुरुषार्थकी प्राप्ति अधिकार देहर ही अनादिकालसे भटकते हुए जीवको भगवान्ने मनुष्य-देह दिया है।

कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही॥

याद रखो—इस मानव-शरीरका सदुपयोग इसीमें है कि एकमात्र भगवत्प्राप्तिके लिये ही मन-तनसे सारे विचार तथा कर्म किये जायँ। न कर्मोंमें आसक्ति रहे, न उनके फलमें। भोग जीवनका लक्ष्य न हो, भगवान् ही लक्ष्य हों; और इस लक्ष्यकी सिद्धिके लिये समस्त दैवी गुणोंका आश्रय लेकर भगवान्के मंगलविधानमें विश्वास रखते हुए और इसलिये प्रत्येक परिस्थितिमें सुखका अनुभव करते हुए शान्त जीवन बिताया जाय और अन्तमें भगवान्की उपलब्धि हो जाय।

याद रखो—इस मनुष्य-शरीरको जो लोग नश्वर भोगोंकी प्राप्ति एवं भोगके लिये काम-क्रोध, मान-मद-अहंकार, ईर्ष्या-वैर-हिंसा आदिमें ही लगाये रखते हैं, वे यहाँ आजीवन दु:ख उठाते हैं-अनन्त चिन्ताओंसे घिरे रहते हैं और नये-नये पाप बटोरकर पुन: महान् दु:खमय योनियोंमें चले जाते हैं। यह मनुष्य-शरीरके दुरुपयोगका विषम परिणाम है।

याद रखो—संसारमें जितने प्राणी हैं, सभीमें भगवान् भरे हैं, वे सब भगवान्की ही विविध अनन्त अभिव्यक्तियाँ हैं।

अतएव सबमें भगवान्‌को देखते हुए, किसी भी प्राणीका जरा भी अहित न करके, सबके कल्याणकी भावना करते हुए भगवत्प्राप्तिके मार्गपर अग्रसर होते चले जाओ, पर यह निरन्तर समझते रहो कि ये सब यात्राके साथीमात्र हैं। इनसे यहाँका जो सम्बन्ध है, वह यथार्थ नहीं है। अत: इनके साथ इनके हितका निदोर्ष व्यवहार करो-सबकी यथासाध्य सेवा करो। कहीं भी, किसीमें भी न तो आसक्ति करो और न किसीसे द्वेष ही करो। भगवत्-सेवाकी शुद्ध भावना रखो। फिर तुम्हारा प्रत्येक कर्म ही भगवान्‌की पूजा बन जायगा और तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा।

याद रखो—मानव-जीवनकी सफलता ऊँचा अधिकार, विपुल धन-वैभव, संसारमें अपार यश-कीर्ति और बड़ी-से-बड़ी जागतिक सफलताकी प्राप्तिमें नहीं है। यदि ये सब परिस्थितियाँ और पदार्थ भगवान्‌से विमुख करनेवाले हैं तो इनका प्राणधातक मीठे विषु या मित्र बनकर धोखेसे मार डालनेवाले शत्रुकी भाँति त्याग या विनाश ही श्रेयस्कर है। मनुष्य-जीवनकी सच्ची सफलता है उसका प्रत्येक क्षण भगवान्‌की सेवामें समर्पित होनेमें, प्रत्येक श्‍वासके भगवान्‌की स्मृतिमें डूबे रहनेमें।

याद रखो—वे ही सब प्राणी, पदार्थ, परिस्थितियाँ तुम्हारा वास्तविक हित करनेवाली हैं; जिनसे तुम्हें भगवत्प्राप्तिके साधनमें उत्साह, शक्ति, सहायता, सहयोग और प्रकाश मिलता हो, उन्हींका आश्रय तथा यथावश्यक संग्रह करना चाहिये। यही सत्संग है। शेष तो सभी कुसंग सावधानीके साथ जीवनको भगवान्‌में ही लगाये रखो। वस्तुत: यही मानवता है। यही सच्चा विकास है।

जीवनकी सफलता-भगवत्प्राप्तिमें

याद रखो—मानव-जीवनकी सफलता भगवत्प्राप्तिमें है, भोगप्राप्तिमें नहीं। मनुष्य चाहता है अनन्त असीम सर्वथा दु:खरहित सुख, वह सहज ही परम स्वतन्त्रता चाहता है और जीवनकी नित्य अमरता चाहता है। ये तीनों ही चीजें भोगोंमें नहीं हैं।

याद रखो—भोगोंमें सुख तो है ही नहीं, वरं वे दु:खयोनि हैं, उनमें दीखनेवाला सुख मोहजनित तथा दु:खका पूर्वरूप है; भोग सदा परतन्त्र है तथा वे परतन्त्रता ही प्रदान करत हैं और भोग स्वयं अनित्य एवं विनाशी हैं तथा क्षणभंगुरता एवं मरण ही देते हैं। पक्षान्तरमें भगवान् अनन्त असीम सच्चिदान्दमय हैं। वे परम स्वतन्त्र हैं तथा तमाम बन्धनोंसे मुक्त करके आत्माकी नित्य स्वतन्त्रताका उदय करनेवाले हैं एवं स्वरूपगत अमृतस्वरूप हैं और सहज अमरत्व प्रदान करनेवाले हैं।

याद रखो—क्षणभंगुर अनित्य दु:खमय भोगोंके अर्जन, संग्रह तथा उपभोगमें लगा हुआ मनुष्य सदा चिन्ताग्रस्त, अशान्त, भयभीत तथा पापकर्मोंमें ही संलग्न रहता है। इससे उसके संकटोंकी संतापोंकी नित्य नयी वृद्धि होती रहती है और वह यहाँ अनन्त तापमय असफल जीवन बिताकर दु:खसे मरता है और मरनेके बाद बार-बार नरकादि एवं आसुरी योनि आदि अधम गतियोंको प्राप्त होता है। अतएव भोगोंसे आसक्ति हटाकर भगवान्‌में मन लगाओ।

याद रखो—भोग उतने बुरे नहीं है, जितनी बुरी भोगोंकी आसक्ति है। उस भोगासक्तिासे ही भोगकामना उत्पन्न होती है, जो सारे पाप-तापोंकी जननी है। अतएव यदि तुम्हें भोग प्राप्त हैं तो उन्हें भगवान्‌की सेवामें लगाते रहते। भगवान्‌की सेवा में लगाना ही भोगोंकी सदुपयोगिता और सार्थकता है। अतएव तुम्हारे पास जो कुछ भी-पदार्थ हैं, उन्हें अपना भोग्य न समझकर भगवान्‌की सेवा-सामग्री समझो और जहाँ जिस समय जैसी आवश्यकता हो, वहाँ उस समय

वैसे ही उनको अभिमान-शून्य प्रसन्नचित्तसे उदारतापूर्वक सतत भगवान्‌की सेवामें लगाते रहो एवं इसीमें अपनेको और उन भोगोंको भी धन्य समझो।

याद रखो—सुख शान्तिमें हैं। अशान्त मनवाला मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता और भगवान्‌के अनिवेदित भोग नित्य नयी अशान्ति पैदा करनेवाले होते हैं। तुम शान्ति चाहते हो, पर चाहते हो परम अशानत, अति चंचल तथा विनाशशील अपूर्ण भोगोंसे। यह वैसी ही अज्ञतापूर्ण चाह है जैसे अग्निसे शीतलता प्राप्त करनेकी चाह। आग जलायेगी ही, वैसे ही भोग भी अशान्ति तथा जलन ही पैदा करेंगे।

याद रखो—इस जीवनकी परम दुर्लभता और उपयोगिता इसीलिये है कि यही एकमात्र भगवत्प्राप्तिका साधन है। इस मानव-जीवनके अमूल्य क्षण व्यर्थ बीते जा रहे हैं। व्यर्थ ही नहीं, अनर्थमें बीत रहे हैं। तुम जो भोगासक्तिमें लगकर व्यष्टि और समष्टिके लिये भी केवल भोगसुख बटोरनेके असफल प्रयासमें लगे हो और इसके लिये राग, काम, द्वेष, क्रोध, कलह, युद्ध, वैर और हिंसाका आश्रय लिये जीवनको सफल एवं धन्य मान रहे हो, यह तुम्हारा प्रमाद है-उन्माद है। इन प्रयत्नोंके द्वारा तुम जन-सेवा, देश-सेवा, विश्व-सेवा, मानव-सेवा या प्राणी-सेवा तो करते ही नहीं हो, निज-सेवा भी नहीं कर रहे हो। प्रमाद विपरीत कर्ममें प्रवृत्त कराता है और विपरीत कर्मका फल भी विपरीत ही होता है।

याद रखो—तुम जिन मनोरथों और कार्योंके द्वारा अपनेको एवं विश्वको सुखी करना चाहते हो, उसके द्वारा सुख नहीं प्राप्त होगा, दु:ख ही बढ़ेगा; शान्ति नहीं मिलेगी, अशान्ति ही बढ़ेगी; प्रेमका विस्तार नहीं होगा, द्वेष ही बढ़ेगा; और विकास नहीं होगा, विनाश ही होगा।

याद रखो—तुम भ्रमवश सेवाके नामपर विनाशकी ओर जा रहे हो और इसीको जीवनका कर्तव्य मानकर उत्साहपूर्वक इसीमें जुटे रहे हो, यह तुम्हारे लिये और भी बुरी बात है। बुराईको भलाई माननेवालेकी बुराई बढ़ती ही जायगी। अतएव तुम चेतो और आत्माके एवं भगवान्‌के स्वरूपपर गहरा विचार करो और इस सत्यको उपलब्ध करो कि कल्याण त्यागमें हैं, धन, पद अधिकार या किसी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिरूप भोगमें नहीं; जीवनका लक्ष्य भगवान् हैं, भोग नहीं; और तुम्हारा कर्तव्य त्यागपूर्ण वृत्तिसे समस्त प्राप्त तन-मन-धनको तथा प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिको भगवान्‌की सेवामें समर्पण करना है, भोगोंमें लगाना नहीं।

असली सौन्दर्य

याद रखो—सौन्दर्य किसी बाहर रूप-रंग, वेष-भूषा और साज-श्रृंगारमें नहीं है, यह सब तो काल्पनिक है। कहीं गौर-वर्ण सुन्दर माना जाता है तो कहीं कृष्ण-वर्ण। इसी प्रकार वेष-भूषा, साज-श्रृंगारमें भी सुन्दरता की कल्पना भिन्न-भिन्न है। शरीरके अवयवोंकी सुन्दरताके विषयमें भी लोगोंकी पृथक्-पृथक् कल्पना है। विषयासक्तको विषयकामना बढ़ानेवाले अंग सुन्दर लगते हैं और विषय-विरक्तको वे ही अत्यन्त भयानक प्रतीत होते हैं।

याद रखो—वस्तुत: जिसका हृदय सुन्दर है, जिसके अन्तरमें विषय-विराग, त्याग, अहिंसा, प्रेम, करुणा, परदु:खकातरता, विनय, दया, नम्रता, सहिष्णुता, सेवा, संयम, साधुता, समता, शान्ति आदि सुन्दर विचार, भाव, गुण, भरे हैं, वही वस्तुत: सुन्दर है। ऐसे सुन्दर हृदयवाले पुरुष या स्त्रीकी मुखाकृतिमें, उसके नेत्रोंमें, उसके अंग-अंगमें भीतरके इन सुन्दर भावों-गुणोंका प्रकाश अपने-आप छा जाता है और वह देखनेवालोंके हृदयमें उसके भावोंकी न्यूनाधिकताके अनुपातसे इन गुणोंका प्रकाश करता है।

याद रखो—किसीको देखकर तुम डर जाते हो, किसीको देखकर निर्भय हो जाते हो; किसीको देखे ही क्रोध उत्पन्न होता है, किसीको देखकर क्षमाका उदय हो जाता है; किसीको देखकर कामके वश हो जाते हैं, किसीको देखते ही संयमकी सहज उत्पत्ति हो जाती है; यह सब इसलिये होता है कि उसकी मुखाकृति आदिसे वैसे ही भावोंका प्रकाश हो रहा है।

याद रखो—जगत् त्रिगुणात्मक है, इसलिये सभीके अन्तरमें कम-ज्यादा सात्त्विक गुण भी है, तमोगुण भी है। देवता भी हैं, राक्षस भी हैं। तुम अपने सात्त्विक या तमाम गुणसे, देवभाव या आसुरभावसे किसीके अंदरके देवताको जगा देते हो, तो किसीके अंदरके असुरको जगा देते हो।

याद रखो—सुन्दर वह है जिसे देखते ही हमारे पापके विचार दब जायँ, लुप्त हो जायँ और पुण्यके विचार जग जायँ, बढ़ जायँ। देवता जगकर क्रियाशील हो जायँ और असुर-राक्षस दबकर मृतवत् हो जायँ।

याद रखो—जिसके हृदयमें आसक्ति, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, वैर, हिंसा, मोह, मद, अभिमान, विष्मता, भोगपरायणता, अशान्ति आदि दुर्विचार, दुर्भाव और दुर्गुण भरे हैं, वह बाहरसे सुन्दर दीखनेपर भी, वेष-भूषासे सुसज्जित होनेपर भी वस्तुतः सुन्दर नहीं है, भयानक है। वह स्वयं सदा दोषोंका घर बना रहता है; क्योंकि उसके अंदरका असुर-राक्षस जगा हुआ सक्रिय हो रहा है और उसके सम्पर्कमें जो आता है, उसको भी वह अपनी नकली सुन्दरताके पर्देमें छिपे भयानक विचार-भाव देकर उसे भी असुर-राक्ष्ज्ञस बना देना चाहता है।

याद रखो—जिस सुन्दरताके साथ हमारे चरित्रकी पवित्रता, भावोंकी विशुद्धि और आचरणकी शुचित है, वही सुन्दरता वास्तविक है। शेष समस्त सौन्दर्य यथार्थतः वैसा ही है, जैसा जहरसे भरा चमकता हुआ स्वर्ण-कलश। इस भयानक सुन्दरतासे अपनेको बचाओ और इसलिये बाहर रूप-रंग, वेष-भूषा, साज-श्रृंगारके चक्करमें न पड़कर विचारों, भावों और गुणोंको उसीके अनुसार अपनी क्रियाको सुन्दर बनाओ। इससे शरीर स्वस्थ होगा, मन स्वस्थ होग, बुद्धि स्वस्थ होगी; क्योंकि इसीसे स्वस्थ आत्माके शुभ दर्शन होंगे।

याद रखो—गंदे विचार, असद्भाव, दुर्गुण तथा दुष्कर्म स्वयं नकर हैं और नरकोंमें ले जानेवाले हैं। उनमें सर्वत्र गंदगी तथा कुरूपता भरी है, भले ही भ्रमसे वे कहीं बाहरसे स्वच्छ, सुन्दर प्रतीत होते हों।

याद रखो—भगवान् श्रीकृष्ण श्यामसुन्दर हैं-उनका बाहर रंग गोरा नहीं, पर उनकी सुन्दरता सबको मोह लेती है, इसीलिये कि उनके बाहर-भीतर, सर्वत्र सदा परम कल्याणमय, नित्य नवीन सुन्दर दिव्य भगवत्ताका प्रकाश हो रहा हे। इस श्यामप्रकाशमें डूब जाओ तो तुम भी बाहर-भीतरसे परम सुन्दर हो जाओगे-

'ज्यों-ज्यों डूबै स्याम रंग त्यो-त्यों उज्जवल होय।'

दान-भजन आदि भगवान्‌की प्रीतिके लिये ही

याद रखो—तुम जो कुछ भी दान करते हो, किसीकी कुछ सहायता करते हो, भगवान्‌का भजन करते हो और ध्यान करते हो-यह सब तभी विशुद्ध रहेंगे, जब इन्हें लोगोंको दिखानेकी अथवा जाननेकी भावना तुम्हारे मनमें बिलकुल ही नहीं रहेगी।

याद रखो—दान देना चाहिये, जिसको देना चाहते हो उसके लाभ तथा अपने संतोषके लिये, सहयाता करनी चाहिये

किसी दु:खीका दु:ख मिटानेके लिये और अपने संतोषके लिये, इसी प्रकार भगवान्‌का भजन-ध्यान भी करना चाहिये भगवान्‌के प्रीतिसम्पादन तथा अपने परमार्थसाधनके लिये, पर यदि तुम्हारे मनमें अपने ये कार्य दूसरोंको दिखानेकी बात आती है तो तुम अपने उद्देश्यसे गिर जाते हो। फिर इनसे वास्तविक सिद्धि या सफलता नहीं मिलती।

याद रखो—अपने-आपको अपने प्रति ईमानदार रहनेकी बड़ी आवश्यकता है। भगवान् तो धोखा खाते नहीं, तुम स्वयं ही अपने-आपको धोखा देकर कर्म या साधनके वास्तविक फलसे वंचित रह जाते हो। इसलिये उचित यह है कि जो तुम कुछ भी दान करो, दान ग्रहण करनेवाला भी उसे न जाने तो सर्वोत्तम, नहीं तो कम-से-कम दूसरा तो जाने ही नहीं। इसी प्रकार सहायताके करनेमें भी ध्यान रखो और भजन-ध्यानमें दूसरोंको दिखाने-जनानेकी भावना होनी ही नहीं चाहिये। ये तो अन्तरके धन हैं और निरन्तर अन्तरमें अर्जित और संचित होने रहने चाहिये। केवल तुम जानो और तुम्हारे भगवान् जानें, तीसरेसे कोई मतलब नहीं।

याद रखो—किसी सार्वजनिक सहायताके कार्यमें भी, जहाँतक बनें, अपना दान प्रकट न करनेका विचार करो। किसी संस्थाद्वारा सहायता करवानी हो तो उसमें भी सम्भव हो तो अपना नाम प्रकाशित मत होने दो। इससे दानका मूल्य बढ़ जायगा और अधिक-से-अधिक विशुद्धि होगी।

याद रखो—तुम जो कुछ भी देते हो, वह भगवान्‌की ही चीज है और जिसको देते हो वह भी भगवान्‌का ही रूप है। अतएव अभिमान छोड़कर भगवान्‌की चीज भगवान्‌को अर्पण करनेमें अपना सौभाग्य समझो और अर्पणबुद्धिसे ही दान करो।

याद रखो—दान, सहायता और भजन-ध्यान भगवान्‌की प्रीतिके लिये ही होनी चाहिये। अन्य लोगोंको दिखाने अथवा अन्य किसी सदुद्देश्यको लेकर इन्हें करना भी लाभदायक ही है; पर इनका असली विशुद्धरूप और असली भगवत्प्राीतिरूप फल तो तभी रहता और प्राप्त होता है, जब कि ये गुप्तरूपसे हों और केवल भगवत्प्रीति-सम्पादनके लिये ही हों।

भगवान् मङ्गलमय हैं

याद रखो—भगवान् मंगलमय हैं, उनका प्रेम अहैतुक है, उनकी दया सहज सर्वत्र व्यापिनी है, वे सर्वशक्तिमान् हैं, वे सर्वा हैं तथा नित्य निर्भ्रान्त हैं। तुम्हारे लिये जो कुछ भी विधान है, सब उनकी मङ्गलमयी इच्छारहित इच्छासे ही सम्पन्न होता है, अतएव उनकी इच्छा ही तुम्हारे लिये सदा-सर्वदा कल्याणकारिणी है।

याद रखो—तुम न सर्वा हो, न दूरदृष्टि हो, न अपने यथार्थ कल्याणके स्वरूप तथा साधनको ही निर्भ्रान्तरूपसे वास्तविक जानते हो; अतएव तुम अपने लिये जो कुछ सोचते हो, जो कुछ कल्याणका साधन निश्चय करते हो, वह ठीक वैसा ही है, यह निश्चित नहीं है। तुम्हारी भूल हो सकती है। हो सकता है तुम अपनी रागद्वेषमयी अदूरदर्शिनी दृष्टिसे अहितको हित, अमंगलको मंगल, अकल्याणको कल्याण और असत्यको सत्य मानकर उसीकी इच्छा करके अपने ही हाथों अपना अनिष्ट कर लेते हो या करने लगते हो।

याद रखो—तुमसे भूल हो सकती है, भगवान्‌से नहीं; तुम भ्रमसे अपना अमंगल सोच या कर सकते हो, पर भगवान् कभी तुम्हारा अमंगल न सोच सकते हैं, न कर सकते हैं। तुम किसी बातमें अपना हित समझकर भी सीमित शक्ति होनेके कारण उसे नहीं कर सकते, पर असीम-शक्ति भगवान्‌के लिये सभी कुछ सहज सम्भव है। तुम्हारी इच्छा बदल

भी सकती है, पर भगवान्‌की मंगलमयी इच्छा नित्य है। अतएव तुमको यही चाहिये कि तुम सब प्रकारसे, सब ओरसे सभी कार्योंमें अपने परम सुहृद् श्रीभगवान्‌की इच्छापर अपनेको छोड़कर निश्चिन्त हो जाओ।

याद रखो—भगवान्‌की इच्छापर अपनेको न छोड़कर यदि तुम अपनी स्वतन्त्र इच्छाके अनुसार भगवान्‌से काम कराना चाहते हो या करते हो तो इससे सिद्ध होता है कि भगवान्‌की सर्वज्ञता, सौहार्द तथा मंगलमयतापर तुम्हें विश्वास नहीं है और अपनी स्वतन्त्र इच्छाका उपयोग करते तुम अपने परम मंगल-परिणाममें-जो भगवान्‌की मंगलमयी इच्छाके अनुसार होनेवाला था-बाधक होते हो और अपने-आप ही अपना अमंगल करते हो।

याद रखो—भगवान्‌की अहैतुकी कृपा, प्रीति, सौहार्द, सर्वज्ञता आदि पर विश्वास करके तुम अपनी स्वतन्त्र इच्छाको छोड़कर भगवान्‌की इच्छापर निर्भर करते हो तो अपना सहज मंगल करते हो। अतएव सदा यही चाहो कि भगवान्‌की इच्छा पूर्ण हो। यह विश्वास रखो-देखनेमें कही भयानक या विनाशक होनेपर भी भगवान्‌की इच्छासे होनेवाला परिणाम, तुम्हें मिलनेवाला फल निश्चय ही तुम्हारे लिये परम कल्याणरूप होगा।

याद रखो—अनिच्छा या परेच्छासे जो कुछ भी फल तुम्हें प्राप्त होता है, वह भगवान्‌के मंगलविधानसे ही होता है। उसके विपरीत कभी इच्छा न करो, उसमें कभी असंतुष्ट मत होओ। वरं भगवान्‌का मंगल-प्रसाद समझकर उसे सिर चढ़ाओ। भगवान्‌से कभी कोई माँग करनी हो, कुछ चाहना हो तो बस, केवल यही माँगो, यही चाहो कि 'मंगलमय भगवान्! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। तुम्हारी इच्छाके विपरीत मेरी कभी कोई इच्छा हो ही नहीं और कदाचित् कभी कुछ हो जाय तो उसे कभी पूरी मत करना।'

याद रखो—भगवत्सेवाकी बुद्धिसे, भगवान् जब जैसी सद्‌बुद्धि दें वैसा आचरण करो और फल केवल भगवान्‌की इच्छापर छोड़ दो। इससे तुम्हें सुख-शान्ति तो मिलेगी ही, भगवत्कृपासे भगवत्प्रेमकी प्राप्ति भी हो जायगी। तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा।

भगवान्‌की स्वरूप-सत्ता

याद रखो—तुम्हारे न मानने या न स्वीकार करनेसे सत्य-स्वरूप भगवान्‌की सत्ताका अभाव नहीं हो सकता। हाँ, तुम अपनी ओरसे उनकी सत्ता स्वीकार करके उनके आराधन-पूजनसे जो सीधा परम लाभ उठा सकते, उससे वंचित हो जाओगे। इसी प्रकार परलोक और कर्मफलको अपने अहंकारके कारण या भ्रान्त बहुमतसे अस्वीकार कर देनेपर भी न तो परलोक मिटेगा और न कर्मफलसे ही छुटकारा मिलेगा। अतएव बुद्धिमानी इसीमें है कि भगवान्‌को, परलोकको और अवश्यम्भावी कर्मफलको स्वीकार करो।

याद रखो—भगवान्‌को स्वीकार करनेपर भगवान्‌की सहायता प्राप्त करनेके लिये शुभ कर्म होंगे, परलोकको तथा कर्मफलको माननेपर पापके परिणामस्वरूप घोर दु:खकी सम्भावनासे पाप-कर्मसे बचकर तुम पुण्य-कर्मोंमें लगोगे। भगवान्, परलोक और कर्मफलकी सत्ता यदि न भी हो तो भी तुम्हें लाभ ही होगा; क्योंकि तुम शुभ कर्मोंके द्वारा सुख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त करोगे। हानि तो कुछ भी होगी ही नहीं, परंतु यदि तुम इनको नहीं मानोगे तो इस लाभसे भी वंचित रह जाओगे और यदि भगवान्, परलोक तथा कर्मफलकी सत्ता है, तब तो इनके न माननेपर तुम स्वेच्छाचारी और दुष्कर्म करनेवाले बनकर अपना इह-पर सभी बिगाड़ लोगे, तुम्हारी महती हानि होगी।

याद रखो—असली बात तो यह है कि भगवान् परलोक तथा कर्मफल सत्य हैं ही! इन्हें मानकर इनका यथायोग्य

सेवन करके तुम स्वयं तो परम लाभके भागी होआगे ही–अपने आचरणोंसे, अपने जीवनसे, अपने आदर्शसे दूसरोंको भी इस ओर लगानेमें समर्थ होओगे। वे अपने आदर्श आचरणसे दूसरोंको लगायेंगे, अतएव तुम विशुद्ध भगवद्भावसे प्रचार–प्रसारमें सफल निमित्त बननेका पुण्य और सौभाग्य प्राप्त करोगे।

याद रखो—जो स्वयं भगवान्‌की सेवामें लगा है तथा अपने आचरणसे दूसरोंको लगाता है, वह बड़ा भाग्यवान् है और वही प्राणियोंकी सच्ची सेवा करनेवाला है।

याद रखो—तुम यदि किसीको ऐसी मीठी चीज खिलाते हो–जिससे वह बीमार होकर मर जाता है तो तुम उसका उपकार–सेवा न करके अपकार तथा कष्टदान ही करते हो। भोगव सुखरहित दु:खालय और दु:खोंकी उत्पत्तिके स्थान हैं। (**'असुखम्,' ' दु:खालयम्', 'दु:खयोनय:'**–गीता) अतएव जो भी व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति मनुष्यको परमानन्दस्वरूप भगवान्‌से हटाकर भोगोंमें लगाती है, वह उसके पतन, भयानक कष्ट, नरक–प्राप्ति और आत्म–विनाशमें कारण बनकर उसके साथ शत्रुताका काम करती है। अत: यदि तुम किसीको भगवान्‌में लगाते हो हो उसकी परम सेवा करते हो; क्योंकि इसीमें उसका भविष्य सुख–सौभाग्यमय पवित्र, उन्नत होगा और वह अविनाशी पदको प्राप्त होगा। एवं यदि तुम भगवान्‌से हटाकर भोगोंमें लगाते हो तो तुम उसके प्रति बहुत बड़ा अपराध करते हो; क्योंकि भोगासक्ति मनुष्यके सब प्रकारसे पतनका कारण है। इतना ही नहीं, यदि तुम अपनी चित्तवृत्तिको भी भगवान्‌से हटाकर भोगोंमें लगाते हो तो अपने साथका शत्रुताका ही बर्ताव करते हो; क्योंकि तुम ऐसा करके आप ही अपनेको पतन तथा विनाशके पथपर बढ़ाये ले जाते हो। अत: सावधानीके साथ ऐसा आचरण करो, जिससे तुम स्वयं भोगोंकी ओर न लगकर भगवान्‌की ओर अग्रसर हो सको और दूसरोंको भी भगवान्‌की ओर लगा सको। इसीमें तुम्हारा सौभाग्य है और इसीमें सच्ची लोकसेवा है।

याद रखो—भगवान्, परलोक तथा कर्मफलकी सच्ची सत्ताको स्वीकार करनेसे भगवान्‌में वृत्ति सुगमतासे लगती है, अतएव इन्हीं स्वीकार करर इनसे लाभ उठाओ और अपना जीवन सफल करो।

वाणीका दुरुपयोग

याद रखो—वाणी भगवती सरस्वतीका स्वरूप है। वाणी वह महान् शक्ति है, जिसका सदुपयोग करके मनुष्य सबको अपने वशमें कर सकता है और दुरुपयोग करके सबको अपना वैरी बना सकता है। वाणीका सदुपयोग है–जिससे किसीको उद्वेग न हो, जो सत्य हो, जो प्रिय हो और जो हितकारक हो–ऐसे वचन बोलना एवं शेष समय वाणीके द्वारा सद्‌ग्रन्थोंका पाठ तथा भगवान्‌के मंगलमय नाम–लीला–गुणोंका गान, कीर्तन और जप आदि करना।

याद रखो—वाणीका सदुपयोग ऐसी वाणी बोलनेमें है जिसे सुनते ही सुननेवालोंके मनमें हर्ष और उल्लासका उदय हो; वे प्रीति तथा उत्सुकताके साथ उसे सुनना चाहें; जो आदर, सम्मान तथा विनय–नम्रतासे सम्पन्न हो; जो मधुर एवं हितकारक हो; जो सत्साहस और निर्भयता प्रदान करनेवाली और बढ़ानेवाली हो; जो सदाचार, धर्म, शास्त्र, संत–भक्त, त्यागी–पुरुष, सती–स्त्री आदिके प्रति श्रद्धा–सत्कार बढ़ानेवाली हो; जो भगवान्‌के भजन–सेवनके लिये उत्साह देनेवाली हो; जो भगवान्‌के भजन–सेवनके लिये उत्साह देनेवाली हो; जिससे उदारता, त्याग और प्रेमका विस्तार होता हो और जो प्रसन्नहृदय एवं मुस्कराते मुखसे उच्चरित हो।

याद रखो—वाणीका सदुपयोग होनेपर उसकी शुद्धि और शक्ति बढ़ जाती है। कभी मिथ्या न बोलकर सदा सत्य

बोलनेवालेकी वाणीसे जो कुछ निकल जाता है, वह सत्य होने लगता है। मधुर तथा हितकारक वाणी प्राणी-मात्रमें सर्वत्र प्रेम तथा आनन्दका विस्तार, करके बड़ी मात्रामें प्रेम तथा आनन्द प्राप्त कराती है। विनय, नम्रता तथा आदर-सम्मानयुक्त हितभरी वाणी बदलेमें बहुत बड़े रूपमें आदर, सेवा, सम्मान तथा कल्याण प्राप्त करनेवाली होती है औरभगवान्के मंगलमय नाम-लीला-गुण आदिका कीर्तन-जप करनेवाली वाणी जगत्में दिव्यता, पवित्रता और आध यात्मिकता का प्रसार कर त्रितापसे मुक्त करानेमें सहायता करती है। एवं अनायास ही भगवान्की कृपाके दर्शन करवाकर जीवनकोसफल और धन्य बना देती है।

याद रखो—मिथ्या-भाषण, परदोष-कथन, परनिन्दा, चुगली, कठोर बोलना, रूखा बोलना, शाप देना, गाली बकना, किसीका उपहास करना, व्यंग कसना, ताने मारना, अंगहीन-कुरूपको अंगहीन-कुरूप कहना, जिसमें किसीका अपमान-तिरस्कार तथा अहित होता हो-ऐसे वचन बोलना, मिथ्या आश्वासन देना, भगवान्, धर्म, शास्त्र, संत-भक्त आदिकी निन्दा करना, साहस तोड़ने, कायरताको बढ़ाने तथा भय एवं निराशा उपजानेवाले वचन कहना, झूठी गवाही देना, सन्मार्गसे हटाकर कुमार्गपर ले जानेवाले वाक्य कहना, अपने लिये अभिमान, ऐंठ, बड़प्पनकी बातें कहना, झूठी प्रतिज्ञा करना एवं कलह-द्वेष बढ़ानेवाले वाक्य कहना, परचर्चा करना, व्यर्थकी बातें करना, अधिक बोलना-यह वाणीका अपव्यवहार, दुरुपयोग है तथा सर्वथा अवाञ्छनीय है। ये वाणीसे होनेवाले नीच कर्म या पाप है। इनसे बचना चाहिये।

याद रखो—जो लोग वाणीके द्वारा तीर-से चुभनेवाले कर्कश तथा रूखे वचन बोलते हैं, दूसरोंके प्रति व्यंग्य कसते और उनकी दिल्लगी उड़ाते हैं, ऐब बताकर चिढ़ाते हैं, अपमानजनक तथा अहितकारक वाणी बोलते हैं, गाली या शाप देते हैं और दूसरोंके हितका नाश करनेवाले वचन बोलते हैं-वे सहज ही द्वेष-द्रोह, क्लेश-कलह, कष्ट-संताप, क्रोध ा-हिंसा आदिको जन्म देकर अपने तथा दूसरोंके लिये अशान्ति, अप्रसन्नता, भय-शंका, दु:ख-दुर्भाग्य और शोक-विषादको बुलाते हैं और इस कारण स्वयं रात-दिन जलते तथा दूसरोंको जलाते रहते हैं। उनकी बुद्धि मारी जाती है, जिससे नये-नये पाप बनते हैं और फलत: सर्वनाश हो जाता है। यह वाणीके दुरुपयोगका परिणाम है!

वाणीका सदुपयोग

याद रखो—जो मनुष्य मधुर, हितकर, सत्य, शुभ, विनम्र और आवश्यक वाणी बोलता है, वह अपना तथा सबका हित करता है। उसकी वाणीमें बल, तेज, प्रभाव तथा सत्यकी शक्ति बढ़ने लगती है और उस वाणीसे जो कुछ कहा जाता है, वह सत्य होने लगता है। अतएव अनर्गल न बोलकर जितना, जहाँ आवश्य हो, केवल उतना ही बोलो और जो बोलो सो इस बातको सोचकर कि वह सत्य तथा दूसरेके लिये हितकर है या नहीं।

याद रखो—सत्य तथा हितकर वचन भी शुभ, मधुर तथा विनम्र होने चाहिये। नहीं तो, उनके ग्रहण करनेमें लोग उपेक्षा करेंगे, कहीं-कहीं तो विरोध होने लगेगा और उनका प्रभाव नष्ट-सा हो जायगा।

याद रखो—वाणीमें अभिमान, रूखापन, अपनी बड़ाई, दूसरोंकी निन्दा, दूसरोंके लिये अपमानजनक वाक्य, चुगली, झूठा हठ, व्यर्थ की बकवासके तथा अशुभ शब्द होंगे तो उनसे अपना भी अहित होगा तथा सुननेवालोंपर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। अतएव जहाँतक हो, कम-से-कम बोलो-आवश्यक होनेपर ही बोलो एवं उपर्युक्त दोषोंसे बचाकर ही शब्दोंका उच्चारण करो।

याद रखो—वाणीमें मधुरता तथा नम्रता अवश्य होनी चाहिये, पर दम्भ, झूठी खुशामद तथा कपट नहीं होने चाहिये। सरल वचन हों और मूर्खताभरे व्यर्थ भी न हों। जिनसे प्रेम, विश्वास, परस्परमें सुख पहुँचानेका भाव, सेवा-भाव, त्याग और आत्मीयता बढ़ते हों ऐसे वचन बोलो। पर व्यर्थकी ममता पैदा करके राग-द्वेष आते हों, ऐसे वचनोंसे भी सावधान रहो।

याद रखो—कभी दो आदमियोंके के बीचमें मत बोलो, उनके हितके लिये बोलना आवश्यक भी हो तो उसे नम्रतापूर्वक उनसे पूछकर बोलो। किसीकी बातको काटो मत। यदि उसका मत भ्रान्त हो तो उसके गुणोंकी सच्ची प्रशंसा करके उसे पहले अपना बनाओ फिर नम्रतासे उसके मतको दोष, उसके विचारार्थ उसे बताओ। तब वह सुनेगा और विचार करके अपने दोषोंको हटा भी सकेगा। नहीं तो तुम्हें विरोधी मानकर वह उस दोषको और भी अधिक जीवनसे चिपटा लेगा।

याद रखो—ऐसे विनोदकी, जो शुद्ध तथा हर्ष बढ़ानेवाला हो और सद्गुणोंकी उत्पत्ति करनेवाला हो, जीवनमें आवश्यकता भी है, पर ऐसा विनोद कभी मत करो, जो किसीका जी दुखानेवाला हो, किसीपर आक्षेपमूलक हो, किसीका अहित करनेवाला हो और अपनी मूर्खता प्रकट करनेवाला हो।

याद रखो—उस वाणीका विशेष आदर होता है जो हितकर और मधुर होनेके साथ ही शुभ तथा गम्भीर होती है, अच्छे विचारक लोग भी उसपर सोचते हैं। पर जो वाणी छिछोरेपनको लिये होती है, वह व्यर्थ जाती है। अतः गम्भीरतासे अर्थयुक्त थोड़े-से शुभ शब्दोंमें अपनी बात कहो।

याद रखो—वाणी विषयका संचार कर सकती है और वाणी ही सर्वत्र अमृतका विस्तार कर सकती है। वाणीसे सर्वत्र अमृतका विस्तार करो। जो वाणी सत्य, उत्साह तथा उल्लास बढ़ानेवाली निष्कपट, मधुर तथा हितकर होगी, जिससे दैवी गुणोंका भगवान्‌के पवित्र गुणानुवाद तथा नामका पवित्र मधुर सुधा-प्रवाह बहता होगा, वही वाणी सनातन दिव्य अमृतका विस्तार करेगी। अतएव सत्य, मधुर, हितकर, विनम्र, शुभ वाणी बोलो; वाणीको अनर्थ तथा व्यर्थ वचनोंके उच्चारणसे बचाकर उसे निरन्तर भगवन्नाम-जप, भगवन्नाम-कीर्तन, भगवद्गुण-कथनमें लगाये रखो। इसीमें वाणीका सदुपयोग है।

याद रखो—मौनमें बड़ी शक्ति है, अतएव प्रतिदिन कुछ समयतक नियमित रूपसे मौन रहो। सप्ताहमें या महीनमें एक दिनका मौन रखो और उस समयको सच्चिन्तन, आत्मचिन्तन या भगवच्चिन्तनमें ही लगाओ।

जीवनका एक-एक क्षण अमूल्य

याद रखो—तुम्हारे जीवनका एक-एक क्षण अमूल्य है और भगवत्-प्राप्तिका सुअवसर-रूप है। मरते समय भगवान्‌में मन रहेगा तो भगवान्‌की प्राप्ति होगी और नरकमें मन रहेगा तो नरककी। भोग-लालसा-युक्त भोग-स्मृति प्रकारकी चिन्ताओं और दुःखोंसे भरी है, अतएव नरकरूप ही है, इसलिये तुम निरन्तर भगवान्‌का स्मरण करनेका प्रयत्न करो और भोगका विस्मरण करो, पता नहीं किस क्षण तुम्हारी मृत्यु आ जायगी। मृत्युके समय तुम भगवान्‌का स्मरण करते होओगे तो निस्संदेह भगवान्‌की ही प्राप्ति होगी-तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा।

याद रखो—मनुष्य-जीवनकी विशेषता भगवच्चिन्तन-परायण रहकर भगवान्‌की सेवा करनमें ही है। भोगचिन्तन तो पशु-पक्षी सभी करते हैं। जो मनुष्य भगवच्चिनतन-परायण न रहकर भोगचिन्तन करता है, उसका सर्वनाश होता

है-पतन होता है और वह मनुष्य मानव-शरीरधारी होनेपर भी वास्तवमें पशुसे भी निकृष्ट है, क्योंकि भोगपरायण मनुष्यकी मृत्यु उसे बार-बार आसुरीयोनि एवं नरकोंकी प्राप्ति करानेवाली होती है; वह जिस पुण्यकी पूँजीको लेकर मानव-शरीरकी प्राप्तिका अधिकारी हुआ था, उस पुण्यपुन्जको समाप्त कर वह अपने दुष्कर्मोंके फलस्वरूप अध ोगतिमें जा रहा है।

याद रखो—पशु-पक्षी मनुष्येतर जीवोंकी मृत्यु होती हे। प्रगतिके लिये। वे पशु-पक्षी अपने जीवनमें अपने पूर्वकृत असत्कर्मोंका फल भोगकर उनसे मुक्त होकर आगे बढ़ते हैं, वहाँ मनुष्य-शरीरधारी जीव नये-नये असत्कर्म करके उनका संग्रह करके ले जाता है पुन: नारकीयोनि प्राप्त करके दु:ख भोगनेके लिये। अतएव वह अवनतिकी ओर जाता है।

याद रखो—मनुष्य बने हो तो मुनष्यताकी रक्षा करो, मनुष्यत्वका संवर्धन करो और मानव-जीवनके परम लक्ष्य परमात्माको प्राप्त करनेके लिये परमात्माकी सेवाकी भावनासे इन्द्रिय-मनको नियन्त्रणमें रखकर उनके द्वारा वे ही कर्म करो, जिनसे तुम्हारा मानव-जीवन सुरक्षित रहे और सफल हो।

याद रखो—तुम इन्द्रियोंके तथा मनके दास नहीं हो। तुम हो निर्विकार निरीक सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर इन सबके स्वामी। ये सब तुम्हें मिले हैं-तुम्हारी-तुम्हारे आत्मस्वरूप भगवान्‌की सेवाके लिये। तुम्हारे स्वामी बनकर तुमसे मनमानी सेवा लेनेके लिये नहीं। अतएव अपने स्वरूपको समझकर तुम अपने मनको तथा इन्द्रियोंको उनके मनमाने कार्योंमें न लगने देकर आत्मकल्याणके कार्यमें-भगवान्‌की सेवामें लगाओ। भगवान्‌में लगे हुए मन-इन्द्रिय तुम्हारे कल्याणके साधन बनेंगे और उच्छृखल भोगोंमें लगे हुए तुम्हारे पतन तथा सर्वनाशके

याद रखो—मानव-जीवन क्षणभंगुर है, प्रतिपलकी मृत्युकी प्रवाहमें तुम्हारा यह जीवन बहा जा रहा है। कब समाप्त हो जायगा, पता नहीं। इसलिये बड़ी सावधानीसे जीवनके एक-एक पलको भगवान्‌की सेवामें लगाओ। जरा भी प्रमादमें मत लगने दो।

याद रखो—तुम्हारा भविष्य तुम्हारे ही हाथामेंमें हैं, अपने कल्याणके तुम स्वयं ही साधन हो। बुरे संगसे बचे रहकर नित्य-निरन्तर सत्संग करो, सत्‌को बटोरो, सत्‌का चिन्तन करो, सत्कर्म करो और सत्‌को ही प्राप्त हो जाओ। वास्तवमें 'सत्' भगवान् ही हैं। भगवान्‌के सिवा सभी कुछ असत् है।

भोग और संग्रह-बड़ी भूल

याद रखो—तुम्हारे पास धन-सम्पत्ति, प्राणी-पदार्थ, शरीर-स्वास्थ्य, शक्ति-सामर्थ्य, योग्यता-उपयोगिता-जो कुछ भी है, सब भगवान्‌का है और है सब भगवान्‌की सेवाके लिये ही। भगवान्‌की सेवामें लगनेमें ही उसकी सार्थकता है। तुमको ईमानदार और कर्त्तव्यपरायण समझकर इसी कामके लिये ये सारी वस्तुएँ सौंपी गयी हैं। पर तुम यदि अवसर मिलनेपर भी इनको भगवान्‌की सेवामें नहीं लगाते और अपनी वस्तु मानकर अपने भोगमें ही लगाते हो अथवा केवल संग्रह करके रखते हो तो, तुम केवल भूल ही नहीं करते, अपने कर्त्तव्यसे च्युत होते हो और एक चोरका काम करते हो। इसका परिणाम यह होगा कि ये वस्तुएँ तो तुमसे छिन ही जायँगी; क्योंकि तुम्हारी हैं नहीं, एवं इस अपराधके कारण तुम दण्डके भागी बनोगे।

याद रखो—तुम यदि भगवान्‌की इन सारी वस्तुओंको भगवान्‌की मानते हो और यथासमय यथायोग्य भगवान्‌की

सेवामें लगाते हो तो, भगवान्‌की अपनी वस्तु होनेपर भी, सहज आदर्श शीलस्वभाव भगवान् उसे तुम्हारी दी हुई मानकर तुम्हारी ऋणी हो जाते हैं और बदलेमें अपना सुदुर्लभ प्रेम अथवा आत्मस्वरूपतक दान कर देते हैं।

याद रखो—भगवान्‌की वस्तु भगवान्‌की सेवामें समर्पण करते समय या कर देनेके बाद कभी यह मत मानो कि 'यह वस्तु मेरी थी, मैंने भगवान्‌की सेवामें समर्पण की हैं।' यह तो तुम्हारा सौभाग्य है कि भगवान्‌की वस्तु हमारे द्वारा भगवान्‌की सेवामें लगी; तुम्हें जिस कार्यके लिये वह सौंपी गयी थी, उसे उसी काममें लगानेका तुमको सुअवसर मिला।

याद रखो—जब तुम भगवान्‌की वस्तु ही भगवान्‌के अपर्ण कर रहे हो, तब इसमें तुम्हारे लिये अभिमान करनेकी कौन-सी बात है? अतएव तुम किसी भी वस्तुको भगवान्‌की सेवामें लगाकर कभी तनिक भी अभिमान मत करो, कभी उसका कोई बदला या फल मत चाहो और जिसको दी है उसपर जरा भी अहसान मत करो। जब भी कुछ सेवामे ं समर्पण करो तब अभिमान छोड़कर विन्रमताके साथ सम्मानपूर्वक करो। वरं भगवान्‌ने ही उसके रूपमें उस वस्तुको स्वीकार किया है, इसलिये उसके कृतज्ञ बनो।

याद रखो—संसारकी किसी वस्तुमें ममता करना-उसे 'मेरी' मानना ही बेईमानी है और सारे अनर्थका, पापका तथा बन्धनका मूल है। तुम्हारी है नहीं, तुम्हारी रहेगी नहीं। तुम्हें तो भगवान्‌ने दया करके केवल कर्त्तव्यपरायण बनाने, सेवापरायण बनाने तथा इसी निमित्तसे भगवान्‌की सेवा करके उनका प्रेम या स्वरूप प्राप्त करनेके सहज साधनके रूपमें दी है। तुम यदि उसपर ममता करते हो तो, मानव-जीवनकी इस परम सफलतासे वंचित तो रहते ही हो, ममताके कारण पापाचरण करके अपनेको अधोगति एवं नरकका भागी बनाते हो।

याद रखो—जिस वस्तुकी, जहाँ, जब, जिसको आवश्यकता है और तुम्हारे पास वह वस्तु है तो, यह समझो कि भगवान् वहाँ, उस समय, उस प्राणी-परिस्थितिके रूपमें तुमसे अपनी वह वस्तु माँग रहे हैं और उसे स्वीकार करके तुम्हें धन्य बनाना चाहते हैं। अतः परम प्रसन्नताके साथ विनयपूर्वक उनकी वस्तु देकर उन्हें अपनेको सौभाग्यशाली समझो। भगवान्‌की वस्तु भगवान्‌की सेवामें अर्पण करनेमें तुम केवल निमित्त बनो, कर्त्ता नहीं। ऐसा कर सको तो सर्वोत्तम है।

याद रखो—तुम्हारी अपनी वस्तु तो अपनी आत्मा अथवा भगवान्‌के सुर-मुनि-सेवित पवित्र चरणाविन्द ही है। अन्यत्र सर्वत्रसे सारी समता समेटकर उसे केवल उन्हींके चरणोंमें लगा दो। उन्हींको अपना समझो। वे तुम्हारे हैं, सदा तुम्हारे रहेंगे और उनको पाकर तुम सदाके लिये संसारमें समता प्राप्त कर लोगे, सारे बन्धनोंसे मुक्त और कृतार्थ होकर परमानन्दरूप बन जाओगे।

अखण्ड, पूर्ण और नित्य सुख

याद रखो—संसारमें सुख सभी चाहते हैं, परंतु किसीको पूर्ण अखण्ड स्थायी सुख नहीं मिलता। सुखके लिये भटकते-भटकते जीवन बीत जाता है और सुख आगे-से-आगे सरकता जाता है। इसका कारण यही है कि मनुष्य जिन प्राकृतिक वस्तुओंसे सुख चाहता है, उनमें वह पूर्ण अखण्ड स्थायी सुख है ही नहीं। अतएव यदि तुम सुख चाहते हो तो पूर्ण अखण्ड नित्य सत्य सुखस्वरूप भगवान्‌को भजो।

याद रखो—किसीको कोई वस्तु वहींसे मिलेगी, जहाँ वह होगी। हम बालूमेंसे तेल निकलाना चाहें या जलमेंसे घी निकालना चाहें तो निराश ही होंगे, क्योंकि न बालूमें तेल हैं और न जलमें घी है। तेलके लिए तिल-सरसों आदि तिलहन पदार्थोंकी और घीके लिये दूध की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार पूर्ण, अखण्ड और नित्य सुख एकमात्र भगवान्‌में

ही हैं; वे ही अनन्त सुखसागर हैं, अतएव यदि तुम सुख चाहते हो तो उस भगवान्‌को भजो।

याद रखो—भगवान्‌को भजनेका अर्थ यह है कि जिस प्रकार भोगोंकी इच्छासे तुमने भोगोंको आत्मसमर्पण कर रखा है, उसी प्रकार भगवान्‌को आत्मसमर्पण करो। भोगोंमें जैसी सहज स्वाभाविक प्रीति है, वैसी ही सहज स्वाभाविक प्रीति भगवान्‌में करो।

याद रखो—भगवान्‌के समान अकारण प्रीति करनेवाला सुहृद, भली-बुरी सभी परिस्थितियोंमें आश्रय देकर अभय करनेवाला दयालु और कोई भी नहीं है। भगवान् सुहृद् होनेके साथ ही सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ भी हैं। उनके प्रति आत्मसमर्पण करनेपर उनके प्रत्येक विधानमें उनकी परम मंगलमयताके दर्शन होंगे, उनका दिव्य स्पर्श प्राप्त होगा और इससे सारे दु:खोंका अवसान हो जायगा।

याद रखो—दु:ख-सुख किसी भी परिस्थितिमें, प्राणीमें या पदार्थमें नहीं हैं; वे हैं हमारे मनकी प्रतिकूल और अनुकूल भावनामें। हम जहाँ प्रतिकूलता पाते हैं, वहीं दु:खी हो जाते हैं और जहाँ अनुकूलता देखते हैं, वहाँ सुखका अनुभव करते हैं। ये दु:ख-सुख प्रतिकूलता-अनुकूलताकी कमी-बेशीके साथ ही घटते-बढ़ते हैं और प्रतिकूलता-अनुकूलता भाव बदल जाने या न रहनेपर ये बदल जाते या नष्ट हो जाते हैं। आज जो वस्तु तुम्हें प्रतिकूल भाव होनेके कारण दु:खदायिनी दीखती हैं वे ही कल अनुकूल भाव होनेपर सुख देनेवाली बन जायँगी।

याद रखो—श्रीभगवान्‌के प्रति आत्मसमर्पण करनेपर तुम्हें सर्वत्र भगवान्‌की मंगलमयी, आनन्दमयी कृपाके दर्शन होंगे, उनके प्रत्येक विधानमें-जो फलरूपमें तुम्हें प्राप्त होता है-मंगलमयताके कारण अनुकूलता के दर्शन होंगे। प्रतिकूलता कहीं रहेगी ही नहीं और तुम हर हालतमें सुखी-परम सुखी हो जाओगे।

याद रखो—जगत् द्वन्द्वमय है। सुख-दु:ख, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, प्रिय अप्रिय, शुभ-अशुभ आदि परस्पर-विरोधी दो भावोंसे परिपूर्ण धारणा ही जगत् है। भगवान् एक हैं, सम हैं, सारे द्वन्द्वोंमें वे एक ही पूर्ण हैं, सारे द्वन्द्व उन्हींके आधारपर कल्पित हैं और सारे द्वन्द्वोंमें उन्हींका आत्मप्रकाश है या सारे द्वन्द्व उन्हींकी माया अथवा लीला हैं। हैं एकमात्र वे ही। अतएव उन्हें आत्मसमर्पण करनेपर इन द्वन्द्वोंके स्थानपर भगवान् या भगवान्‌की अभिन्नस्वरूपता लीला के दर्शन होंगे। सुख-दु:ख दोनोंका ही सर्वथा अभाव हो जाएगा और तुम उस आत्यन्तिक सुखको-जो द्वन्द्वातीत और भगवत्स्वरूप है-प्राप्त हो जाओगे। तुम्हारा नित्य सुख चाहते हो तो सर्वात्मना भगवान्‌को ही भजो।

सर्वत्र परमात्मा प्राप्त हैं

याद रखो—जो सदा सर्वत्र एकमात्र परमात्माको ही व्याप्त देखता है और जगत्‌में होनेवाली प्रत्येक छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी घटनाको परमात्माका ही लीला-विलास या परमात्माका ही प्रकाश समझता है, वह जगत्‌के द्वन्द्वोंसे कभी प्रभावित नहीं होता। जगत्‌में दिखायी देनेवाले सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, प्रिय-अप्रिय, शुभ-अशुभ, स्तुति-निन्दा, आदिमें उसे अनुकूलता-प्रतिकूलताकी अनुभूति नहीं होगी, उनमें राग-द्वेष नहीं होता; वह समभावसे केवल परमात्माका ही सर्वत्र सदा अनुभव करता है।

याद रखो—परमात्मा एक है, अनन्त है, महान् है। वह सदा सर्वत्र व्याप्त है। ये सारे उसीके आविर्भाव हैं; वस्तुत: सर्वत्र सदा वही वह है। उसके सिवा अन्य किसीका भी कोई अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार जानना ही वास्तविक जानना

है और जो ऐसा जान लेता है, इस परम सत्यमें परिनिष्ठित हो जाता है, वह सदा ही मोह-भय-विषादसे मुक्त रहता है।

याद रखो—इस विक्षुब्ध, परिवर्तनशील, अनित्य, असत् प्रपञ्चरूपमें सदा शान्त, सम, नित्य सत्य परमात्मा ही अभिव्यक्त है। महासागरकी अनन्त तरंगे जैसे प्रशान्त महासागर ही हैं, उसी प्रकार यह सब परमात्माका ही स्वरूप है। तरंगोंका स्वभाव ही है उठना-मिटना, इससे न तो महासागरकी शान्तिमें कोई बाधा पड़ती है, न उसके स्वरूपमें ही कोई परिवर्तन होता है। इसी प्रकार परमात्मामें दीखनेवाला यह परिवर्तनशील प्रपंच परमात्मस्वरूपकी सत्ता, चेतनता, आनन्दमयता, समता और एकतामें कोई भी परिवर्तन नहीं लाता। इस तत्त्वका अनुभव करना ही परमात्माके स्वरूपको जानना है।

याद रखो—जो परमात्माके इस स्वरूपको जान लेता है, वह स्वयं परमात्मस्वरूप ही हो जाता है; क्योंकि वहाँ परमात्माके अतिरिक्त अन्य किसी सत्ताकी कल्पना ही नहीं रह जाती।

याद रखो—इस प्रकार परमात्माको जाननेवाले तथा परमात्मामें स्थित पुरुषके व्यवहार-कालमें सब कार्य होते दीखनेपर भी वह हर्ष-उद्वेगसे सदा मुक्त रहता है। व्यवहार-जगत्में उसके द्वारा सारे कार्य होते दीखते हैं अथवा उसके व्यवहारमें राग-ममता आदिकी कल्पना भी होती है, पर वह वस्तुत: सर्वथा रागरहित, ममतारहित होता है, इससे उसके द्वारा होते दिखायी देनेवाले कार्य भी राग और ममतासे रहित होते हैं। व्यवहारमें उसके द्वारा नाटकके पात्रके अभिनयकी भाँति यथायोग्य सारे आचरण होते है। यथासमय उसमें विभिन्न रसोंकी चेष्टाएँ देखी जाती हैं, पर वह सब उसका खेल होता है, लीलामात्र होती है और वह खेल, वह सारी लीला उस खिलाड़ी-लीला करनेवाले अभिनेताकी ही अभिव्यक्ति होती है। वस्तुत: खेलनेवाला ही खेल बनता है। दर्शक उसके अभिनयको देखकर भयभीत, चकित, हर्षित, क्षुब्ध, शान्त, अशान्त होते हैं, पर वह सदा स्वरूपस्थित निर्विकार रहता है, इसी प्रकार वह परमात्माके तत्त्वको जाननेवाला परमात्मामें स्थित पुरुष भी नित्य स्वरूपस्थित शान्त रहता है।

याद रखो—परमात्मज्ञानी यदि प्रवृत्तिमय व्यवहार-जगत्में है तो उसके द्वारा विभिन्न क्रियाएँ होती देखी जाती है, पर वे सारी क्रियाएँ स्वाभाविक ही सर्वहित है, सर्वकल्याण करनेवाली हैं। उसके द्वारा उसी प्रकार किसीका कभी कल्याण नहीं होता जैसे अमृतके द्वारा कोई मरता नहीं।

याद रखो—व्यवहार-जगत्में ऐसे महापुरुषका अस्तित्व जगत्का-जगत्के समस्त प्राणियोंका परम कल्याण करनेवाला होता है, वह सबका पर्थप्रदर्शक होकर सभीको परमात्माके स्वरूपकी उपलब्धि करानेमें सहायता करता है। वह स्वयं तो मुक्त होता ही है, अन्य अनेकोंकी मुक्तिका निमित्त बनता है।

भगवान् परम सुहृद्

याद रखो—सर्वशक्तिमान्, सर्वेश्वर भगवान् तुम्हारे परम सुहृद् है, वे सदैव सर्वत्र स्वयं तुम्हारी सहायताके रूपमें प्रस्तुत हैं। जब कभी तुम्हें मनमें निराशा हो, तुम अपनेको असहाया, निराश्रय, सबके द्वारा उपेक्षित और अकेले समझने लगो-तभी विश्वासपूर्वक उन अपने भगवान्को पुकारो। वे तुरंत तुम्हारी सहायताके लिये तुम्हारे पास आ खड़े होंगे।

याद रखो—भगवान्के लिये न तो कोई जीव छोटा-बड़ा है और न कोई काम ही छोटा-बड़ा है। वे सबके सबसे अधिक निकटस्थ आत्मीय हैं-अपने हैं। न तो छोटे-से-छोटा बनकर छोटा काम करनमें उन्हें लज्ला-संकोच है और न वे दूसरोंके लिये असम्भव है, महान्-से-महान् विशाल अत्यन्त कठिन कार्य सम्पन्न करनेमें असमर्थ हैं। तुम अपनेको

उन पर छोड़ दो–केवल उन्हींपर छोड़ दो, वे तुम्हारे सारे अभावोंकी पूर्ति कर देंगे या अभावकी अनुभूति ही पूर्णरूपसे समाप्त कर देंगे। तुम परम सुखी हो जाओगे।

याद रखो—भगवान्‌के लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। वे सर्वभावेन समर्थ हैं और '**कर्तुमकुर्तमन्यथाकर्तुं समर्थः**' हैं। तुम अडिग तथा पूर्ण विश्वासके साथ अपनेको सर्वतोभावेन उनपर छोड़ दो। तुम्हारे मार्गके सारे अवरोध दूर हो जायँगे, सारे बड़े–से–बड़े विघ्न हट जायँगे, सारी कठिनाइयोंके किले अनायास ही टूट जायँगे। तुम्हें पाथेययुक्त तथा सच्चे प्रिय संगीके सहित प्रशस्त पथ मिल जायगा और तुम बिना ही परिश्रमके सुखपूर्वक हँसते–हँसते अपने लक्ष्यपर पहुँच जाओगे।

याद रखो—भगवान् तुम्हारी प्रत्येक परिस्थितिमें और तुम्हारी प्रत्येक यथार्थ आवश्यकताके समय तुम्हारे सहज सहायक हैं। जब तुम दूसरे सारे आश्रयोंका त्याग करके उनके सौहार्दकी ओर दृष्टिपात करोगे और अपना सारा योगक्षेम उन्हींको मान लोगे–यदि सचमुच तुम ऐसा कर सकोगे–तो तुम देखोगे कि तुम्हारा हृदय अकस्मात् हरा हो गया है, ऊँचा उठ गया है, तुम्हारी निराशा नष्ट हो गयी है, तुम्हें प्रत्यक्ष सहायता मिलने लगी है, तुम्हारे साथ एक कभी न हटनेवाला कभी साथ न छोड़नेवाला मित्र आ खड़ा हुआ है। तुम उपेक्षित नहीं हो–बड़ी प्रीतिके साथ समादरपूर्वक तुम्हारी देख–रेख की जा रही है और एक कोई वरद–हस्त सदा–सर्वदा तुम्हें अभयदान ने रहा है।

याद रखो—तुम भगवान्‌पर विश्वासपूर्वक पूर्ण निर्भर नहीं करते, उनके नित्य अपनेपनपर दृढ़ विश्वास नहीं करते, उनकी सुधामयी, शक्तिमयी सहज कृपाकी ओर दृष्टिपात नहीं करते–इसीसे अपने को असहाय, निराश्रय और निराश पाते हो़ इसीसे भय, चिन्ता और विषादके बादलोंसे घिरे रहते हो। इसी संदेहभरी डावाँडोल स्थितिसे अपनेको अलग कर लो, फिर देखोगे–तुम्हारी प्रत्येक यथार्थ आवश्यकताके समय सर्वदाता भगवान् तुम्हारे सहायकके रूपमें खड़ेहैं।

याद रखो—भगवान् तुम्हारे हैं, तुम भगवान्‌के हो। इस नित्य सत्य अचल स्थितिको भूलकर ही तुम संशय–सागरके नये–नये दु:खोंकी तरंगोंके आघातसे घायल हो रहे हो। यह मिथ्या स्थिति है। भगवान्‌पर विश्वास करो–पूर्ण विश्वास करो। यह असत् संशय–सागर तुरंत सूख जायगा और तुम अपनेको भगवान्‌की सत्य–नित्य–सुखद गोदमें पाओगे।

सभी प्राकृतिक पदार्थ अनित्य और अपूर्ण

याद रखो—जिसका जन्म हुआ है, जो कभी बना है–वह मरेगा ही, उसका नाश होगा ही। संसारमें कोई ऐसा प्राणी नहीं है, जो जन्म लेकर न मरा हो या न मरता हो। अपने–अपने प्रारब्धानुसार कोई संसारके भोगपदार्थोंसे घिरा हुआ, उनके लिये रोता हुआ मरता है, तो कोई भोगदार्थोंके अभावमें रोता हुआ मरता है। संसारमें जो कुछ है–सभी प्राकृतिक होनेके कारण अनित्य और अपूर्ण है।

याद रखो—संसारमें जब मरना ही है, तब ऐसी मौत करना चाहिये, जिस मौतका परिणाम फिर मौतके पंजेमें न पड़ना हो। यह तभी सम्भव है, जब इस स्थूल संसारमें पुन: पांचभौतिक शरीरके रूपमें जन्म न हो।

याद रखो—संसारमें स्थूल जन्म उसीका नहीं होता, जो कर्मबन्धनसे छूट जाता है, जो मायासे मुक्त हो जाता है। इसी कर्मबन्धनसे छूटनेके तरीकोंका नाम ही परमार्थ–साधन है, जो एक लक्ष्यपर अपनी–अपनी दिशाओंसे जानेवालोंके लिये विभिन्न मार्गोंकी भाँति अनेक हैं। उन्हींकी विभिन्न व्याख्याएँ शास्त्रोंमें संतोंकी अनुभवपूर्ण वाणियोंमें हैं।

याद रखो—इन विभिन्न साधनोंमें नीचे लिखे साधन यथोयोग्य, यथारूचि, यथाधिकार करनेयोग्य हैं–

1 – कामना, स्पृहा, ममता और अहंताका त्याग।

2 – ममताका एवं अहंताका भगवान्‌के अर्पण अर्थात् एकमात्र भगवान्‌को ही मेरा मानना और अपनेको एकमात्र भगवान्‌का ही मानना है।

3 – भगवान्‌के अनन्य शरणागत होकर भगवान्‌की सेवामें-भजनमें लगना।

4 – भगवान्‌का सर्वकालमें सदा-सर्वदा स्मरण करते रहना, मन-बुद्धि भगवान्‌के अर्पण कर रखना।

5 – जीवनका अपना प्रत्येक कार्य भगवान्‌की पूजा की भावनासे करना।

6 – सबसे सदा भगवान्‌को देखते हुए सबका हितपूर्ण सुख-साधन करना।

7 – निरन्तर अखण्डरूपसे भगवान्‌का नाम-स्मरण करना।

8 – ज्ञानके प्रकाशद्वारा जगत्‌को सर्वथा मायामय-असत् समझना।

9 – भगवान्‌की कृपापर सर्वथा विश्वासपूर्वक निर्भर करते हुए प्रत्येक फलमें भगवान्‌की कृपाका अनुभव करना।

10 – भगवान्‌की प्राप्तिके लिये परम एवं एकान्त व्याकुल होना।

11 – भोग-मोक्ष सबकी वाञ्छाका त्याग करके भगवान्‌से ही अनन्य प्रेम करना।

याद रखो—ये सब ऐसे साधन हैं, जिनमेंसे अधिकांशका पालन मन होनेपर प्राय: सभी कर सकते हैं। भगवान् या परमात्मा ही अपना स्वरूप है, इसिलये उनकी प्राप्ति कठिन नहीं है, बहुत सहज है; इच्छाकी तीव्रता और अनन्यता आवश्यक है। सच तो यह है कि ये ग्यारह सीढ़ियाँ हैं, तो मानव-जीवनकी चरम सफलताके शिखर भगवत्प्राप्ति-भगवत्प्रेमकी प्राप्ति तक पहुँचा देती हैं।

याद रखो—इन साधनोंमें न लगकर जो केवल भोगकामनाकी पूर्ति तथा भोगोंके उपार्जनमें ही लगे रहते हैं, वे यहाँ अशान्ति, चिन्ता, भय, विषाद, दु:ख तथा क्लेशसे पूर्ण जीवन बिताते हुए मर जाते हैं और फिर जन्म-मृत्युके चक्रमें ही पड़े रहते हैं, जो मानव जीवनकी सबसे बडत्री असफलता है।

ब्रह्म, परमात्मा और भगवान्-एक हैं

याद रखो—भगवान् एक हैं। वही ब्रह्म हैं, वही परमात्मा हैं, वही भगवान् हैं। तत्त्वत: एक होनेपर भी उनकी साध नामें भेद है। अद्वैतज्ञानससे ब्रह्मकी प्राप्ति होती है। योगसे परमात्मा मिलते हैं। भक्तिसे भगवान् मिलते हैं। पर जिनको 'प्रियतम' रूपसे भगवान्‌को प्राप्त करना है, उनके लिये एकमात्र प्रेम ही परम साधन है।

याद रखो—ज्ञानके साधनमें नित्यानित्य वस्तुका विचार, वैराग्य, शम-दम-तितिक्षा-उपरति-श्रद्धा-समाधानरूप षट् सम्पत्ति और मोक्षकी तीव्र इच्छा आवश्यकता है। तदनन्तर श्रवण, मनन, निदिध्यासनादिसे उदित ब्रह्माकारवृत्तिके द्वारा प्रपंञ्चका परिहार करके ब्रह्ममें स्थिति प्राप्त करना होता है। परमात्माकी प्राप्तिमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि, इस अष्टाङ्गयोगकी साधना आवश्यक है। भगवान्‌की प्राप्तिमें भगवद्गुणानुवादका श्रवण-कीर्तन, भगवान्‌के निर्मल चरित्रोंका चिन्तन, भगवान्‌के पवित्र नामोंका जप-कीर्तन, नवधा भक्तिके साथ ही

सत्संग, भजन एवं भगवान्‌के दर्शनकी तीव्र एवं अनन्य इच्छा परम साधन है और 'प्रियतम' रूपसे भगवान्‌की प्राप्ति में भजन आदिके साथ ही त्यागप्रसूत और त्यागपूत 'प्रेम' परमावश्यक साधन है।

याद रखो—प्रेमकी मूल भित्ति त्याग है। त्यागके बिना प्रेमका प्रादुर्भाव नहीं होता। किसी वस्तु, पदार्थ, परिस्थिति, आश्रम या कर्मका त्याग आवश्यक नहीं है। त्याग होना चाहिये, स्व-सुख इच्छाका। इहलोक, परलोक तथा दिव्य लोकादिके भोग-सुखोंकी ही नहीं, मोक्ष-सुखकी इच्छाका लेश भी प्रेममें बाधक है। जिसमें केवल प्रियतमके सुखकी ही एकमात्र सहज अभिलाष्ज्ञा और चेष्टा है, अन्य किसी प्रकारकी किसी भी वासनाकी कल्पना भी नहीं है। इस प्रकार लोक-परलोकके भोग तथा कैलल्य मोक्षकी वासनासे शून्य प्रियतमके सुखार्थ समस्त भोगत्यागका उपभोग ही प्रेम है। यह प्रेम हृदयकी वस्तु होता है, बाहर दिखानेकी नहीं। यह गुणरहित, कामनारहित, नित्य, अविच्छिन्न, सूक्ष्मतर, अनुभवरूप और क्षण-क्षणमें उत्तरोत्तर बढ़नेवाला होता है। इस प्रेम-समुद्रमें मधुरतम भावोंकी अनन्त विचिन्त सरल-वक्र तरंगे उछलती रहती हैं। प्रेमास्पद प्रियतमका सुख-साधन ही उन सारी तरंगोंका मूल कारण और प्रेम उद्देश्य रहता है।

याद रखो—यह प्रेम परम दुर्लभ है, परंतु प्रेमीजनोंकी कृपासे अति सुलभ भी है। प्रेमीजन वे ही हैं, जो भुक्ति-मुक्तिकी अभिलाषा त्याग करके प्रियतम यन्त्रीके हाथके खिलौने बने उनके इच्छानुसार क्रीड़ा कर रहे हैं। जिनमें अपने लिये स्मृति ही नहीं रह गयी है, ऐसे प्रेमीजनोंकी परम त्यागपूर्ण परम भावमयी एवं परमपावन रस-साधनाका अनुसरण करनेसे।

याद रखो—प्रेमीके प्रियतम भगवान् सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा होते हुए भी प्रेमीके लिये नित्य-सत्य-परमानन्द-सौन्दर्य-माधुर्य-निधि, अचिन्त्यानन्त-अनिर्वचनीय दिव्य परस्परविरुद्ध गुणधर्माश्रयस्वरूप नित्य-निरन्तर प्रेमरसास्वादन करने तथा करानेमें प्रवृत्त रहते हैं। सर्वलोकमहेश्वर सर्वतन्त्रस्वरूप होते हुए भी प्रेमीके लिये प्रेमाधीन रहते हैं और प्रेमीजनको अपना प्रेमास्पद बना लेते हैं।

जगत् अभावरूप है

याद रखो—जगत्‌में सीाी अभावग्रस्त हैं। जगत्‌के प्राणी पदार्थोंकी प्राप्तिसे अभावकी पूर्ति नहीं होती, वरं अभावोंकी संख्या बढ़ती है। अतएव जो जगत्‌के पदार्थोंसे अभावोंकी पूर्ति चाहता और उनकी प्राप्तिके लिये सतत प्रयत्न करता है, उसे सदा निराशा ही मिलती है।

याद रखो—प्रकृति अभावमयी है, परमात्मा भावरूप हैं। अत: जो जागतिक भावोंकी पूर्ति न चाहकर परमात्माको प्राप्त करना चाहते हैं, वे सदा भावयुक्त होते चले जाते हैं और सहज ही अभावोंकी ज्वालासे छुटकारा पाते रहते हैं।

याद रखो—जिसके पास संसारके पदार्थोंका नितान्त अभाव है, जो धन, जन, मान, मकान आदिसे सर्वथा रहित है, पर जिसके मनमें भगवान् बसे हैं, वह सर्वथा-सर्वदा भावमय है और परम सुखी है। इसके विपरीत जो विपुल धन, जन, मान-वैभवका स्वामी है, इहलोक और परलोके भोगोंसे सम्पन्न है, देवराज इन्द्रके पदको प्राप्त है; पर जो भगवान्‌को भूला हुआ है, वह सदा अभावग्रस्त है। अत: परम दु:खी है। वह इन्द्रियोंके सारे भोग-सुखोंके प्रचुर मात्रामें होनेपर भी नित्य जलता रहता है। उसे कभी शान्ति मिल ही नहीं सकती; क्योंकि उसके पास जो कुछ है, सभी अपूर्ण, अनित्य और विनाशी है।

याद रखो—मनुष्यकी अशान्ति, चिन्ता, दु:ख और उस द्वारा होनेवाले पापोंमें मुख्य हेतु है संसारके

प्राणी-पदार्थोंकी-भोगोंकी कामना ही है। भोगोंकी कामना इसलिये है कि मनुष्य भूलसे भोगोंके द्वारा अभावकी ज्वालासे मुक्त होना चाहता है। इसीलिये वह नित्य नये प्रयत्नमें, नित्य नयी भोगलिप्सा और उसकी पूर्तिके साधन जुटानेमें ही अपना जीवन व्यतीत करता रहता है। इसीसे वह इच्छित वस्तुके प्राप्त होनेपर लोभ और अभिमानके वश होता है। एवं इच्छित वस्तुकी प्राप्ति न होनेपर क्रोध और क्षोभके द्वारा आक्रान्त होता है। फलत: उसका जीवन कष्टमय, हिंसामय और दु:खमय हो जाता है और वह इस प्रकार दिन-रात चिन्तानलमें जलता हुआ मर जाता है, इससे केवल मानव-जीवन व्यर्थ ही नहीं होता, नये-नये पापोंके संचयसे उसका भविष्य अन्धकारमय तथा दु:खमय होता है। जन्मान्तरमें उसे आसुरी-पापयोनियोंकी और नरकोंकी पीड़ा भोगनी पड़ती है।

याद रखो—मानव-शरीर भोग-देह नहीं है, यह मिला है आध्यात्मिक साधना और उसके फलस्वरूप भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिये। मानव-जीवनका यही एकमात्र परम और चरम उद्देश्य है। इसको भूलकर जो लोग केवल भोग-अर्जन और भोग-सेवनमें लगे रहते हैं, वे कामोपभोगपरायण आसुर-मानव अपनी तो हत्या करते ही हैं, दूसरोंको भी अपने आचरणोंके द्वारा आत्महत्यामें लगाकर नरकोंमें ढकेलते हैं।

याद रखो—तुम्हारे सच्चे हितैशी, बन्धु, आत्मीय, प्रिय, श्रेष्ठ वे ही हैं, जो तुम्हारे मनको भोगोंसे हटाकर भगवान्‌में लगाते हैं, विषयोंके प्रलोभनसे मुक्त करके भगवान्‌के चरणोंमें तुम्हारी आसक्ति बढ़ाते हैं। भोगोंमें लगाकर राग-द्वेष बढ़ानेवाले लोग, चाहे वे घरके हों, बाहरके हों, नेता हों, अधिकारी हों, मिनिस्टर हों, गवर्नर हों, आचार्य हों, साधु हों, महात्मा हों, भक्त हों या अपनेको तुम्हारा परम आत्मीय बतानेवाले हों, वस्तुत: तुम्हारे हितैषी नहीं। वास्तविक अपने नहीं हैं। वे स्वयं भूले हुए हैं और तुम्हें भी भूलमें डाल रहे हैं। उनसे सावधान रहो।

हर क्षेत्रमें भला बनना चाहिये

याद रखो—जो भला बनना नहीं चाहता, पर भला कहलाना चाहता है, वह तो स्वयं अपनेको धोखा देता ही है, पर जो किसी अंशमें भला बनकर उसका अभिमान करता है, वह भी हानि ही उठाता है।

याद रखो—मनुष्यको हर क्षेत्रमें भला बननेकी निरन्तर चेष्टा करनी चाहिये, परंतु भलाईका अभिमान कभी नहीं करना चाहिये। अभिमान आते ही उससे कई बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं। अभिमान दूसरोंका अपमान-तिरस्कार करता है। अभिमानीमें लोग बुराई ढूँढकर उसके अभिमानको मिटाना चाहते हैं, इससे परस्पर कलह-द्वेष होता है और मनुष्यकी भले बननेकी साधना परस्परके द्वेष-साधनमें परिणत हो जाती है।

याद रखो—सदा सत्यका सेवन करना बहुत अच्छा है, करना ही चाहिये। परंतु 'मैं कभी झूठ नहीं बोलता, मैं कभी असत्य बोला ही नहीं' ऐसा अभिमानभरी बात नहीं करनी चाहिये। मैं कभी असत्य बोला ही नहीं-विचार करके देखनेपर पता लगेगा कि इससे भी असत्य है। सावधान रहते-रहते भी भूलसे कभी-कभी असत्य बोला ही जाता है। भगवान्‌की कृपासे सत्यका पालन करते हुए भगवत्कृपाको ही श्रेय देना चाहिये।

याद रखो—जो मनुष्य अभिमानसे यह कहता है कि मुझसे कभी भूल होती ही नहीं, वह बहुत बड़ी-बड़ी भूलें किया करते है। जो कहता है कि मुझे कभी क्षोभ होता ही नहीं, वह बहुत जल्दी क्षुब्ध हो जाया करता है। अपनी कमजोरियोंके लिये भगवान्‌से बल माँगते हुए प्रयत्नशील रहना चाहिये, जिससे मन क्षुब्ध न हो।

याद रखो—जिन लोगोंके दोष बतानेवाले कम और प्रशंसा करनेवाले अधिक होते हैं, उनको बहुत जल्दी क्षोभ

होता है; क्योंकि वे आलोचना सुननेके अभ्यस्त ही नहीं है। ऐसी स्थितिमें क्षोभके आवेशमें ऐसी बातें बोली जाती हैं, जिनको विचार आनेपर वे स्वयं अच्छी नहीं समझते और फिर अपनी दुर्बलताको छिपालनेके लिये उनको नयी-नयी बातें गढ़कर मिथ्याका आश्रय लेना पड़ता है।

याद रखो—मनुष्यकी इन्द्रियाँ बहिर्मुखी हैं, मन संसारकी मायासे ग्रस्त है, सदा ध्यान रखनेवालोंसे भी भूल हो जाती हैं। अतएव मनुष्यको कभी यह मानकर निश्चिन्त नहीं हो जाना चाहिये कि मेरे जीवनसे सारे दोष-दुर्विचार सर्वथा निकल गये हैं और न कभी अभिमान ही करना चाहिये। वंर भगवान्के सामने सदा विनम्र रहते हुए अपने जरा-से दोषके लिये भी पश्चाताप करना तथा अपनेको दोषी मानना चाहिये। भगवद्विश्वासी मनुष्य जितना ही अपनेको दोष-दुर्बल और साधनहीन मानता है, उतना ही वह परम करुणा-सागर भगवान्का अधिक आश्रय प्राप्त करता है एवं उतनी ही उसके दोषोंकी समाप्ति होती हैं।

याद रखो—स्वयं भगवान् भी अभिमानीके साथ द्वेषीका-सा बर्ताव करके उसके अभिमानको मिटाकर उसे पवित्र जीवन बनाना चाहते हैं। इसीसे भगवान्को दैन्य प्रिय है।

याद रखो—भगवान्का अनुयायी, उनका प्रेमी, उनपर विश्वास करनेवाला सदा ही विनम्र और अभिमानशून्य होता है। वह अपनेको सर्वथा निर्बल देखता है और भगवान्के अपार अपरिसीम बलका आश्रय ग्रहण कर उस बलसे तमाम दोषोंको नष्ट करनेमें समर्थ होता है।

याद रखो—अभिमान भगवान्से दूर करता है और दैन्य भगवान्के चरणोंमें पहुँचा देता है।

सदा शुभ तथा मंगल-चिन्तन

याद रखो—हमारे सोचने या करनेसे दूसरे किसीका अमंगल नहीं हो सकता। अमंगलरूपी फल मिलता है अपने पूर्वकृत कर्मोंके परिणाम-स्वरूप। इस स्थितिमें हम जब किसीका अमंगल सोचते-करते हैं तो हम अपना ही अमंगल करते हैं। हमारा चित्त जब किसी भी दूसरेके प्रति द्वेष रखता है और उसका अमंगल सोचता है तो उसका प्रभाव हमारे ही जीवनपर पड़ता है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही अपनेको बनाते जाते हैं।

याद रखो—भगवान्के राज्यमें अनेक प्रकारके मङ्गल हैं और भगवान्ने हमको मंगलमयविचार रखनेकी विचित्र शक्ति भी दी है। हम यदि उस शक्तिका सदुपयोग करें तो उससे हमारा तो सुख-आनन्द बढ़ेगा ही, हम दूसरे लोगोंमें भी सुख-आनन्दकी वृद्धिमें हेतु बनेंगे।

याद रखो—जब हम दूसरोंका भला सोचते-करते हैं, तब अपना ही भला करते हैं। भला सोचते-सोचते भला करनेकी प्रवृत्ति बढ़ती है। फिर भला करना ही स्वभाव बन जाता है और जब हम दूसरोंका भला करते हैं तो उनपर बहुत ही सुन्दर प्रभाव पड़ता है। वे भी बदलेंमें हमारा भला सोचने-करने लगते हैं। इस प्रकार परस्पर एक-दूसरेका भला सोचने-करनेसे सहज ही सबका भला होता है। हम भलेके प्रसार-विस्तारके पुण्यकार्यका सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

याद रखो—भगवान्की दी हुईभला करनेकी शक्ति और समयका जो समयपर पूर्णरूपसे उपयोग करते हैं, उनकी शक्ति और भी बढ़ती है; परंतु जो समयपर शक्तिका सदुपयोग नहीं करते, उनको पछताना ही पड़ता है। शक्ति क्षीण होते-होते नष्ट हो जाती है। अतएव प्राप्त अवसरको खोओ मत, भले कामको कलपर मत रखो। उसे अभी कर लो और करो यथासाध्य पूरे मनसे, यथायोग्य पूरी शक्ति लगाकर। तुम्हें भगवान्की कृपा प्राप्त होगी। तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी

और तुम जगत्‌का कल्याण करनेवाले भगवान्‌के हाथके एक महान् यन्त्र बनकर अपनेको धन्य कर सकोगे।

याद रखो—हम दूसरोंसे सदा यही चाहते और आशा रखते हैं कि सब लोग हमारा भला करें। हमें सुख पहुँचावे, हमारा अहित कोई भी न करे। बस, तुम जो चाहते हो, वही दूसरोंके साथ करना आरम्भ कर दो। तुम्हारी की हुई भलाई अनन्तगुनी होकर तुम्हारे पास वैसे ही लौट जायेगी, जैसे खेतमें थोड़ेसे बीज बोलनेवालाको अनन्तगुना होकर अनाज प्राप्त होता है।

याद रखो—जो अपना सुख, मंगल, हित चाहता है, पर दूसरोंका नहीं चाहता, पर दूसरोंको दु:ख पहुँचाता, उनका अमंगल एवं अहित चाहता है, उसको कभी भी सुख, मंगल, हित प्राप्त नहीं हो सकता। वह एक बार मोहवश भले ही अपनेको ही सुखी मान ले, पर वह सुखी कभी हो नहीं सकता। दूसरोंका अमंगल चाहतना, अपना ही अमंगल करना है। यह ध्रुव निश्चय है, परम सत्य सिद्धान्त है।

याद रखो—तुम बुरी बात सोचनेके लिये आये ही नहीं हो, भगवान्‌ने तुमको मनुष्य-शरीर दिया है सबका सदा मंगल सोचते-करते ही अपना मंगल करनेके लिये और अन्तमें परम मंगलमय भगवान्‌की मंगलमयी प्राप्ति करनेके लिये। यही मानवके नाते तुम्हारे जीवनका लक्ष्य है और इस महान् लक्ष्यकी ओर सावधानीके साथ चलते और आगे बढ़ते रहना ही तुम्हारा एकमात्र परम कर्तव्य है। इस महान् लक्ष्यको ध्यानमें रखो और अपने कर्त्तव्यका पालन करते रहो।

आत्मा नित्य-शुद्ध-बुद्ध-सच्चिदानन्दस्वरूप

याद रखो—तुम विकारी और विनाशी क्षणभंगुर पाञ्चभौतिक जड शरीर नहीं हो। तुम हो नित्य-शुद्ध-बुद्ध-सत्-चित्-आनन्दस्वरूप। जन्म-मृत्यु आदि विकार शरीरमें हैं-तुम आत्मामें नहीं हैं। जगत् प्रपञ्चरूप दृश्य असत् है और मायासे सत्-सा दीखनेपर भी उसकी अनित्यता-मरता तो प्रत्यख है। तुम सत् और नित्य अमर हो। अपने स्वरूपको समझो और जगत्‌के सुख-दु:ख, लाभ-हानि आदि द्वन्द्वोंसे अतीत सदा आनन्दमय बने रहो।

याद रखो—जैसे स्वप्नमें देखे प्राणी-पदार्थ तथा अनुभूत सुख-दु:ख वास्तवमें असत् हैं, वैसे ही जाग्रतके ये समस्त प्राणी-पदार्थ एवं सुख-दु:ख भी असत् हैं। ये सब अज्ञानके ही असत् परिणाम हैं। इनसे तुम आत्मस्वरूपका न कोई संबंध है और न इनके आने-जानेमें-उत्पत्ति-विनाशमें तुम्हारा कुछ बनता-बिगड़ता ही है।

याद रखो—भक्तोंकी अनुभूतिमें ये सब लीलामय भगवान्‌के लीला-समुद्रकी विविध मृदु-तीव्र लीलातरंगे हैं। स्वयं भगवान् ही लीलारूपमें अभिव्यक्त या लीलायमान हैं। अतएव इनमें सदा-सर्वदा भगवान्‌के मंगल-दर्शन करो और नित्य-निरन्तर लीलाके रूपमें प्रकट लीलामयके दर्शन कर परम सुखमय लीलानन्दनका अनुभव करते रहो।

याद रखो—जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि, सुख-दु:ख, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, मित्र-शत्रु, दिन-रात, सर्दी-गर्मी आदि सारे द्वन्द्व माया है या भगवान्‌की लीलके ही विविध प्रकाश हैं। इनको या तो देखो ही मत, अथवा देख-देखकर इनकी आड़में छिपे हुए परमप्रेमास्पद लीलामय प्रभुके नित्य प्रफुल्लित, नित्य मधुर-मृदु-हास्यसमन्वित मुखकमलके दर्शन कर परमानन्द-सागरमें डूबते-उतराते हो।

याद रखो—जब तुम इस प्रकार सभी प्राणी-पदार्थोंमें, प्राकृतिक परिवर्तनोंमें, भावविचारोंमें केवल प्रियतम भगवान्‌का अनुभव करोगे, तब तुम्हारे लिये जगत्‌का रूप ही बदल जायगा। जहाँ इस समय तुम द्वन्द्वात्मक अनित्य विनाशी प्राणी-पदार्थोंको देखकर ममता-आसक्तिके कारण सुखी-दु:खी होते हो, वहाँ फिर तुम विविध खेलों तथा खेलनेवालोंके

रूपमें अभिव्यक्त एक नित्य सत्य अविनाशी अपने आत्माके भी आत्मा नित्य सच्चिदानन्दमय भगवान्‌को देखोगे। तुम्हारा जीवन फिर विनाशी, भयविषादयुक्त, शोक-मोह-व्यथित नहीं रहेगा। वह बिलकुल बदल जायगा-अविनाशी अभय आनन्दमय नित्य-सत्य, नित्य परम मधुर, नित्य नव सौन्दर्यसम्पन्न भगवान्‌के लीलाभिनयके एक आनन्दस्वरूप अभिनेताके रूपमें।

याद रखो—इस संसारको कोई असत् न भी माने तो भी इस अनित्य परिवर्तनशील संसारमें कुछ भी नित्य और स्थिर तो है ही नहीं। इस अवस्थामें यहाँ कोईभी किसी नित्य और स्थिर वस्तुकी या स्थितिका आशा रखेगा, तो वह सदा निराश ही रहेगा। यहाँकी आशा परम दु:खदायिनी है। यहाँ कभी किसकी कोई आशा कभी पूर्णरूपसे सफल हुई ही नहीं, न कभी हो ही सकती है। तुम एक आशा करोगे तो उस एकसे हजारों-हजारों आशाएँ फूट-फूटकर निकलेंगी और तुम उनके पाशमें इतने जकड़े जाओगे कि फिर उनसे छूटना ही अत्यन्त कठिन हो जायगा। अभी यही तो हो रहा है। हजारों-हजारों आशा-पाशोंसे आबद्ध मनुष्य उसकी पूर्तिके लिये विवेक-भ्रष्ट होकर काम-क्रोधपरायण हो रहा है और प्रत्शाशित वस्तुस्थितिकी प्राप्तिके लिये अन्याय-असत् साधनोंको अपनाकर दु:खभरको उत्तरोत्तर बढ़ा रहा है। अतएव मिथ्या अनित्य सुखोंकी आशा का सर्वथा त्याग करो। संसारकी असारता और दु:खमयता, अनित्यता और असत्यका अनुभव करो। अपने नित्य-सत्य, आनन्द-चेतनस्वरूपमें स्थित होओ या लीलामय भगवान् लीलाभिनयके अभिनेता बनकर भगवदानन्दको प्राप्त करो।

अहैतुकी भगवत्कृपा

याद रखो—भगवान् हैं; भगवान् सदा सर्वत्र हैं, भगवान् सबके हैं तुम्हारे भी हैं-उतने ही जितने वे किसी भी बड़े-से-बड़े संत-महात्माके हैं। भगवान्‌पर सदा सुदृढ़ तथा अटल विश्वास रखो, उनकी अहैतुकी कृपा सदा तुमपर अनवरत बरस रही है-इसपर विश्वास रखो।

याद रखो—भगवान्‌की सत्ता, भगवान्‌की सर्वशक्तिमत्ता, भगवान्‌की सर्वज्ञता, भगवान्‌की सहज सर्वभूतसुहृदता, भगवान्‌की दीन-बन्धुता नित्य, सत्य, सनातन, अक्षुण्ण एवं अपरिसीम है। इसपर कभी तनिक भी संदेह न करो। वरं सुदृढ़ विश्वास करो।

याद रखो—भगवान्‌के ये स्वरूपभूत गुण सदा ही तुम्हारे लिये कार्य कर रहे हैं, इसपर जितना ही अधिक विश्वास रखोगे, उतना ही तुम्हें अनुभव होगा कि भगवान् नित्य तुम्हारे समीप-तुम्हारे साथ रहकर अपनी अचिन्त्य-अनिर्वचनीय-अनन्त शक्तिमत्ता, सर्वज्ञता, सुहृदता और दीनबन्धुतासे तुम्हारा परम कल्याण कर रहे हैं।

याद रखो—जब तुम्हारा भगवान्‌पर और उनके स्वरूपभूत गुणोंपर विश्वास हो जायगा, तब तुम्हें सांसारिक दृष्टिसे महान् दु:खमयी, कष्टमयी, संतापमयी स्थितिमें भी परम शान्ति तथा परम सुखकी अनुभूति होगी। तुम सदा यही देखोगे कि भगवान् तुम्हारा परम कल्याण करनेके लिये तुम्हारा अपने माने हुए मिथ्या तन-मनसे तुम्हारा मोह छुड़ाकर तुम्हें अपने अत्यन्त निकटस्थ रखनेकी मंगलमयी व्यवस्था कर रहे हैं।

याद रखो—भगवान्‌का प्रत्येक विधान तुम्हारे निश्चित कल्याणके लिये हैं; अतएव कभी निराश मत होओ, कभी भय न करो, कभी विषाद मत करो। भगवान्‌की नित्य अहैतुकी कृपापर विश्वास रखो, जगत्‌के प्राणी-पदार्थोंसे कुछ भी आशा न रखकर अपने वास्तविक कल्याणके लिये भगवान्‌पर पूर्ण विश्वासके साथ निश्चित आशा करो। सतत

आशान्वित रहो और हर हालतमें परम सुखका अनुभव करो।

याद रखो—तुम वस्तुतः भगवान्‌की सेवाके लिये ही जगत्‌में भेजे गये हो। तुम्हें अपने प्रत्येक पदार्थाको, प्रत्येक विचारको, प्रत्येक शक्तिसामर्थ्यको एवं प्रत्येक क्रियाको भगवान्‌की वस्तु मानकर उन सबके द्वारा नित्य-निरन्तर भगवान्‌की सेवामें ही लगे रहना है। यह न करके यदि तुम अपनेको अन्य किसी कार्यके लिये आया मानते हो या जगत्‌के प्राणी-पदार्थ-परिस्थितियोंको अपनी मानकर अपने सुखोंपभोगोंके लिये उनका उपयोग करना चाहते हो तो तुम बड़ी भूलमें हो; भूलमें ही नहीं हो-अपराध कर रहे हो, पाप बटोर रहे हो-जिनका फल तुम्हें बहुत बुरे रूपमें भोगना पड़ेगा।

याद रखो—तुम जो कुछ अच्छे विचार या अच्छे कर्म करते हो, वह सब भगवान्‌की सत्प्रेरणा और भगवान्‌की शक्तिसे ही करते हो। कभी किसी भी अच्छे विचार या अच्छी क्रियामें अपनेको कर्त्ता मानकर तनिक भी अभिमान न करो, वरं भगवान्‌ने तुम्हें अच्छेमें निमित्त बनाया, इसके लिये उनके कृतज्ञ होओ और विशेष उत्साहके साथ सेवामें लग रहो।

याद रखो—भगवान्‌का कृपामय मंगलविधान भगवान्‌की सर्वज्ञताके साथ ही निर्मित हुआ है। उसका कब कैसे प्रयोग होगा और किस रूपमें कैसे उससे फलका उदय होगा-यह सब पहलेसे सुनिश्चित है। अतएव कभी ऊबो मत, घबराओ मत, अधीर मत होओ, आशामें तनिक भी कमी न आने दो और फलकी मंगलमयता तथा भगवद्‌रूपतामें तो कभी तनिक भी सन्देह न करो। शीघ्र या देर-दोनों ही भगवान्‌के कल्याण-विधानके अनुसार निश्चित ही तुम्हारे परम कल्याणके लिये ही हैं। तुम तो निश्चित रूपसे नित्य-निरन्तर उनकी कृपाकी प्रतीक्षा करते हुए-सर्वत्र सब अवस्थाओंमें उनकी कृपाके दर्शन करते हुए उनके भजनमें-उनकी सर्वतोमुखी सेवामें ही लगे रहो।

जीवन व्यर्थ खोने तथा पाप कमानेके लिये नहीं

याद रखो—तुम्हारा यह मानव-जीवन पाप कमानेके लिये तो है ही नहीं, व्यर्थ खोनेके लिये भी नहीं है। इसका एक-एक क्षण भगवान्‌की प्राप्तिका शुभ क्षण है, अतएव अमूल्य है और प्रत्येक क्षणको इसीलिये भगवत्प्राप्तिके साधनमें ही लगाना चाहिये। संसारके इन्द्रियभोग तो सभी योनियोंमें मिल सकते हैं; परंतु भगवत्प्राप्तिका साधन तो इसी मानव-शरीरसे सम्भव है। अतएव इसको केवल इसी काममें लगाओ।

याद रखो—तुम जीवनको व्यर्थके कामोंमें लगाते रहे तो वैसे ही संस्कार तुम्हारे मनमें भरेंगे और उन्हीं संस्कारोंके अनुसार व्यर्थके कामोंकी ही स्मृति तुम्हें होती रहेगी। भगवान्‌की स्मृति छूट जायगी और भगवान्‌की स्मृतिसे रहित कालमें तुम्हारी मृत्यु हो गयी तो तुम्हारा यह भगवत्प्राप्तिका परम साधनरूप जीवन ही व्यर्थ चला जायगा। यह इतनी बड़ी हानि होगी कि जिसकी पूर्ति सम्भव ही नहीं है। इसलिये भगवान्‌का स्मरण करते हुए जीवनके प्रत्येक छोटे-बड़े कार्यको भगवान्‌की सेवा-भगवान्‌की प्रीतिके लिये भगवत्पूजाके भावसे करो। इसीसे तुम्हारा मन निरन्तर भगवान्‌की स्मृतिमें ही लगा रहेगा। फिर जब कभी भी मृत्यु आयेगी-तुम उस समय भगवान्‌का ही स्मरण करते मिलोगे और परिणाममें निश्चय ही तुम्हें भगवत्प्राप्ति हो जायगी, जो मानव-जीवनका एकमात्र परम और चरम लक्ष्य है।

याद रखो—बीता हुआ क्षण फिर हाथ नहीं आता। यदि तुम मानव-जीवनकी अमूल्यताको भूलकर इसे व्यर्थ और अनर्थके कार्योंमें लगाये रखोगे तो तुम्हारे समान मूर्ख और कोई नहीं होगा; क्योंकि तुम मिले हुए अपने परम लाभके

समयको व्यर्थ खो रहे हो और ऐसे कर्म कर रहे हो, जिनका परिणाम इस बहुमूल्य समयका नष्ट हो जाना-इस सुअवसरका छिन जाना ही नहीं होगा, वरं जन्म-जन्मतक आसुरो-योनि और भीषण नरकयन्त्रणाकी प्राप्ति होगी। फिर रोने-धोनेसे कुछ भी नहीं होगा। अतएव अभीसे चेत जाओ और अपने जीवनका प्रत्येक क्षण भगवत्प्राप्तिके साधनमें लगाकर जीवनको सफल करो।

याद रखो—तुम्हारे पास प्रधानतया तीन चीजें हैं, जिनसे तुम्हारे कार्य चलते हैं-शरीर, मन और वाणी या तन-मन-वचन। इन तीनोंके द्वारा ही अच्छे-बुरे कर्म होते हैं। अतएव इन्हें बुरे कर्मोंसे हटाकर निरन्तर अच्छे कर्मोंमें नियुक्त रखना चाहिये। सबसे अच्छा और एकमात्र परम पुण्य कर्म है-भगवत्सवो। अत: इन तीनोंको भगवत्सेवामें ही लगाये रखो। शरीरसे द्वारा जो कुछ करो-सबमें भगवान्‌का संस्पर्श पाते हुए केवल भगवत्सेवाकी ही भावना रखो। भगवत्सेवाके लिये ही जब शरीरसे कर्म होने लगेंगे, तब उनके सारे दोष सहज ही नष्ट हो जायँगे और वे परम पुण्यकर्म बन जायँगे। मनके द्वारा विषय-चिन्तनको सर्वथा छोड़कर भगवच्चिन्तन करो। भगवान्‌की सेवाके लिये ही सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, त्याग, सेवा आदि सद्गुणरूप सद्विचारोंका मनन-चिन्तन करो और विशुद्ध आत्मभाव अथवा भगवान्‌के दिव्य स्वरूप, सौन्दर्य, माधुर्य, आदर्श लीला-गुणोंका स्मरण करो एवं वाणीके द्वारा भगवान्‌के ही नाम-गुणमानरूप शब्दोंका उच्चारण करो। न वाणीसे मिथ्या बोलो, न रूखा-कड़वा बोलो; न अनर्थकी निन्दा-चुगली करो, न अपनी बड़ाई करो; न व्यर्थकी बात करो, न अनर्थकी बात करो; सदा सत्य बोलो, मधुर तथा हितकर सत्य बोलो और बोलो केवल भगवान्‌की तुष्टिके लिये ही। यों जब तुम्हारे तन-मन-वचन नित्य भगवान्‌से जुड़े रहकर प्रतिक्षण केवल भगवत्सेवाका कार्य ही करते रहेंगे, तुब तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा और तुम अपने परम लक्ष्यको प्राप्त करके कृतार्थ हो जाओगे।

समत्व-बुद्धि या कर्म-कौशल

याद रखो—तुम न ब्राह्मण हो, न क्षत्रिय, न वैश्य हो और न शुद्र; तुम न भारतीय हो, न यूरोपीय हो, न किसी अन्य-देशीय हो; तुम न हिंदू हो, न अन्यधर्मीय या मतावलम्बीय हो। तुम हो एक भगवान्‌के सनातन अंश, तुम हो एक ही आत्माके अभिन्न स्वरूप। जैसे तुम हो, वैसे ही अखिल विश्व-ब्रह्माण्डके केवल मनुष्य ही नहीं, प्राणिमात्र भगवान्‌के सनातन अंश है या एक ही आत्माके अभिन्न स्वरूप हैं। तुम जो इस देहरूपमें प्रकट हो, यह माया है अथवा भगवान्‌की लीला है। इस देहको और इसके समस्त व्यवहारोंको भगवान्‌की लीला मानते हुए, सर्वत्र समभावसे भगवान्‌की लीला देखते और उनके इच्छानुसार उनकी लीलामें एक अभिनेता बने हुए ही स्वाँगके अनुसार व्यवहारके द्वारा उन भगवान्‌की पूजा करो। तुम्हारा प्रत्येक व्यवहार सर्वत्र समान भावसे केवल भगवत्प्रीत्यर्थ ही हो। व्यवहारमें विभिन्नता हो, पर समत्वबुद्धिमें विभिन्नता न हो। यही 'कर्मकुशलता' है।

याद रखो—कभी कहीं भी राग-द्वेष मत करो। जैसे खेलमें अपने-परायेका भेद तथा तदनुरूप व्यवहार खेले समय खेलभरके लिये, खेलके रूपमें ही रहता है और रहता है खेलकी सफलताके लिये ही। उसमें कहीं भी वास्तवमें न तो निज-पर बुद्धि होती है और न कहीं कभी राग-द्वेष ही रहता है। इसी प्रकार राग-द्वेष-रहित होकर यथायोग्य कर्मानुष्ठानके द्वारा भगवान्‌की पूजा करो।

याद रखो—कहीं किसी प्राणी-पदार्थ-परिस्थितिमें राग करके, कहीं किसीमें ममता करके दूसरेसे द्वेष करोगे, तो

द्वेषसे जलते तो रहोगे ही, द्वेषवश क्रोध-हिंसादि पाप तो होंगे ही और मरते समय यदि किसी द्वेष-प्राणी-पदार्थका स्मरण रहा तो उसीमें जन्म लेकर वैसे ही बनोगे और जिसमें अभी राम-ममता करके दूसरेसे द्वेष करते थे, उसीमें द्वेष करने लगोगे। जैसे मान लो, तुम किसी अमुक देशके रहनेवाले हो और दूसरे देशसे द्वेष करते हो; अब मरते समय उस देशका स्मरण रहेगा तो तुम उसी देशमें जन्म लोगे और इस समय जैसे इस देशमें राग और उस देशमें द्वेष करते हो, वैसे ही तब उस देशमें राग और इस देशमें करने लगोगे। अतएव कहीं भी न राग करो, न द्वेष। सर्वथा समभाव रखते हुआ अपने-अपने कर्त्तव्यकर्मके द्वारा भगवान्‌की पूजा करो, उनकी सेवा करो।

याद रखो—यहाँ जो कुछ है, सब व्यवहारके लिये है। यह व्यावहारिक जगत् है। ये सारे भेद व्यावहारिक जगत्‌के ही हैं, जो आवश्यक हैं। पर परमार्थतः इनकी वैसी स्वरूप-स्थिति नहीं है, जैसी दीख रही है। परमार्थरूपमें-यथार्थरूपमें तो एक भगवान् ही सर्वत्र लीलायमान हैं। निरन्तर उनकी लीला देखते रहो, विभिन्न रसोंमें उन्हीं एक महान। रसका आस्वादन करते रहो और अपने द्वारा होनेवाले प्रत्येक कार्यको उसी लीलाका अंग बनाकर लीलामयको संतुष्ट करते रहो।

याद रखो—लीला और लीलामय-पृथक्-पृथक् दीखनेपर भी स्वरूपतः हैं एक ही। वे एक रहते हुए भी लीलासे अनन्त रूपोंमें प्रकट होकर अनन्त विचित्र लीला करते हैं।

याद रखो—जबतक तुम इस प्रकार लीला और लीलामयको नहीं देख पाओगे, तबतक तुम्हारा न बन्धन कटेगा, न कलुष नाश होगा और न भय-विषाद मिटेंगे तथा तुम्हें न शान्ति मिलेगी, न सुख मिलेगा। अतएव सर्वत्र सर्वदा समभासे भगवान्‌को और उनकी लीलाको देखो।

परम तत्त्व

याद रखो—ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् एक ही परम तत्त्वके नाम हैं। वे ही भगवान्, निर्गुण, निर्गुण-सगुण, सगुण-साकार, साकार, निर्गुण-सगुण-साकार-सब कुछ हैं। उनके गुण उनके स्वरूपभूत अभिन्न हैं। उनका आकार उनका स्वरूपभूत अभिन्न है। जीवोंकी भाँति उनका मंगलशरीर न तो कर्मजनित है, न परमतन्त्रतासे प्राप्त है, न पाञ्चभौतिक है। न वह कभी बनता और न नष्ट ही होता है। वह लीलास्वरूप नित्य है, वह स्वेच्छामय है और वह सच्चिदानन्दघन-स्वरूप है।

याद रखो—भगवान्‌का दिव्य मंगल-स्वरूप मायासे नहीं दीखता है। मायासे दीखनेवाली वस्तु असत् होती है, वह दीखती भर है; पर उसकी सत्ता नहीं होती। भगवान् नित्य सत् हैं; वे दीखे या न दीखें-उनका स्वरूप तो नित्य सत्य है ही। उनकी कृपा होनेपर ही दीखता है। लीलासे कहीं प्रकट हो जाता है, कहीं अन्तर्धान हो जाता है, पर वह नित्य सनातन और दिव्य चिन्मय है।

याद रखो—भगवान्‌में न तो इच्छा है, न उन्हें किसी अप्राप्त वस्तुके प्राप्त करनेकी आवश्यकता है; क्योंकि न तो कुछ उन्हें अप्राप्त है और वस्तुतः उनके अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुकी कोई सत्ता ही नहीं है। उनकी सारी लीला अपनेमें अपने-आपसे ही अपने-आपके लिये अपने-आप ही हुआ करती है। लीला और लीलामय दो नहीं हैं।

याद रखो—भगवान्‌की शक्ति भगवान्‌से पृथक् नहीं है। वह उन्हींकी स्वरूपभूता है और सदा अभिन्नरूपसे उन्हींमें

स्थित रहती है। वह शक्ति जहाँ लीलामयमें प्रकट होती है, वहाँ पृथक् दीखती है; जहाँ प्रकट लीलाका विराम है, वहाँ वह दिखायी नहीं देती। दिखायी न देनेपर भी वह उनमें है ही और दिखायी देनेपर भी वह वस्तुत: उनसे पृथक्—भिन्न नहीं है। शक्ति और शक्तिमानका नित्य अविनाभाव अभिन्न सम्बन्ध है। जहाँ शक्ति प्रकट है, वहाँ भगवान् व्यक्त माने जाते हैं और जहाँ वह अप्रकट है, वहाँ अव्यक्त; पर यह व्यक्त और अव्यक्त भाव भी—भगवान्‌में कोई अवस्थाभेद नहीं है। वे किसी भी अवस्थामें परिणत नहीं होते। उनमें जो कुछ दिखायी देता है, वह सब वस्तुत: उनके स्वरूपसे भिन्न नहीं है।

याद रखो—भगवान्‌का कभी विकास या अविकास नहीं होता। वे नित्य सत्य सनातन स्वरूपभिन्न स्वमहिमामें स्थित है। कोई किसी भी भावमें, किसी भी स्वरूपमें उनको देखे, उनकी उपासना करे—सब वही हैं और सब उन्हींकी उपासना होती है। वे उपासकके भावानुरूप उसके सामने प्रकट होकर उसका सारा तम हरण करके उसे अपने यथार्थ दिव्य स्वरूपका ज्ञान करा देते हैं, वह कृतकृत्य हो जाता है।

याद रखो—भगवान् सर्वमय हैं, सर्वातीत हैं; सर्वगुणसम्पन्न हैं, सर्वथा गुणरहित हैं, सर्वाधार हैं, सबसे परे हैं। उनके अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नहीं; 'सर्व' रूपमें वे ही अभिव्यक्त हैं। वे एक हैं, अनन्त हैं, असीम हैं; वह एकता, अनन्तता और असीमता भी उनमें उन्हींसे है।

याद रखो—भगवान्‌में यह कल्पना ही नहीं होती कि वे ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं; वे निर्गुण ही हैं, सगुण नहीं हैं, सगुण ही हैं, निर्गुण नहीं हैं, वे निर्विशेष ही हैं, सविशेष नहीं हैं; वे सविशेष ही हैं, निर्विशेष नहीं हैं। वे सब कुछ हैं और उनके अतिरिक्त किसी भी भावकी सत्ता नहीं है। वे ही इन सारे भावों—स्वरूपोंमें विभिन्नरूपसे व्याख्यात होते और अपना साक्षात् कराते हैं। अत: सारे संदेह-भ्रमको छोड़कर अपने-अपने भावानुसार उनका आराधन-पूजन करना चाहिये।

सब रूपोंमें भगवान्

याद रखो—भगवान् एक हैं। उन्हींमें सारी सृष्टि है। प्रत्येक प्राणीके वे सुहृद् हैं। वे चाहते हैं कि हम उनसे मिलें, उनकी प्रीति प्राप्त करें, पर हम ऐसे अभागे हैं कि हम उनके चाहनेपर भी उनसे मिलना नहीं चाहते।

याद रखो—हमारे न चाहनेपर भी वे हमसे मिलना चाहते हैं और मिलना चाहते हैं एकान्तमें। वे कभी अपमानके रूपमें आते हैं, जिससे सम्मानकी सारी भीड़ हट जाती है। वे कभी निन्दाके रूपमें आते हैं, जिससे प्रशंसाका सारा कोलाहल शान्त हो जाता है। वे कभी दारिद्र्यके रूपमें आते हैं, जिससे आस-पास घेरा डाले रहनेवाले स्वार्थियोंके दल हट जाते हैं।वे कभी असफलताके रूपमें आते हैं, जिससे सफलताकी पूजा पीड़ाके रूपमें आते हैं, जिससे उस पीड़ाके अतिरिक्त और कुछ भान ही नहीं रहता। इस प्रकार वे विभिन्न प्रतिकूल रूपोंमें आकर तुम्हें अकेला कर देते हैं और फिर अकेलेमें तुमसे मिलते हैं।

याद रखो—वे किसी भी रूपमें आवें, जब दूसरेकी सत्ता नहीं रहने देते, तब उनसे स्वाभाविक ही एकान्त-मिलन होता है। उस एकान्त मिलनमें यदि तुम उनको पहचान लेते हो तो तुम कृतकृत्य हो जाते हो। फिर तुम्हारे लिये कुछ भी करना-पाना शेष नहीं रह जाता। पर जबतक तुम उन्हें नहीं पहचान लेते, तबतक तुम्हारा भटकना और जलना नहीं मिल सकता।

याद रखो—अनुकूलताकी भीड़में उन्हें पहचानना बड़ा कठिन होता है। उस समय चारों और ऐसा कोलाहल मचा

रहता है कि तुम उसीमें अपनेको खो देते हो। वे परम सुहृद् भगवान् तुम्हें इस कोलाहलसे मुक्त करके अपने स्वरूपकी पहचान करानेके निमित्त विभिन्न प्रतिकूलताओंके रूपमें आते हैं। प्रतिकूलतामें भीड़ तथा कोलाहल नहीं रहता। पहचान जल्दी होती है। ये सभी प्रतिकूलताएँ वस्तुत: उनके परम सौहार्दका ही परिचय है।

याद रखो— जब पेटमें या सिरमें भयानक पीड़ा होती है तब उस समय पीड़ाके अतिरिक्त कुछ भी भान नहीं रहता। उस पीड़ाके रूपमें वे एकमात्र अकेले रह जाते हैं और अकेलेमें तुम उन्हें पहचानकर एकान्तमें मिल सकते हो। वहाँ कोई बाधा देनेवाला नहीं रहता। इस प्रकार प्रत्येक भयानक प्रतिकूलतामें तुम उन्हें पहचानकर सहज ही एकान्त-मिलनका सुख लूट सकते हो। प्रतिकूलतामें वे ही आते हैं और आते हैं तुम्हें एकान्त-मिलनका सुख देनेके लिये।

याद रखो—प्रियतम भगवान्‌को पहचानते ही प्रतिकूलताका सारा दु:ख मिट जायगा आर यह प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि भगवान्‌ने अपनी अहैतुकी अनन्त कृपासे स्वयं प्रतिकूलताका रूप धारण किया है और इस प्रकार अपने एकान्त-मिलनका दिव्य अनुभव करा वे तुम्हें कृतकृत्य करनेको पधारे हैं। उनको पहचानो, स्वागत करो और उनसे मिलकर कृतार्थ हो जाओ।

भगवान् चिदानन्दमय

याद रखो—भगवान् चिदानन्दस्वरूप हैं,। परमानन्दमय हैं और वे दिन-रात आठों पहर तुम्हारे साथ रहते हैं-सोते-जागते, खाते-पीते, चलते-बैठते-सभी समय, सभी अवस्थाओंमें। तुम उनको भूले हुए हो, इसीसे दु:खी होते हो। उनका अनुभव नहीं करते, इसीसे भय-विषादसे भरे रहते हो। अनुभव करो-तुम्हारे जीवनके प्रत्येक क्षणमें भगवान् तुम्हारे साथ हैं, तुम्हारे जीवनकी प्रत्येक क्रियामें भगवान् तुम्हारे साथ हैं।

याद रखो—वास्तवमें समस्त जगत्‌के रूपमें एकमात्र भगवान् ही अभिव्यक्त हो रहे हैं। भगवान् ही एकमात्र सत्य हैं। वे आनन्दस्वरूप हैं। जगत्‌में जो कुछ सुन्दर-भयानक हो रहा है, सब उन्हीं आनन्दस्वरूपकी आनन्दमयी लीला है; इसे अनुभव करो और नित्य सुखी हो जाओ।

याद रखो—भगवान्‌से रहित जिस जगत्‌की कल्पना है, वह सर्वथा असत् है और जहाँ उसकी कल्पित सत्ता है, वहाँ वह अनित्य, अपूर्ण तथा नित्य अत्यन्त दु:खमय है। उसमें सदा सर्वत्र दु:खकी ही नयी-नयी ज्वालाएँ प्रकट होती है और भड़कती रहती हैं; उससे त्राण पाना हो तो वह जिन आनन्दमय भगवान्‌में कल्पित है, सदा सर्वत्र उन आनन्दमय लीलामय भगवान्‌को और उनकी आनन्दमयी लीलाको ही देखो।

याद रखो—तुम भी आनन्दमयकी आनन्दमयी लीला-सुधाधाराके प्रवाहमें ही उन्हीं लीला-समुद्रकी एक तरंग बने बह रहे हो, जब तुम उस आनन्दसमुद्रकी तरंग हो तब स्वयं आनन्दसमुद्रके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो।

याद रखो—जगत्‌में जो कुछ भी व्यवहार हो रहा है-सब उनकी आनन्दमयी लीला है और जो कुछ भी है, सब वे स्वयं आनन्दमय भगवान् ही हैं। अत: प्रत्येक व्यवहारमें उनकी लीलाके दर्शन करो और प्रत्येक पदार्थमें स्वयं लीलामयके। प्रत्येक फलके स्वरूपमें भी लीलामय भगवान् ही आते हैं-कभी रोग बनकर-कभी नीरोगता बनकर; कभी सृजन बनकर-कभी संहार बनकर, कभीा मान बनकर-कभी अपमान बनकर; कभी सुख बनकर-कभी दु:ख बनकर और कभी लाभ बनकर-कभी हानि बनकर। तुम सबमें सदा उन्हींको देखो।

याद रखो—वे भगवान् ही सब कुछ हैं। माता,पिता, गुरु, पति, भाई, मित्र जिस किसी भी रूपमें-जैसा जो कुछ भी

सम्बन्ध मानकर उनको अपना बना लो, वे उसी रूपमें तुम्हारे बनने और तुमको अपना बनानेके लिये तैयार हैं।

याद रखो—विश्वासके योग्य वही होता है जो सत्य है, नित्य है; असत्य और अनित्यपर विश्वास करनेवाला तो निराश ही होता है, धोखा ही खाता है। सत्य और नित्य एक भगवान् ही हैं। भगवान्‌के सिवा और जो कुछ भी है, सब असत्य है, कल्पित है और देखनेमें भी अनित्य प्रत्यक्ष है। अतएव भगवान्‌के अतिरिक्त अन्य किसीपर विश्वास तथा भरोसा करोगे तो वह तुम्हारी मूर्खता होगी; क्योंकि तुम उससे धोखा ही खाओगे।

याद रखो—तुम भगवान्‌पर विश्वास करके उन्हींको एकमात्र अपना मानकर उनकी ओर बढ़ना चाहोगे तो वे सहज अहैतुक सुहृद् तुम्हें सुखपूर्वक अपनी ओर खींच लेंगे। तुम्हारे सारे बाधा-विघ्नोंका सहज ही नाश हो जायगा। तुम्हारा पथ सुगम, सुखमय और प्रशस्त हो जायगा। इतना ही नहीं-जब तुम उनकी ओर चलना शुरू कर दोगे तब वे अपने प्रणके अनुसार तुम्हारी ओर चलना आरम्भ कर देंगे। वे चलेंगे अपनी चालसे और उनकी चाल है चलनेका संकल्प करते ही वहाँ पहुँच जाना अतएव वे भगवान् तुम्हारे पास तुरंत आ पहुँचेंगे और उनका मंगलमय पावन सुदुर्लभ दर्शन-स्पर्श प्राप्तकर तुम कृतार्थ हो जाओगे। फिर कण-कणमें प्रतिक्षण अनवरत-रूपसे तुम उनके दर्शन करते रहोगे, तुम्हारा जीवन धन्य हो जायगा।

विशुद्ध अनुरागा

याद रखो—जहाँ बदलेमें या फलरूपमें कुछ भी प्राप्त करनेकी कामना है, वहाँ विशुद्ध अनुराग नहीं है। इसीसे विशुद्ध अनुराग भुक्ति-मुक्तिकी कामनावाला संसारी मनुष्य नहीं कर सकता, न विशुद्ध प्रेम परम प्रियतम भगवान्‌के सिवा अन्यत्र कहीं हो ही सकता है।

याद रखो—संसारमें एकके साथ जो दूसरेका सम्बन्ध होता है, वह चाहे व्यक्तिगत हो या समष्टिगत, उसमें परस्पर लेन-देनकी नीति रहती ही है चाहे वह प्रकटमें न दिखायी दे। यहाँतक कि जो लोग निःस्वार्थ भावसे सेवा या पर-हित करते हैं, उनके हृदयमें भी यह भावना छिपी रहती है कि वे अपने इस सेवा या पर-हित-कार्यके द्वारा एक लोकोपकारी महान् आदर्श उपस्थित कर रहे हैं, वरं बहुत गहरेमें जाकर देखा जाय तो उनमें किसी-न-किसी रूपमें मान-पूजा या ख्याति-प्रशंसाकी कामना छिपी रहती है।

याद रखो— जो लोग निःस्वार्थभावसे देवाराधन, जनसेवा आदि कार्य करते हैं, वे भी कम-से-कम इस कार्यके द्वारा अन्त' करणकी शुद्धि तो चाहते ही हैं और अपनेको सर्वथा निष्काम मानकर केवल मुक्तिके लिऐ साधना करते हैं, उनमें भी संसार-दु:ख-निवृत्ति या जन्म-मृत्युके चक्रसे छूटनेकी कामना रहती है। अतएव जहाँतक एकमात्र भगवान्‌में परम प्रियतम बुद्धि नहीं होती और प्रियतम-सुखके लिये ही जीवन नहीं बन जाता, वहाँतक किसी-न-किसी रूपमें अन्याभिलाषा रहती ही है। जहाँतक अन्याभिलाषा है-किसी भी रूपमें भुक्ति-मुक्तिकी कामना है, वहाँतक विशुद्ध प्रेम नहीं है। वह एक प्रकारका लेन-देनका व्यापार ही है। कम लाभका हो या अधिक लाभका-साधनाके फलस्वरूप किसी लौकिक दु:खकी निवृत्ति या किसी लौकिक वस्तुकी प्राप्ति हो जाय अथवा जन्म-मरणरूप दु:खकी निवृत्ति या मुक्तिकी प्राप्ति हो जाय।

याद रखो—परम प्रियतम भगवान् अपने प्रेमी भक्तके अधीन होकर उसके विशुद्ध प्रेमरसका आस्वादन करते हैं और वह प्रेमी भक्त अपनेमें सदा-सर्वदा प्रेमका अभाव अनुभव करता हुआ परम प्रियतम भगवान्‌के स्वभावकी महिमा

गाता रहता है और भुक्ति-मुक्ति सबका विसर्जन कर केवल प्रियतम-सुखका मूर्तिमान् स्वरूप बना हुआ उत्तरोत्तर विशुद्ध प्रेमकी अनन्तताकी ओर अग्रसर होता रहता है। यही परम प्रियतम भगवान्‌के साथ विशुद्ध प्रेम-सम्पन्न भक्तका सम्बन्ध होता है और यह सम्बन्ध केवल प्रेमके लिये ही होता है और होता है परम प्रियतम भगवान् और विशुद्ध (भुक्ति-मुक्ति-वासनालेश-शून्य) प्रेमी भक्तमें ही।

याद रखो—ऐसा विशुद्ध प्रेमी भक्त वस्तुतः मुक्त ही होता है और वह वस्तुतः पराशान्तिको प्राप्त होता है। बल्कि मुक्ति और शान्ति अनायास ही अपनेको धन्य करनेके लिये उसकी सेवामें नियुक्त रहती हैं। अतः किसी प्रकारका भी कोई बन्धन उसको नहीं रहता और न किसी भी प्रकारकी कोई परिस्थिति उसकी शान्तिमें तनिक बाधक हो सकती है। हाँ, एक बन्धन उसमें अवश्य रहता है, वह है विशुद्ध प्रेमका बन्धन, जिसमें भगवान् स्वयं उसके साथ बँधे रहते हैं और इस बन्धनसे वह कभी मुक्त होना नहीं चाहता। यही तो उसका स्वरूप-सौन्दर्य है।

श्रद्धा-विश्वासका फल

याद रखो—जो काम श्रद्धासे किया जाता है, उसके करनमें उत्साह और उल्लास रहता है और वह सफल होता है। श्रद्धासे ही विश्वास उत्पन्न होता है और विश्वास श्रद्धाका उदय कराता है। ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं। पर जहाँ श्रद्धा-विश्वास है, वहाँ सिद्धि सामने उपस्थित रहती है।

याद रखो—श्रद्धा-विश्वासको मनुष्यका जीवन निरन्तर आशापूर्ण और आनन्दपूर्ण रहता है। नित्य नयी स्फूर्ति होती है और कार्यमें सरलता तथा पद-पदपर सफलताका बोध होता रहता है।

याद रखो—श्रद्धा-विश्वाससे वातावरणमें एक विलक्षण शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जो साधकको निरन्तर बल देती रहती है और उसके बलपर वह अपने साध्यको सहज प्राप्त कर लेता है। भीलकुमार एकलव्यने गुरु द्रोणाचार्यकी मिट्टीकी मूर्तिसे अपने श्रद्धा-विश्वासके बलपर धनुर्विद्यामें ऐसी निपुणता प्राप्त की कि जिसे देखकर अर्जुनको और गुरु द्रोणको भी स्वयं चकित होना पड़ा।

याद रखो—भगवान्‌को वही प्राप्त कर सकता है, जिसकी भगवान्‌के अस्तित्व और उनकी प्राप्तिमें श्रद्धा होती है। श्रद्धाके बिना सच्ची साधनाका प्रारम्भ ही नहीं हो पाता। संदेह रखनेवालोका मन कैसे उस कार्यमें लगेगा। संशयात्माका तो पतन या विनाश ही होता है।

याद रखो—श्रद्धाके बिना साधनमें तत्परता नहीं होती, तत्परताके बिना विभिन्न कार्यों तथा विषयोंमें मन, इन्द्रियाँ भटकते रहते हैं; इन्द्रिय-संयम हो ही नहीं पाता और इसके बिना साधनमें कभी सफलता नहीं मिलती।

याद रखो—श्रद्धा-विश्वाससे थोड़ी शक्ति हो तो वह बड़ी शक्ति बन जाती है और जहाँ बिलकुल ही अशक्ति हो, वहाँ शक्तिका उदय हो जाता है। श्रद्धा-विश्वाससे पूर्ण प्रयत्न होता है और उससे असम्भव भी सम्भव बन जाता है।

याद रखो—सच्ची श्रद्धा और विश्वासमें शंका या तर्कको स्थान नहीं होता। गुरुने कहा-'सब कुछ ब्रह्म ही है, एक ब्रह्मके सिवा और कुछ भी नहीं है।' शिष्यके श्रद्धा-विश्वासने ऐसा ही मान लिया और गुरुदेवके बताये मार्गसे श्रवण-मनन-निदिध्यासन करके साधक शिष्य ब्रह्मका साक्षात्कार करनेमें सफल हो गया। शंका-तर्क होते तो, न तो इस सिद्धान्तको वह मानता और जब मानता ही नहीं, तब साधन तो करता ही कैसे?

याद रखो—श्रद्धा-विश्वासके बिना मनुष्य अपने-आपको ही हीन समझता है और भगवान्‌की कृपाका लाभ भी नहीं उठा सकता। अत: आत्मविश्वास करो और सर्वशक्तिमान् सहज सुहृद् भगवान्‌की अहैतुकी कृपापर विश्वास करो। आत्मविश्वास से भगवत्कृपामें भी विश्वास बढ़ेगा और भगवत्कृपासे अनायाय ही साधनोंमें सिद्धि मिल जायगी।

याद रखो—श्रद्धा-विश्वास वह विशुद्ध और अखण्ड प्रकाश है तथा आशा-उत्साहको जगानेवाला महान् तेज है, जो साधकको प्रतिकूल-से-प्रतिकूल परिस्थितिमें भी पथ दिखलाता है और उसके समस्त निराशामय विचारों तथा प्रतिकूल परिस्थितियोंके अन्धकारको मिटाकर उस जीवनको पूर्ण सफलताके पथपर द्रुतगतिसे अग्रसर करता है।

याद रखो—श्रद्धा-विश्वास जीवन है और अश्रद्धा-अविश्वास मरण है। ऐसा दु:खद मरण है, जो अकस्मात् नहीं आता, पर घुला-घुलाकर मारता है। अतएव सदा-सर्वदा श्रद्धा-विश्वासका सेवन करो।

शान्तिमें ही सुख है

याद रखो—संसारके दुर्लभ-से-दुर्लभ और बड़े-से-बड़े भोग मनुष्यको सुखी नहीं बना सकते, यदि उसके मनमें शान्ति नहीं है। अशान्त मनको मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता ओर जब तक भोगोंकी कामना है, तबतक मनमें शान्ति हो नहीं सकती।

याद रखो—भोगोंको कामना तबतक नहीं मिटती, जबतक भोगोंमें सुखकी आस्था है और कामनाका यह स्वभाव है कि वह ज्यों-ज्यों सफल होती है, त्यों-ही-त्यों उसका विस्तार होता है। वह कभी पूरी होती ही नहीं।

याद रखो—जिसके मनमें कामनाएँ भरी है, उसके विवेक (भविष्यमें क्या परिणाम होगा-यह सोचनेकी शक्ति) ही ही ह्रास-नाश हो जाता है, बुद्धि ही मारी जाती है। इसीसे वह कामनाकी पूर्तिके लिये नित्य नये निषिद्ध कर्म-पाप करता है, परिणामत: दु:खजालमें फँसता चला जाता है। कामनको साथ क्रोध और लोभ निश्चितरूपसे निवास करते हैं। कामनाकी पूर्तिमें जब कामनापर आद्यात लगता है, तब क्रोध उत्पन्न होता है और कामनाकी पूर्तिमें लोभ की वृद्धि होती है तथा जहाँ ये काम-क्रोध-लोभ-तीनों मिल जाते हैं, वहाँ पाप-कर्म सहज ही, वरं आवश्यक माना जाकर होने लगता है। परिणाममें दु:ख-कष्ट बढ़ जाते हैं और भीषण नरक-यन्त्रणा भोगनी पड़ती है।

याद रखो—भोग यदि प्राप्त हो भी गये तो वे नष्ट होनेवाले हैं, तुमसे छूटनेवाले हैं। अतएव बुद्धिमानी इसीमें है कि तुम इन निश्चित दु:खोत्पादक भोगोंमें रस लेना छोड़कर नित्य सत्य परम सुखमय और सहज ही नित्य सुखदाता अपने सुहृद् भगवान्‌से प्रेम करो, भगवान्‌का स्मरण करो और भगवान्‌को ही चाहो। तुम्हारे पास यदि भोग हों या भोग आते हों तो उनका भी भगवान्‌की पूजाकी सामग्री समझकर भगवान्‌के ही अर्पण कर दो। अपनेको भी उनके अर्पण कर दो।

याद रखो—जब तुम भगवान्‌के हो जाओगे, अपनेको भगवान्‌के अर्पण कर दोगे, तब तुम्हारे मनसे अन्य कामनाओंका बीज भी नष्ट हो जायगा। तुम्हारा मन सर्वथा शान्त हो जायगा और तुम्हें अनन्त सुखकी सहज अनुभूति होगी।

याद रखो—भगवान्‌के सुखसे-भगवत्प्राप्तिके सुखसे सुखी होना ही मनुष्य-जीवनका परम और चरम लक्ष्य है। इसी महान् कार्यके लिये मनुष्य-शरीरकी प्राप्ति भगवत्कृपासे हुई है। अत: इसी कार्यमें लगनेवाला मनुष्य ही यथार्थमें मनुष्य है। जो मनुष्य भी भगवान्‌के भजनमें नहीं लगता, भोगोंमें ही लगा रहता है, उसके समान मूर्ख और कोई नहीं है; क्योंकि वह महान् लाभके लिये मिले हुए सुअवसरोंको खा रहा है, अपना अनिष्ट आप ही कर रहा है। अपनी बुराईमें

ही भलाई समझ रहा है।

याद रखो—भोगपरायण मनुष्यका जीवन पशु या असुरका जीवन हो जाता है और उसके पाशविक तथा असुरी कार्य उसे कर्त्तव्य-भ्रष्ट तो करते ही हैं; वरं उसके भविष्यको सर्वथा बिगाड़ देते हैं। वह जीवनभर अशान्त तथा दु:खी रहता है, जीवनभरमें पापकर्मोंमें लगा रहता है और मरनेके बाद बार-बार उसे आसुरी योनियोंमें जन्म धारण करना पड़ता है तथा नरककी भीषण यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं।

याद रखो—बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो आपातरमणीय भोगोंमें और उनकी कामनामें न फँसकर भोगोंके परिणाम-दु:खप्रद स्वरूपको समझकर उनमें जीवन बरबाद नहीं करता और जीवनको भगवान्के समर्पण करके अपना एक-एक क्षण भगवान्के मंगलमय स्मरणमें लगाता है एवं प्रत्येक कार्य केवल भगवान्की सेवा-भगवान्की पूजाके लिये ही करता है।

याद रखो—बुद्धिमान् तथा सौभाग्यवान् मनुष्य वही है, जिसने अपनी सारी ममता भगवान्में समर्पित कर दी-अर्थात्, भगवान्के सिवा जिसका 'मेरा' कुछ रह ही नहीं गया। जिसने अपना सारा अहंकार भगवान्की सेवामें समर्पित कर दिया और जिसकी सारी आसक्ति तथा कामना एकमात्र भगवान्में ही जाकर प्रतिष्ठित हो गयी।

सदा सुखी कौन रहते हैं?

याद रखो—जो सदा सबका भला चाहते और करते हैं, कभी किसकी मन, तन और वचनसे हिंसा नहीं करते, इन्द्रियोंको तथा मनको वशमें रखते हैं, किसीसे द्वेष या वैर नहीं रखते-वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो मनसे, वचनसे और क्रियासे सबका कल्याण करते और सदा सबको अनुकूलता प्रदान करते रहते हैं, जो किसी भी विपत्ति और प्रतिकूलतामें धैर्य तथा धर्मको नहीं छोड़ते, जो दूसरेका स्वत्व तनिक भी नहीं लेना चाहते-वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो मधुरभाषी हैं, कभी कटु नहीं बोलते, किसीकी कभी निन्दा-चुगली नहीं करते, सबको सम्मान देते हैं, पर स्वयं सम्मान नहीं चाहते, दूसरेके अधिकारकी रक्षा करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो दीनोंपर सदा दया करते हैं, बन्धुजनोंकी बदला न चाहकर सेवा करते हैं, सेवा करके अहसान नहीं जताते, जो अहंकारसे रहित हैं, सदा कोमलस्वभाव तथा विनयशील हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो दूसरोंके दु:ख-कष्टको अपने दु:खके समान समझते और यथासाध्य उनके दु:ख-निवारणमें तत्पर रहते हैं, अपने दूसरोंका हित करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें में ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो क्रोधपर विजय पानेवाले हैं, मद तथा अभिमानसे रहित हैं, ममताके त्यागी हैं, जिनमें लोभ तथा मत्सरताका अभाव है, जो शान्तप्रकृति हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो उदार हैं, दूसरोंके दोषोंको न देखकर गुणोंको देखते हैं, गुरुजनोंका-बड़े-बूढ़ोंका पूजन-सम्मान

करते हैं, विद्वानों तथा ब्राह्मणोंका आदर करते हैं, यथाशक्ति सात्त्विक दान करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और जीवनकालमें ही स्वर्गमें निवास करते हैं।

याद रखो—जो तन-मन-वचनसे सबके प्रतिकूल आचरण करते तथा सबका अहित करते हैं, जो हिंसापरायण, क्रूरभाषी, इन्द्रियोंके गुलाम, अशुभ आचार करनेवाले, भगवान्‌को न माननेवाले, अभिमान तथा राग-द्वेषसे पूर्ण हृदयवाले तथा ममता-मद-मोहमें चूर हुए असत्य-आचरण करते हैं, वे सदा दु:खी रहते हैं और जीवनकालमें ही भीषण नरक-यन्त्रणा भोगते हैं।

चार पुरुषार्थ

याद रखो—इस लोकमें सुख-सुविधा रहे, जीवन कष्टमय न रहे, सदाचार तथा सद्‌व्यवहार जीवनके स्वभावगत हो जायँ और मानव-जीवनके परम लक्ष्य मोक्षकी प्राप्ति हो जाय-इसलिय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चार पुरुषार्थ माने गये हैं। इन चारोंमें मोक्ष लक्ष्य है। मोक्षके लिये ही धर्मसंगत, धर्मानुमोदित अर्थ-काम का सेवन करना है।

याद रखो—'अर्थ'की सार्थकता इसीमें है कि उसके द्वारा धर्म-साधन हो, अभावग्रस्तोंके अभावकी पूर्ति हो तथा लोककी सच्ची सेवामें उसका उपयोग हो। नहीं तो अर्थ सर्वथा अनर्थरूप है। अर्थ यदि भोगवासनाकी तृप्तिमें लगता है तो वासना-अतृप्ति और पाप बढ़ते हैं। अर्थ यदि किसीके अहितमें लगता है तो वैर, हिंसा, दु:ख तथा नरकोंकी प्राप्ति होती है। अर्थका यदि सावधानीके साथ उचित रूपमें सदुपयोग न हो तो उससे चोरी, हिंसा, असत्य, दम्भ, काम, क्रोध ा, गर्व, मद, भेद, वैर, अविश्वास, स्पर्धा, स्त्री, जुआ तथा शराबका व्यसन-ये पंद्रह अनर्थ उत्पन्न होते हैं। प्रेम तथा स्नेह-सेवाके पात्र सम्बन्धियोंमें शत्रुता हो जाती है। अर्थके साथ भय तो लगा ही रहता है। चिन्ता तो अर्थकी नित्य संगिनी है-उपार्जनमें, रक्षणमें, बढ़ानेकी इच्छामें, व्यवहारमें तथा नाशमें चिन्ता रहती है। चिन्ताके साथ ही त्रास, परिश्रम और भ्रम भी लगे रहते हैं। अतएव अर्थको अनर्थरूप समझकर उसके संग्रहकी इच्छा न करो, जीवन-निर्वाहके लिये सुख तथा धर्मपूर्वक उपार्जन करो और उसका सद्‌व्यय करो।

याद रखो—अर्थकी भाँति ही 'काम' भी इन्द्रियतृप्तिके लिये नहीं है। वह भी जीवन-निर्वाह तथा मानव-जीवनके लिये आवश्यक उपयोगी होता है, वैसे ही काम भी वही उपयोगी होता है, जो धर्मके द्वारा नियन्त्रित हो, धर्मरूप हो और जिसका लक्ष्य मोक्ष हो।

याद रखो—धर्मका लक्ष्य मोक्ष है। यही धर्मका सच्चा फल है। जिस धर्मसे केवल अर्थ-काम-भोगकी प्राप्ति होती है, वह तो व्यर्थ हैं; क्योंकि उससे अनित्य तथा दु:खमूलक पदार्थोंकी ही प्राप्ति होती है। वास्तवमें जितने भी भोग हैं, सब दु:खरूप तथा दु:खकी उत्पत्ति करानेवाले हैं। अतएव उसी धर्मका सेवन करो, जो विषयभोगोंमें वैराग्य उत्पन्न करा दे और मोक्षकी प्राप्तिमें परम सहायक हो।

याद रखो—जिससे अतृप्ति तथा तृष्ण बढ़ती हो, जिससे दिन-रात अशान्तिकी अग्निमें जलना पड़ता हो, जिससे नये-नये बन्धन होते हों, जिससे नये-नये दु:ख-क्लेशोंकी उत्पत्ति तथा वृद्धि होती हो, जिससे भगवत्-विमुखता होती हो और पापकर्मोंमें प्रवृत्ति बढ़ती हो-वह त्रिवर्ग-(अर्थ, धर्म, काम) किस कामका?

याद रखो—मोक्षविरोधी जो कुछ भी है, सभी त्याज्य तथा हेय है। अतएव धर्मविरुद्ध तथा वासना बढ़ानेवाले अर्थ एवं काममें तो रुचि रखनी ही नहीं चाहिये। ऐसे धर्मके लिए भी बहुत प्रयत्नशील नहीं होना चाहिये, जिससे केवल

सम्पत्ति, भोग, सुन्दर शरीर, लौकिकी विद्या, लोककीर्ति और लम्बी आयु मिलती हो; क्योंकि मोक्षविरोधिनी होनेपर ये सभी वस्तुएँ परिणाममें दु:ख तथा बन्धन करनेवाली होती हैं और अनित्य तथा अपूर्ण होनेसे सदा ही चिन्ता तथा भयसे ग्रस्त रखती हैं।

याद रखो—मानव-जीवन अर्थकामोपभोगके लिये है ही नहीं। जहाँ जीवनमें केवल अर्थ और कामोपभोगकी लिप्सा जग जाती है, वहाँ धर्म नहीं रहता। इससे जीवन अधर्ममय, पापमय बन जाता है और पापका फल दु:ख, बन्धन तथा नरकयन्त्रणा है ही। किसी भी युक्ति, मत, बहुमतसे या अस्वीकार करनेसे जीवन इस फल-भोगकसे कभी बच नहीं सकता। बाध्य होकर उसे अपने दुष्कर्मका फल भोगना ही पड़ता है। मानव-जीवनका साध्य तो भगवत्प्राप्ति या मोक्ष ही है ओर जो साध्यकी प्राप्तिमें सहायक साधन हो, वही धर्म है और जो इस धर्ममें सहायक साधनरूप है, वही पुरुषार्थमें गण्य 'अर्थ' और 'काम' है। इसी दृष्टि तथा इसी निश्चयसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-इस चतुर्विध पुरुषार्थका सम्पादन-सेवन करो।

चौबीस बड़े दोष

याद रखो—काम, लोभ, धनोपार्जनमें ही लगे रहना, तृष्णा, असंतोष, परिग्रह, स्तेय, असत्यभाषण, निन्दा, बहुत बोलना, परचर्चा क्रोध, हिंसा, निर्दयता, चिनता, शोक, अहंकार, अभिमान, मद, प्रमाद, इन्द्रियोंकी दासता, मनकी गुलामी, कुसंगति और भजनका अभाव-ये चौबीस बड़े दोष हैं।

याद रखो—1. काम ज्ञानको हरण करके पापमें प्रवृत्त करता है; 2. लोभसे बुद्धि मारी जाती है; 3. धनोपार्जनकी नित्य प्रवृत्तिसे मनुष्य असुर बन जाता है और धर्म, शान्ति, निर्भयता, सुख उसके जीवनसे चल जाते हैं; 4. तृष्णा सदा नवीन बनी रहकर जलाती रहती है; 5. असंतोष सदा मनुष्यको अभावका अनुभव कराता हुआ दु:खी रखता है; 6. परिग्रहकी वृत्ति सदा नयी-नयी चीजें बटोरनेकी चिन्तासे ग्रस्त रखती है; 7. स्तेय (चोरी) दूसरेका धन-स्वत्व अपहरण करनेका पाप कराता रहता है; 8. असत्य-भाषणसे वाणीका तेज नष्ट हो जाता है और लोगोंमें विश्वास उठ जाता है; 9. निन्दासे परदोष-दर्शनकी प्रवृत्ति होती, पराये पापोंका संग्रह होता तथा जिनकी निन्दा होती है, उनसे द्वेष-वैर बढ़ता है; 10. बहुत बोलनेसे वाणी-बलका क्षय होता और व्यर्थ समय नष्ट होता है; 11. परचर्चासे समय नष्ट होनेके साथ ही निन्दा-स्तुतिकी आदत पड़ती तथा राग-द्वेष बढ़ता है; 12. क्रोध मनुष्यको बेहोश करके राक्ष्नस बना देता है; 13 हिंसा महापाप है और हिंसा करनेवाले की सब हिंसा करते हैं; 14. निर्दयता मनुष्यको खूँखार पशु और पिशाच बना देती है; 15. चिन्ता हृदयमें सदा चिता-सी बनी धधकती तथा धधकाती रहती है; 16. शोकसे मनुष्य मोहग्रस्त होकर कर्त्तव्यशून्य हो जाता है; 17. अहंकार समस्त बन्धनोंका मूल है-शरीर तथा नामका अहंकार जीवको जन्म-मृत्युके चक्रमें घुमाता है; 18. अभिमान झूठे बड़प्पनकी सृष्टि करके दूसरोंका अपमान करवाता और नये-नये कलह-क्लेश की सृष्टि करता है; 19. मद मनुष्यको बेहोश कर देता है-यह एक बुरा नशा होता है-जैसे धन-मद, पद-मद, विद्या-मद, जाति-मद, बुद्धि-मद आदि; 20. प्रमादसे मनुष्य करनेयोग्य कार्यका त्याग कर देता है और न करनेयोग्य को करने लगता है; 21. प्रमाद ही मृत्यु है; इन्द्रियोंकी दासता मन-बुद्धि की पवित्रताको नष्ट करने उसे दुष्कर्मोंमें लगाती तथा बाहरी एवं भीतरी शक्तिका नाश करती है; 22. मनकी गुलामीसे मनुष्य उच्छृखल होकर कुमार्गगामी होता और नित्य अशान्ति का भोग करता है; 23. कुसङ्गतिसे मनुष्यका सब ओरसे पतन हो जाता है, कुसङ्गसे जीवन बिगड़ जाता है और मनुष्य चिरकालतक नरकयन्त्रणा-भोगका साधन बटोरता रहता है और 24. भजनका अभाव तो मानव-जीवनको ही व्यर्थ

कर देता है।

याद रखो—मानव-जीवन मिला ही है-भगवान्‌का भजन करनेके लिये। अतएव उपर्युक्त दोषोंसे बचते हुए भगवान्‌का भजन करो। सत्सगतिके साथ भजनमें प्रवृत्त हो जानेपर ये दोष अपने-आप हटने-मिटने लगते हैं। भगवान्‌के भजनमें ही मानवकी मानवता है।

याद रखो—भजन उसे कहते हैं-जिसमें जीवनके सारे कार्य भगवान्‌की सेवाके लिये होते हैं। मनसे भगवान्‌का चिन्तन तथा वाणीसे भगवान्‌के नाम-गुणोंका जप-कीर्तन-कथन करते हुए शरीरके द्वारा होनेवाले प्रत्येक कर्मसे भगवान्‌की ही पूजा-सेवा करनी चाहिये।

भगवान्‌में विश्वास और आस्था

याद रखो—सुख चाहते हो पर पाते नहीं हो, इसका कारण है-चित्तकी अनवरत अशान्ति और अशान्तिका प्रधान कारण है-भगवान्‌में अविश्वास एवं अनास्था तथा भोगोंमें विश्वास और आस्था। भोग प्राकृतिक पदार्थ हैं, जो स्वाभाविक ही अपूर्ण, अनित्य और विनाशी हैं।

याद रखो—प्राकृतिक भोगोंसे शान्ति-सुख चाहनेवाला किसीभी स्थितिमें संतुष्ट नहीं हो सकता। आवश्यक प्राकृतिक भोग-पदार्थोंके अभावमें तो अशान्ति-दु:ख होता ही है, परंतु ज्यों-ज्यों प्राकृतिक भोग-पदार्थोंकी प्राप्ति होती है, त्यों-ही-त्यों भोगोंकी आवश्यकता, उन्हें प्राप्त करनेकी कामना-इच्छा बढ़ती चली जाती है। इतनी अनावश्यक आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं कि मनुष्य क्षणभरके लिये भी शान्तिका अनुभव नहीं कर सकता। शान्ति बिना सुख होनेका नहीं।

याद रखो—जिनती ही भोगोंकी आवश्यकता बढ़ती है, उतनी ही उन्हें प्राप्त करनेकी इच्छा तथा चेष्टा होती है और भोग-कामनासे मनुष्यका विवेक ढक जाता है। तब वह विवेक-भ्रष्ट होकर सहस्त्रों पथोंसे तथा बड़ी तीव्र गतिसे अध ा:पतनकी ओर जाता है।

याद रखो—विवेक-भ्रष्ट मनुष्य परिणामको भूल जाता है; किसका क्या फल होगा, यह सोचनेकी उसकी बुद्धिमें शक्ति नहीं रह जाती, वह सहज ही उन दुष्कर्मोंमें प्रवृत्त हो जाता है। जिनको वह स्वयं कभी बुरा समझता था और जो उसके जीवनको दुष्कर्ममय बना देते हैं।

याद रखो—जब बुद्धि भ्रष्ट होती है तब मनुष्यको सभी विपरीत दिखायी देने लगता है, उसकी बुरी चीजोंसे-बुरे कामोंसे केवल घृणा नहीं निकल जाती, वह उनहें अपने कार्यकी सफलताके लिये आवश्यक मानता हैं, वरं उनको अपनानेमें गौरवका अनुभव करता है। इस दशामें उसकी अच्छी चीजोंमें, अच्छे कामोंमें, सत्पुरुषोंके सङ्गमें, सत्-स्थानोंमें अच्छी बातचीतमें, अच्छे अध्ययनमें और अच्छे वातावरणमें केवल रुचि ही नहीं हट जाती-ये सब उसे व्यर्थ मालूम होते हैं, वरं बुरे तथा त्याज्य प्रतीत होने लगते हैं; वह अच्छे सम्पर्कमें रहना ही पसंद नहीं करता।

याद रखो—ऐसा अच्छेको बुरा तथा बुरेको अच्छा माननेवाला विपरीतबुद्धि मनुष्य दु:खोंसे छूटनेके लिये अनवरत विचार करता है, कर्म करता है पर करता है वही, जिससे दु:ख और भी बढ़ जाते हैं। उसकी अनियन्त्रित मन-इन्द्रियाँ निरन्तर सुखकी मिथ्या आशासे दु:खोत्पादक विषयोंके सेवनमें ही लगती रहती हैं। उसके जीवनमें अन्धकार, दुश्चिन्ता, अशान्ति, अधर्म आदि बढ़ते ही चले जाते हैं, जिनके मारे वह भौतिक असफलतामें तो मृत्युसे भी बढ़कर

यन्त्रणाका अनुभव करता ही है, सफलतामें भी उसकी दुष्पूरणीय भोग-कामना, उसकी दुश्चिन्ता, अशान्ति, अधर्म और अधस्तरको बढ़ाती रहती है। इसी अशान्त, चिन्तामय तथा पापमय स्थितिमें उसकी आयुके दिन पूरे होते जाते हैं और वह मृत्युकालमें भी सैंकड़ों-सहस्त्रों दुश्चिन्ताओं और दुर्भावनाओंमें फँसा हुआ, बड़ी ही भयानक पीड़ाका अनुभव करता हुआ पापका बोझ साथ लिये मर जाता है।

याद रखो—इस प्रकार मरनेवाले जीवकी बड़ी दुर्गति होती है, उसे बार-बार दु:ख-ताप तथा अज्ञानमय आसुरी योनिकी प्राप्ति होती है और तदनतर भीषण नरकयन्त्रणा भोगनी पड़ती है। मनुष्य-जीवनका यह परिणाम बड़ा ही भयानक तथा सर्वथा अवाञ्छनीय है।

याद रखो—मनुष्य-जीवनकी सफलता इसीमें है कि मनुष्य मानव-जीवनके असली उद्देश्य भगवत्प्राप्तिका लाभ करे- वह सारी अशान्ति, सारी चिन्ता और सारे दु:खोंसे सर्वथा छूटकर परमान्दमय चिन्मय भगवत्-स्थितिको प्राप्त करे। यह होगा भोगोंके प्रति वैराग्य और अनास्था होनेपर तथा भगवान्में अनुराग तथा विश्वास होनेपर।

वास्तविक हित

याद रखो—वास्तविक हित उसीका होता है और उसीको परिणाममें सच्चे सुखकी प्राप्ति होती है, जो सदा-सर्वदा दूसरोंके हितकी बात सोचता है—करता है और सदा दूसरोंको सुखी बनानेके लिये ही प्रयत्नशील रहता है।

याद रखो—जो पुरुष दूसरोंके हित-सुखका सम्पादन अपना कर्त्तव्य समझेगा, स्वाभाविक ही उसके अन्त:करणमें त्याग, दया, सहानुभूति, सेवा, संयम तथा शुद्ध सदाचारके भावोंका उदय तथा सवर्धन होता रहेगा; और जितना-जितना वह इन शुद्ध भावोंके अनुसार क्रिया करनेमें तत्पर होगा उतना-उतना ही उसके इन पवित्र भावोंमें अधिकाधिक उत्कर्ष, शुद्धि, शक्ति तथा उल्लासमयी धाराका प्रवाह तीव्ररूपसे बहने लगेगा।

याद रखो—जिसके पास जो कुछ होता है, वह न चाहनेपर जगत्को सहज ही वही देता है, गुलाब सुगन्धका वितरण करेगा और मल दुर्गन्धका—स्वभावसे ही और जिन वस्तुओंका जितनी दूरतक अधिक विस्तार होगा, उन्हींका अन्य लोगोंमें भी—उतनी ही दूरतक प्रभााव होगा। लोग वैसे ही बनने लगेंगे। अवएव जिनके हृदयमें सद्भावोंका भण्डार है, उनके द्वारा सदा सत्कर्म होते हैं; उन्हींका अन्य लोगोंमें भी प्रचार, प्रसार तथा विस्तार होता है—उनसे फिर दूसरोंमें। इस प्रकार अपना तथा जगत्के लोगोंका सहज ही कल्याण होता है। इसी प्रकार इसके विपरीत दुर्भावों तथा दुष्क्रियाओंसे अपना तथा जगत्के अन्य लोगोंका निश्चित अहित होता है।

याद रखो—प्राणिमात्र सुख चाहता है और वस्तुत: हित ही सच्चा सुख है; इसलिये अपना हित चाहनेवालेको चाहिये कि वह जब-जब अपने हितकी बात सोचे-करे, तब-तब यह ध्यान रखे कि इससे दूसरे प्राणियोंका अहित तो होना ही नहीं चाहिये, पर उनका हित निश्चित होना चाहिये; क्योंकि जिस कार्यके परिणाममें दूसरोंका अहित होता है, उससे अपना हित ही नहीं; और जिससे दूसरोंका परिणाममें हित होगा, उससे अपना हित निश्चय ही होगा। अतएव सुख चाहते हो तो अपने प्रत्येक विचार तथा कर्मके द्वारा दूसरोंका हित सोचो, हित करो।

याद रखो—जो दूसरोंके हित-साधनको ही अपना हित समझकर कर्म करता है, सभी लोग सहज ही उसका हित चाहने लगते हैं। अत: उसके सुहृदों, हितचिन्तकों तथा सच्चे बन्धुओंकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। सभी ओरसे उसे सहानुभूति, सेवा, सुहृदता, सद्भावना, सुरक्षा आदि मिलते रहते हैं। फलत: वह स्वयं शान्तिका मूर्तिमान् प्रसाद बन

जाता है और उससे सम्पर्कमें रहनेवालोंको भी शान्तिका परम लाभ होता है। जहाँ शान्ति है, वहीं सुख है; जहाँ अशान्ति है, वहीं दु:ख है। अशान्तिके लिये सुख कहाँ? '**अशान्तस्य कुतः सुखम्।**'

याद रखो—जहाँ दूसरोंके हितके लिये त्याग है, वहीं यथार्थ प्रेमका उदय होता है। त्याग प्रेमसे मिलता है और प्रेमसे त्याग बढ़ता है। यों उत्तरोत्तर त्याग और प्रेममें होड़-सी लग जाती है और इससे एक त्यागमय विशुद्ध परम निर्मल मधुर भावोंका सुख-सागर लहरा उठता है, जिसमें अवगाहन करके, जिसके एक बूँदका आस्वादन करके भी मनुष्य अपूर्व सुखका अनुभव करता है।

याद रखो—किसीको अपना बनाना हो, मित्र बनाना हो, सुहृद् बनाना हो, तो उसके अपने बनो, उसके मित्र बनो और उसके सुहृद् बनो। यदि सबपर सात्त्विक विजय प्राप्त करनेका साधन है—इसीको जगत्को आवश्यकता है और यही परहितका भाव जब भगवत्पूजा बन जाता है, जब प्रत्येक प्राणीके साथ होनेवाले प्रत्येक सद्व्यवहारसे उस प्राणीके रूपमें अभिव्यक्त भगवान्की पूजा होती है और फलत: जीवन सुख-शान्तिमय तो बीतता ही है, मानव-जीवनके परम तथा चरम लाभ भगवत्प्राप्तिसे भी वह सुसम्पन्न हो जाता है। कृतार्थ हो जाता है उसका जन्म-जीवन!

धनकी पवित्रता

याद रखो—जो धन न्याय तथा सत्यके साथ उपार्जित किया गया है और जो किसी ट्रस्टके धनकी भाँति किसी सच्चे ईमानदार और कर्त्तव्यपरायण पुरुषके साथ ट्रस्टके कार्योंमें सावधानी तथा उदारताके साथ व्यय करनेके लिये एक ट्रस्टीके पास रखे धनकी भाँति सुरक्षित है एवं जिसका सदा सद्व्यय हो रहा है—ऐसा धन ही पवित्र है।

याद रखो—जिसके पास ऐसा भगवान्की सम्पत्तिरूप पवित्र धन है और जो उसे निरन्तर भगवान्की सेवामें लगा रहा है, वही वास्तवमें धनी है। उसीके लिये धन सुखरूप और वरदानरूप है।

याद रखो—जो धनपर अपना अधिकार मानता है और अपने भोग-सुखमें ही उसका व्यय करता है अथवा बटोरकर रखता है—वह वास्तवमें धनी नहीं है। वह वैसे ही चोर है, जैसे दूसरेकी चीजको हड़पनेवाला होता है। उसके लिये वह धन सदा दु:खरूप तथा अभिशापरूप है। ऐसे धनसे नये-नये पाप ही बनते रहते हैं।

याद रखो—धनका कोई भी महत्त्व नहीं है। महत्त्व है—सदाचारका, धर्मनिष्ठाका और त्यागका। धन तो असुर-राक्षसोंके पास भी होता है—चोर-लुटेरोंके पास भी हो सकता है।

याद रखो—धर्मनिष्ठा, सदाचार और त्यागसे ही धनकी पवित्रता रहती है। जो धन धर्मके द्वारा नियन्त्रित नहीं है, जिससे असदाचार और भ्रष्टाचार होता है या जो अधर्म एवं भ्रष्टाचारके द्वारा उपार्जित तथा रक्षित होता है एवं जिसकी जहाँ आवश्यकता है, वहाँ निरभिमानताके साथ त्याग नहीं होता; वह धन जहाँ जाता है, वहीं अपवित्रता उत्पन्न करता है। गंदगी फैलाता है। नैतिक पतनका प्रधान कारण बनता है।

याद रखो—धनको धनके रूपमें महत्त्व मिलनेपर वह मनुष्यको चोरी, डकैती, अनाचार, मिथ्याचारमें प्रवत्त करता है। मनुष्य देखता है कि जिसके पास धन है, उसीका समाजमें आदर है, वही श्रेष्ठ माना जाता है और उसके सारे दोष ढक जाते हैं। इसलिये वह किसी प्रकारसे भी धन उपार्जन करके समाजमें सर्वश्रेष्ठ तथा सम्मान्य बनना चाहता है। इस प्रकार धनका महत्त्व होनेपर समाज 'चोर-पूजा' करने लगता है। फिर चोरी, डकैती, मिथ्याचार आदि घृणाकी वस्तु न

रहकर गौरवकी वस्तु बन जाते हैं। इसलिये कभी भी धनको महत्त्व मत दो। धर्मनिष्ठा, सदाचार तथा त्यागको महत्त्व दो। जिसमें धर्मनिष्ठा, सदाचार और त्याग है, वह श्रेष्ठ है। वह सम्मान्य और पूज्य है, धनवान् नहीं। यही समझो और यही समझाओ। कम-से-कम अपने लिये तो यही निश्चय करो कि यदि हमारा धन सत्य तथा न्यायके द्वारा उपार्जित है, धनका अभिमान नहीं है और वह भगवान्‌की सेवामें लग रहा है, तभी हम श्रेष्ठ हैं; नहीं तो धनराशि भले ही कितनी ही प्रचुर हो, हम श्रेष्ठ नहीं, नीच हैं और सर्वथा घृणाके पात्र हैं।

याद रखो—जिस समाजमें धर्मनिष्ठा, सदाचार और त्यागका आदर-सम्मान होता है और इनसे रहित धनका तिरस्कार होता है, उस समाजमें उत्तरोत्तर पवित्र आचारका प्रसार अधिक-से-अधिक होता है। वही समाज आदर्श और सुखी होता है। वहाँ चोर-पूजा नहीं होती, त्यागीकी पूजा होती है और जहाँ त्यागी का आदर होता है, वहाँ सभी लोग त्यागी बनना चाहते हैं।

याद रखो—त्यागमें ही शान्ति है और जहाँ शान्ति है वहीं सुख है।

आनन्दकी स्वाभाविक चाह

याद रखो—मनुष्य स्वाभाविक आनन्द चाहता है और वह अपनी समझसे दिन-रात आनन्दकी प्राप्तिके उपाय ही सोचता है और उसीके लिये कार्य करता है। अनुकूल उपायोंका अवलम्बन करता है और विघ्नोंको हटाने-मिटानेका प्रयास करता है; पर इस बातको नहीं जानता कि वास्तविक स्थायी और नित्य आत्यन्तिक आनन्द कहाँ है। वह अपनी विषयासक्त सीमित बुद्धिसे इस जगत्‌में धन, ऐश्वर्य, कीर्ति, सम्मान, पुत्र, स्त्री, पूजा, पद और अधिकार आदिमें ही सौन्दर्य तथा आनन्द है—ऐसा दृढ़ विश्वास कर बैठा है, अतएव इन्हींके अर्जन, रक्षण तथा संवर्धनमें लगा है।

याद रखो—जो वस्तु अपूर्ण है, नाश होनेवाली है, जो मृत्युके अधीन है, वह कभी न तो वस्तुतः सुन्दर होती है और न आनन्द देनेवाली ही। वह तो सदा ही असुन्दर और दुःखरूप है।

याद रखो—पता नहीं, किस अनादिकालसे यह जीव भगवद्विमुख होकर—अपने आत्मस्वरूपको भूलकर माया-मोहमें फँस रहा है और अनित्य तथा दुःखयोनि संसारके प्राणिपदार्थ-परिस्थितियोंको प्राप्त करके आनन्द-लाभ करनेके लिये प्रयत्नशील है। यह जो आत्मस्वरूपकी विस्मृति है, यही क्षणभङ्गु शरीर और नामोंमें अहंबुद्धि—अर्थात् यह मैं हूँ और शरीर तथा शरीर-सम्बन्धी वस्तुओंमें ममत्व-बुद्धि अर्थात् ये मेरे हैं—ऐसी भ्रान्ति उत्पन्न करती और बढ़ाती हैं। इसी कारण मनुष्य-शरीरकी स्वस्थतामें अपनेको स्वस्थ, कृशता या स्थूलतामें अपनेको कृश या स्थूल, शरीरके नाशमें अपना नाश मानता है और इसी कारण यह शरीर और नामके सम्बन्धों—स्त्री, पति, पुत्र, घर, धन, पद, अधिकार, मान आदिके नाशमें मेरी वस्तुओंका नाश और इनकी प्राप्ति तथा रक्षामें मेरी वस्तुओंकी प्राप्ति तथा रक्षा मानता है।

याद रखो—इस प्रकार शरीर एवं नामको 'मैं' और इनके सम्बन्धी अनुकूल प्राणी-पदार्थों तथा परिस्थितियोंको 'मेरा' माननेवाला मनुष्य सदा ही चोट-पर-चोट खाता रहता है, वह सदा ही आनन्दके बदले घोर दुःख, शान्तिके बदले अशान्ति, अमरताके बदले नित्य-मृत्यु और तृप्तिके बदले सदा अतृप्ति प्राप्त करता है।

याद रखो—ऐसा मनुष्य जीवनभर चिन्ताग्रस्त और भ्रमित—अशान्तिचित्त रहता है। कभी किसी अवस्थामें वह निश्चिन्त और सुस्थिर-शान्तचित्त नहीं रह सकता। साथ ही भोगकामकी पूर्तिके लिये भोगसक्तिवश नये-नये पाप करता है, लोगोंसे द्वेष-द्रोह करता है, क्रोध-हिंसा करता है, छल-कपट करता है, असत्य और अन्यायका आश्रय लेता है और

मरते क्षणतक दु:खी रहता हुआ पापोंका संग्रह करके मृत्युका ग्रास बन जाता है।

याद रखो—इस प्रकार जिसकी पाप-चिन्तामयी मृत्यु होती है, वह मृत्युके पश्चात् बहुत बड़ी कड़ी यमयन्त्रणा भोगता है। बार-बार अधम आसुरी योनियोंमे जाता है और वहाँ भाँति-भाँतिके संतापकी आगमें जलता रहता है।

याद रखो—मनुष्य-जीवनका यह ध्येय तो है नहीं; वरं उसके असली ध्येयका—भगवत्प्राप्ति या आत्मस्वरूप-स्थितिका बाधक है। अतएव इस परिणामको प्राप्त करानेवाले अहं-ममजनित पापकर्मोंका परित्याग करके नित्य-निरन्तर सावधानीके साथ उन साधनोंका आश्रय ग्रहण करो, जिनसे मानव-जीवनके असली ध्येयकी प्राप्ति हो। वास्तविक लक्ष्योंको प्राप्त करके जीव कृतकृत्य हो जाय। मानव-जन्म सफल हो जाय।

भगवान् अकारण हितैषी

याद रखो—भगवान्पर अनन्य तथा सुदृढ़ विश्वास होते ही सारी चिन्ताएँ, सारी दु:खद परिस्थितियाँ और सारी बाध ाएँ अपने-आप दूर हो जाती है; क्योंकि तुम्हारे लिये जो कुछ भी फल निर्माण होता है, सब भगवान्के ही नियन्त्रणमें होता है और भगवान् हैं तुम्हारे सुहृद्—अकारण हित करनेवाले परम मित्र। अतएव जो कुछ भी तुम्हारे लिये बना है या बनेगा, वह सभी सहज ही तुम्हारे लिये कल्याणरूप होगा।

याद रखो—भगवान्के द्वारा निर्मित प्रत्येक विधान तुम्हारे लिये निश्चित कल्याणरूप है, यह निश्चय होते ही सारी चिन्ताएँ अपने-आप नष्ट हो जाती है।

याद रखो—भगवान् भलीभाँति निर्भ्रान्तरूपसे जानते हैं कि तुम्हारा वास्तविक 'कल्याण' किस परिस्थिति या किस वस्तुमें है। अतएव तुम्हारे लिये वही विधान करते हैं, उसी परिस्थिति और वस्तुको प्रदान करते हैं, जो तुम्हारे लिये निश्चित मङ्गलमयी है, भले ही वह देखनेमें प्रतिकूल हो। पर जब तुम यह विश्वास कर लोगे कि तुम्हारे लिये यह मङ्गलमयी ही है, तब तुम्हारी उसमें प्रतिकूल बुद्धि हट जायगी, अनुकूल बुद्धि हो जायगी और अनुकूल बुद्धि होते ही सारी दु:खोंका—सारी दु:खद परिस्थितियोंका नाश हो जायगा; क्योंकि प्रत्येक परिस्थिति ही अनुकूल होकर सुखदरूपा बन जायगी।

याद रखो—भगवान् सर्वशक्तिमान् हैं, वे सब कुछ करनेमें समर्थ हैं, कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है, जो उनका विरोध कर सके वरं सच्ची बात तो यह है कि सारी शक्तियोंके एकमात्र मूलस्त्रोत या अनन्त भण्डार वे ही हैं। वे जब जिस किसी भी परिस्थिति या वस्तुके द्वारा तुम्हारा कल्याण करेंगे, तब तुम्हारा कल्याण निश्चय ही उसी परिस्थिति और उसी वस्तुके द्वारा होगा। कोई भी बाधा नहीं रह जायगी।

याद रखो—भगवान् सत्यसंकल्प हैं। उनका संकल्प और संकल्पसिद्धि—दोनों साथ ही होते हैं। अतएव तुम्हारे लिये भगवान्का मङ्गल संकल्प होते ही वह सिद्ध हो जायगा—सफल हो जायगा।

याद रखो—भगवान् कल्याणमय है—मङ्गलमय हैं, वे सदा ही सबका कल्याण—मङ्गल स्वरूपत: करते रहते हैं और वे तुम्हारे परम सुहृद् हैं, इसलिये अवश्य ही तुम्हारा कल्याण करते हैं तथा करेंगे। पर तुम्हारा उनकी मङ्गलमयतानुसार और उनकी सुहृदतापर विश्वास नहीं है, तुम अपनी मनमानी परिस्थिति और वस्तुमें अपना कल्याण मानते हो और मनके विरुद्ध परिस्थिति एवं वस्तुमें अपना अकल्याण या अमङ्गल मानते हो—इसीसे अनुकूलता-प्रतिकूलताका अनुभव

करते हो और सुखी-दु:खी होते रहते हो। बल्कि कई बार ऐसा होता है कि तुम भूलसे यथार्थ अनुकूल परिस्थिति और वस्तुको प्रतिकूल मान बैठते हो और यथार्थत: प्रतिकूलमें अनुकूल-बुद्धि कर लेते हो। अतएव भगवान्‌पर, उनकी अनिवार्य मङ्गलमयतापर विश्वास करो—अटल और अनन्त विश्वास करो। प्रत्येक परिस्थिति और वस्तु तुम्हारे लिये कल्याणमयी—आनन्दमयी हो जायगी।

'मेरा' कुछ भी नहीं

याद रखो—यहाँ कोई भी वस्तु, प्राणी, परिस्थिति, पदार्थ ऐसा नहीं है, जो तुम्हारा 'मेरा' हो-जो तुम्हारी ममताको सार्थक करता हो। यह महामोह है जो तुम सांसारिक प्राणी-पदार्थोंको मेरा मानते हो, उनमें ममता रखते हो और संसारकी अधिक-से-अधिक वस्तुओंको "मेरी" बनाना चाहते हो-उनपर मिथ्या 'ममता' की मुहर लगाना चाहते हो।

याद रखो—जहाँ 'मेरा' है, वहीं 'पराया' है। कोई तुम्हारी ममताकी वस्तु है, तो कोई दूसरोंकी। अपनी ममता वस्तुओंमें तुम्हारी आसक्ति है, दूसरोंकी ममताकी वस्तुओंके प्रति तुम्हारे मनमें उपेक्षा है या द्वेष है। इसीसे ममताकी वस्तुके छिन जानेपर, नष्ट हो जानेपर या नष्ट होनेकी सम्भावनापर ही तुम दु:खी हो जाते हो; अपनेको अत्यन्त संकटग्रस्त और भाग्यहीन मानते हो। दूसरेकी ममताकी वस्तुके नाशपर तुम या तो उपेक्षा करते हो, या सुखी होते हो। राग-द्वेषका यही परिणाम है। कुछ प्राणिपदार्थोंमें ममता होनेपर समता नष्ट हो जाती है और फलत: राग-द्वेष पुष्ट हो जाते हैं, नये-नये मानसिक और शारीरिक पापों तथा दु:खोंके कारण होते हैं।

याद रखो—तुम्हारे पास जो कुछ है या जो कुछ तुम्हें मिलनेवाला है, सब भगवान्‌का है। यह समझकर उसपर निजी ममता न करके भगवान्‌की वस्तुकी दृष्टिसे उसकी सँभाल करो और उसपर अपना स्वत्व न मानकर उसे यथायोग्य भगवान्‌की सेवामें लगाते रहो। इससे, 'जैसा बीज बोया जाता है, उसीके अनुरूप अनन्तगुने फल होते हैं'-इस बीज-फल-न्यायके अनुसार तुम्हें बदलेमें बहुत कुछ मिल जायगा। यों यदि सब करने लगेंगे तो सबके अभावकी पूर्ति अपने-आप हो जायगी। साथ ही भगवान्‌की वस्तुको 'मेरी' माननेका जो दोष है, उससे बचाव हो सकेगा।

याद रखो—तुम जबतक वस्तुओंमें ममता रखकर या ममताकी वस्तुओंकी संख्या बढ़ाकर सुखी-शान्त होना चाहोगे, तबतक सुख-शान्ति तुमसे दूर रहेंगे; क्योंकि सभी ऐसा ही चाहेंगे तो संसारमें दूसरोंकी वस्तुओंको मनुष्य सदा ललचायी आँखोंसे देखता रहेगा और उन्हें हथियाकर उनपर ममताकी छाप लगानेके प्रयत्नमें तत्पर होगा। इससे सदा सर्वत्र छीना-झपटी और फलत: संघर्ष-संहार होता रहेगा। संसारके मानव दु:खी रहेंगे और ऐसा करनेवाले मानव-प्राणी परलोकमें और पुनर्जन्ममें भी नाना प्रकारकी आसुरी योनियोंके नरक-यन्त्रणाओंके और अशेष क्लेशोंके भागी होंगे ही।

याद रखो—जो मानव इस प्रकार ममता, राग-द्वेष उनके फलस्वरूप पाप तथा दु:खभोगकी परम्परामें जीवन बिताता रहेगा, वह मानव-जीवनके एकमात्र परम तथा चरम लक्ष्य भगवत्प्राप्तिसे वंचित रह जायगा, जिसकी प्राप्ति मानवेतर योनियोंमें होती ही नहीं। अतएव संसारके किसी भी प्राणी-पदार्थ, वस्तु, परिस्थितिमें ममता न कर नित्य-सत्य-सनातन-सर्वाधार भगवान्‌के श्रीचरणोंमें ममता करो। फिर सर्वत्र ममता हो जायगी। राग-द्वेष रहेंगे नहीं। पाप होंगे नहीं। दु:ख तथा नरकोंसे एवं नारकी योनियोंसे छुटकारा मिला रहेगा और मानव-जीवनकी चरम सफलतारूप भगवत्प्राप्ति भगवत्कृपासे हो जायगी।

सच्चा भक्त

याद रखो—भगवान् ही अपने संकल्पसे अनन्त विश्वके अनन्त चराचर भूतोंके रूपमें प्रकट हैं, जो इस सत्यको देख लेता है, वह सर्वत्र सदा सबमें भगवान्‌के ही मंगल दर्शन करता है। वह सभीको अनन्यभावसे प्रणाम करता है। किसीसे किसी प्रकारका विरोध तो करता नहीं। वही सच्चा भगवान्‌का भक्त है।

याद रखो—जो सर्वत्र सबमें एक अविनाशी नित्य आत्माको देखता है और सबको नित्य एक अविनाशी आत्मामें देखता है, वह सबमें आत्मानुभूति करके सबके साथ आत्मोपम व्यवहार करता है। उसका आत्मरूप 'स्व' ही सबके रूपमें अभिव्यक्त है, वह देखनेवाला भी उस आत्मामें ही स्थित है, अतएव वह 'स्वस्थ' है। वह भी किसीसे भी विरोध नहीं कर सकता।

याद रखो—जबतक मनुष्य भगवान्‌को या आत्माको सबमें नहीं देखता और सबको भगवान्‌में या आत्मामें नहीं देख पाता तबतक उसकी स्थिति प्रकृतिमें रहती है, इसीसे उसे 'प्रकृतिस्थ' कहते हैं। यही जीव है। वह प्रकृतिमें होनेवाले परिवर्तनको–सृजन–संहारको अपने लिये मानता है। इसीसे सुखी–दु:खी होता है, प्रकृतिके गुणोंको भोगता है। इन गुणोंका संग ही उसके अच्छी–बुरी योनियोंमें जन्म लेनेका कारण है।

याद रखो—इस प्रकृतिस्थ जीवनमें भी पूर्वकर्मानुसार या वर्तमानके संग एवं वातावरणके अनुसार जितना–जितना 'स्व' का विस्तार होता है, उतने–उतने ही उसके विचार और कर्म उदार तथा पवित्र होते हैं एवं जितना–जितना 'स्व' को संकोच होता है, उतना–उतना ही उसके विचार और कर्म अपवित्र होते हैं। जैसे एक आदमी मानव, पशु–पक्षी आदि चेतन जीवन तथा वृक्षादि अचेतन–भूतोंमें अपने समान आत्माको देखना चाहता है, वह जड़, चेतन किसी भी प्राणीको दु:ख नहीं देना चाहता। सभीको वह सुखी बनाना तथा सभीका हित करना चाहता है।

याद रखो—जो मनुष्य चेतन प्राणियोंमें तो आत्माको देखना चाहता है, अचेतन वृक्षादिमें नहीं। वह मनुष्य और मनुष्येतर चेतन प्राणियोंको तो दु:ख नहीं देना चाहता, पर अचेतन वृक्षादिको काटने–छेदनेमें नहीं हिचकता।

याद रखो—जो मनुष्य मनुष्यतक ही केवल आत्माको देखता है, दूसरे चेतन प्राणियोंमें नहीं, वह मनुष्य–जातिके सुखके लिये पशु–पक्षी, कीट–पतंगोंकी हिंसा–हत्या करनेमें संकोच नहीं करता; बल्कि आवश्यक मानकर मानव–सुख या मान–हितके भ्रमसे उनकी बिना संकोच हिंसा करता है। वह इतना निर्दय हो जाता है कि उन मूक प्राणियोंको प्राण–वियोगके समय पीड़ासे छटपटाते देखकर आनन्द–लाभ करता है, मनोरंजन मानता है और हँसता है। वह मानव–शरीरमें एक प्रकारका क्रूर असुर ही है।

याद रखो—जो मनुष्य और भी निम्नस्तरका होता है, वह केवल अपने देश, जाति, धर्म, मत, पंथ, दल आदितक ही अपने 'स्व' को सीमित कर देता है। वह अपने देशके नामपर विदेशीका, जातिके नामपर दूसरी जातिके मनुष्यका, धर्मके नामपर दूसरे धर्मके मानवका, मत–पंथ और दलके नामपर दूसरे मत–पंथ और दलके मनुष्योंका वध करनेमें गौरवका अनुभव करताहै। वह मनुष्य भी मनुष्यरूपमें पिशाच ही है।

याद रखो—उससे गिरा हुआ जो मनुष्य अपने कुटुम्बतक ही 'स्व' मानता है, वह अपनी ही जातिके अपने ही भाइयोंको क्षुद्र कौटुम्बिक स्वार्थके लिये मार डालता है और उसमें गौरव तथा लाभकी अनुभूति करता है।

याद रखो—सबसे गिरा हुआ मनुष्य वह है जो अपने निजके शरीरतक ही 'स्व' को सीमित रखता है। वह अपने शरीरके आराम तथा सुखके लिये माता–पिता, स्त्री–बच्चोंतककी हिंसा–हत्या कर डालता है। ऐसा मनुष्य प्रत्यक्ष ही

राक्षस है।

याद रखो—इन सब मनुष्योंमें नीचे से उत्तरोत्तर ऊँचे हैं। ऊँचेसे उत्तरोत्तर नीचे हैं। तुम्हारा कर्तव्य यही है कि तुम सबमें भगवान्‌को देखकर पूज्यभावसे सबको सुख हो-सबका हित हो। ऐसे विचार-कार्य करो या सबमेंअपने आत्माको ही समझकर सबके साथ यथायोग्य आत्मोपम व्यवहार करो।

कामनासे जलन

याद रखो—तुम्हारे पास धन है और तुम प्रचुर धन कमाते हो, तुम ऊँचे अधिकारी हो और बहुत लोग उच्च पदके कारण तुम्हारी प्रतिष्ठा करते हैं, परंतु तुम्हारा जीवन यदि ईश्वर-विश्वास, सर्वभूतहित, त्याग, प्रेम आदि दैवी गुणोंसे सम्पन्न नहीं है। और तुम कामना, क्रोध, लोभ तथा अहंकारके फंदेमें फँसे दिन-रात अशान्तिका अनुभव करते हो, अंदर-ही-अंदर जलते रहते हो तो तुम न तो अभी सुखी हो, न भविष्यमें ही तुम्हें सुख मिल सकता है।

याद रखो—कामनावाला मनुष्य निरन्तर अभावकी आगमें जलता है और कामनापूर्तिमें लोभ तथा कामनाकी अपूर्तिमें क्रोध-क्षोभके वशमें होकर दु:खी तथा विवेकशून्य हुआ रहता है। क्रोध तो मनुष्यको राक्षस बना देता है, वह इतना नृशंस हो जाता है कि अपनेपर तथा दूसरोंपर घातक प्रहार कर बैठता है, ऐसी हानि पहुँचा देता है कि जिसके लिये उसे स्वयं भारी पश्चात्ताप करना पड़ता है। लोभ तो पापका बाप ही है। लोभी मनुष्य ऐसा कौन-सा जघन्य पाप है, जो नहीं करता। इन सबका मूल है-अविद्या-जनित अहंकार। अतएव इन सबसे बचकर जो ईश्वरपर अटल विश्वास रखता है, वही सुखी रहता है और उसीका भविष्य भी सुखपूर्ण होता है।

याद रखो—ईश्वरमें विश्वास रखनेवाला नित्य निर्भय, निश्चिन्त तथा कर्तव्यपरायण रहता है। पाप-ताप-दैन्य उसके पास आ नहीं सकते; क्योंकि वह सदा-सर्वदा ईश्वरकृपाके प्रकाशमें रहता है और रहता है भगवत्कृपाके संरक्षणमें।

याद रखो—जिस मनुष्यके हृदयमें सर्वभूतहितकी प्रबल भावना है, वह अपने धन तथा अधिकारका उपयोग समस्त प्राणियोंके हितमें ही करेगा। ऐसा कोई काम वह नहीं कर सकता जिसमें दूसरे प्राणीका तनिक भी अहित होता हो। वस्तुत: वह सबके हितमें ही अपना हित मानता है, अतएव उस 'स्व' क्षुद्र सीमामें न रहकर सर्वत्र फैल जाता है, अतएव सबका स्वार्थ ही उसका अपना स्वार्थ बन जाता है। 'सर्वभूतहितैषी' मनुष्य जो कुछ करता है, सोचता है, सब सबके हितके लिये ही। ऐसे पुरुषोंके पास रहनेवावली धन-सम्पत्ति, पद-प्रतिष्ठा, बुद्धि-विद्या, बल-पराक्रम, सबका सबके हितमें सदुपयोग होता है। परार्थ-त्याग ही उसका स्वार्थ होता है।

याद रखो—शान्ति-सुख त्यागमें ही है, भोगमें कदापि नहीं है। भोग तथा भोगाकांडा मनुष्यको असुर, पिशाच, राक्षस बनाकर पतनके गर्तमें गिरा देती है, वह यहाँ-वहाँ सर्वत्र नरकयन्त्रणासे पीड़ित रहनेको बाध्य होता है। प्रचुर ध ान-सम्पत्ति, मकान-जायदाद, पद-अधिकार, मान-प्रतिष्ठा, पूजा-कीर्ति, लौकिक विद्या-बुद्धि उसे कदापि शान्ति-सुख तो दे ही नहीं सकते, वंर इनके कारण उसकी अशान्ति, दु:खोंकी अनुभूति तथा भयानक शारीरिक तथा मानसिक पीड़ा और भी बढ़ जाती है।

याद रखो—त्याग ही प्रेमकी आधार-भित्ति है। जहाँ त्याग ही है वहीं प्रेम है और जहाँ प्रेम है वहीं अनन्त सुख है। प्रेमका स्वरूप ही है-जिसके प्रति प्रेम है उसके सुख-हितके लिये सहज ही सर्वस्व त्याग तथा उसके सुख-हितके लिये ही जीवनकी प्रत्येक चेष्टा-क्रियाका होता। प्रेममें देना-ही-देना है। अतएव वहाँ सहज सुहृदता, सहज आत्मीयता

अपने-आप रहती है तथा परम सुख-शान्तिके द्वारा उसका जीवन आनन्दमय बन जाता है। वास्तवमें परमेश्वर ही प्रेम है और प्रेम ही परमेश्वर है।

भगवान्‌का मङ्गल विधान

याद रखो—तुम सर्वनियन्ता, सर्वलोकमहेश्वर, सदा सर्वसुहृद् भगवान्‌के मंगल विधानको नहीं बदल सकते। यह सम्भव है-तुम्हारी अदूरदर्शिनी दृष्टिसे तुम्हें उस विधानका मंगलमय स्वरूप न दीखता हो। तुम्हारा तो इतना ही काम है कि तुम अपने दृष्टिकोणके अनुसार परिणामपर विचार करते हुए भगवत्कृपासे जब जिस कर्मके सम्पादनकी कर्त्तव्यताका बोध हो, तब उसके सम्पादनमें यथाशक्ति यथाबुद्धि लग जाओ।

याद रखो—कर्त्तव्यपालनमें विशुद्ध भगवत्कृपाका आश्रय होना चाहिये और होनी चाहिये राग-द्वेषसे रहित तथा परिणाममें सबका मंगल चाहनेवाली निर्मल बुद्धि। यदि कहीं मनमें राग-द्वेष आ गया, किसीके अमंगलकी भावना आ गयी तो फिर उस कर्त्तव्यका सम्पादन यथार्थरूपसे नहीं होगा। राग-द्वेष तथा पर-अहितकी भावना मन-बुद्धिमें आते ही 'विवेक' नष्ट हो जाता है। फिर रागके प्रत्येक प्राणी, पदार्थ, परिस्थिति गुण-बुद्धि और द्वेषके प्रत्येक प्राणी, पदार्थ, परिस्थितिमें दोष-बुद्धि हो जाती है एवं पर-अमंगलकी कामना पुष्ट होकर सत्कर्मका प्रयोग भी असत् उद्देश्यकी सिद्ध कराने लगती है। इस प्रकार पुण्य भी पाप बन जाता है अतएव सावधान रहो।

याद रखो—तुम्हारा काम होना चाहिये केवल भगवत्प्रीतिके लिये-भगवत्पूजा-रूप उचित कर्म करना। न कर्मके पूर्ण होनेमें आसक्ति होनी चाहिये और न कर्मके अनुकूल फलमें आसक्ति होनी चाहिये। जो कर्म कर्मासक्ति एवं फलासक्तियुक्त होते हैं, उन्हें आसक्ति निश्चितरूपसे दूषित कर देती है।

याद रखो—भगवान्‌की प्रीतिके लिये कर्म करनेवाला ही यथार्थरूपसे कर्त्तव्यपालन कर सकता है; क्योंकि उसकी बुद्धि राग-द्वेषरहित, निर्मल तथा बदुशाखावाली न होकर अव्यभिचारिणी भगवन्निष्ठ होती है। वह जो कुछ भी सोचता-करता है, सब भगवान्‌की परितुष्टिके लिये, उनकी अर्चनाके रूपमें करता है। कर्म पूरा हो, न हो; फल अनुकूल हो, प्रतिकूल हो-इस ओर उनकी दृष्टि नहीं रहती। उसकी दृष्टि रहती है, केवल और केवल अपनी विशुद्ध निष्ठाकी ओर-उसकी बुद्धिमें कहीं भी राग-द्वेष तो नहीं आ गया, कोई सीमित स्वार्थ तो नहीं आ गया, कहीं 'अहं' तथा 'मम' की पूजा तो नहीं होने लगी और कहीं किसी प्रकारसे भी भगवत्पूजाकी विस्मृति तो नहीं हो गयी ? इसका वह बड़ी सावधानीसे ध्यान रखता है; क्योंकि यही पतन है।

याद रखो—भगवत्पूजाके लिये भगवत्प्रीत्यर्थ स्वधर्मरूप कर्त्तव्य-पालनमें लगा हुआ पुरुष किसीका कभी अनिष्ट-अहित तो कर ही नहीं सकता, किसीके अहितकी कल्पना भी अपने मनमें कभी नहीं कर सकता। यही विशुद्ध भगवत्सेवारूप कर्मकी कसौटी है।

भगवान् श्रीकृष्ण और उनकी स्वरूपाशक्ति श्रीराधिकाजीके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान उन्हींको है। दूसरा कोई भी यह नहीं कह सकता कि इनका स्वरूप ऐसा ही है। जो कुछ भी वर्णन होताहै, वह स्थूल रूपका और आंशिक ही होता हे। भगवान् श्रीकृष्ण समग्र ब्रह्म या पुरुषोत्तम हैं। ब्रह्म, परमात्मा, आत्मा-सब इन्हींके विभिन्न लीला-स्वरूप हैं। श्रीराधाजी इन्हींकी स्वरूपशक्ति हैं। श्रीराधाजी और श्रीकृष्ण सर्वथा अभिन्न हैं। भगवान् श्रीकृष्ण दिव्य चिन्मय आनन्द विग्रह हैं ये श्रीराधाजी दिव्य चिन्मय प्रेम विग्रह हैं। वे रसराज हैं, ये महाभाव हैं। भगवान्‌की इन्हीं स्वरूपाशक्तिसे

अनन्य कोटि शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, जो जगत्का सृजन, पालन और संहार करती हैं। भगवान्ने स्वयं कहा है–जो नराधम हम दोनोंमें भेदबुद्धि करता है वह चन्द्र–सूर्यकी स्थिति–कालतक कालसूत्र नामक नरकमें रहता है।

जब युगल सरकार कृपा करके अपने दुर्लभ दर्शन देना चाहें तभी दर्शन हो सकते हैं। उनकी कृपा ही उनके साक्षात्कारका उपाय है।

(**श्रीराधा-माधव-चिन्तन** नाम पुस्तकसे)

16 सितम्बर–निश्चल भावसे विश्वासके साथ मनको आज्ञा दो–रे मन तू मेरा सेवक है। मेरी सत्ता और चेतनासे तेरा जीवन है। तू मेरी एक स्वीकृतिमात्र है। मेरी आज्ञा मान और जैसे मैं चाहूँ वैसे रह। इधर–उधर किया तो मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा।

(**दैनिक कल्याण-सूत्र** नाम पुस्तकसे)